अखारक-अवराजनाचे प्राप्त, नुसर्व-अवन्त्राहतः त्त्र, महन-अवह व्यत हत, । জোড়াপুরুর পেন। জীবীরেন্দ্রনাথ রার, ০০ পার্বাভীচরণ খোবের লেন। জীরুরেন্দ্রনাথ জে. २७ कांगोनिःह रमन, निर्कालुत । श्रीकृशीतृहता शाम, ১० वक्षताय (बारवर होते । श्रीरमाविकber बीन, • बांबानमी त्यारवत्र २व त्यम विकाबान्ध्यः बक्तु, व बहुबीहान होन्तन क्रिके । আঞ্জবকুমার পেঠ, আগার ভিৎপুর রোভ। জীয়তীশ্রনাথ দেন বি এক, কর্ণভ্রালীন ট্রাট। अकारक-- श्रेपठीक्षरवास्त्र बाह, नवर्षक--श्रेतायानकान परकाानायाह, नवक--श्रेतायक-ताथ राज करा, का काविनन रहांछ । जीवादानहत्त्व वान करा, के। जीवादात्वकांच राज, के। विकृत्यक रक्ष, के। शिश्विमीकृमांश निरतार्थ, के। विभरतक्षताथ स्नम, के। জীবীনেশক্তর ভব, জ। জীবিকরকুলার দেন বি এ, জ। জীবুপেক্সনাথ দেন বি এস নি, ঐ । **बै**विश्वकृत्वन जांत्र (तोश्वी) वि का. के । बिवामिमीरमाञ्च तांत्र, के । खिनांत्रशक्त्रांत्र राम वि क. ७५ क्रांतिम्ब द्यांछ । श्रीकाणिक्य तांत्र वि अन, ১১/১ देवर्रक्यांना २व दमन । श्रीमफीनहत्त्व त्मन, २० गोनकामा होते । जिल्लानक मृत्यांगांशांत, ०२ त्यपैतारोंगां त्मन । जैनिकातकम লেন, এম এদ বি, বি এল, ১৬ কণালিটোলা লেন। খীনিখালণ্ডল চটোপানার, তার লেন, জোডালাকো : প্ৰিয়নাৰ হাত, ১৬০১ কালিং হাট, খ্ৰীবোগেৰচন্ত কৰোপান্ধাৰ, Clo Gramophone Co Ltd., द्वनिश्ववाहै। अविभिन्नविश्वहै छक्तवती, २ क्टबरमानी कि । शिक्टक्समांच गांग चर्च, शर चारशीन तम । वीचिंगकत वच, Delivery Correspondence Department, त्यनारक्ष्म त्यांदे परित, क्लिकाका । वीषानुनावधम वस व हारिक क्या । अविरक्तनाथ वात, का कारिनन त्वाक । अवारक्तनाथ वाद, के। अवारक्तनाथ কাম খাল বি এ, ৯৯ কামারীপাতা লোভ, ভবানীপুর। প্রীবনতকুমার দাসখাল, কটোঝাকার, কালীপাট বোল । প্রস্তুরেজনাথ বজ্যোপাধার Dio বাড়ভাঞার, ২০৬ কর্ণভারীৰ ট্রাট । श्रीशंबात रहेनिक, के 1 श्रीकिटमां श्रीरवादम रहेनिक । कविताल श्रीरव्यक्तम खर्ब, 56 मानव ধর কেন। উপনিয়েত্ন বার। এলুরেজনাথ ধান থ্রা, ৩০ বাছত্বাগান ২৭ জেন। श्रीक्षांतककृतन वान, ५०१० देवर्जनवान वत्र तमन । श्रीवस्त्रवात वक, त्वावारे व्यक्तिकार, চন্দ্রমার । মান্দ্রান্তর নেন, ২৯৭ গণার ভিৎপুর রোড। জ্রীবাপুর্বায়ক ওবা, 🛭 🖰 क्याय विक्रिः धतार्कम, माविकाम कारका शेषि, छाववायात । श्रीमनिकस्यादम कथे, थे। बिरम्बद्धाः राज. सहयोशोष । श्रीश्रीयोशोषा वयः, ३२ अधिशृक्षत राज । वि पमरण्यानीये बरक्तानावारव, बीक्रम होते । जीमीटतावक्रक बांब, ३२ हिमार्न (नम । जैक्सक्रमांच नम् बार था, वि बान, केवील, शहरकार्छ। क्षीनरवक्षरवाहन कहातार्था, स्कीवा क्षेष्ठ। बांध শ্রীঅভুগচল সেন পি এইচ ভি, অধ্যাপত, ক্রেনিভেলী কলেন। প্রীমণীলচল নাগ, कारबनिक्रिन कार्यात । क्षेत्रिक्तिक नांश थाय था, थि। क्षेत्रिक्यंत्र तमा, ०६ बांगरबांहम एक क्रीहे । क्षेत्रदानहत्त्व कामकशाद धम थ, वि धम, कामाहीभाका दाकि, क्यामीभूद । জিতবর্তন বকুনবার, ৫৯।৬ জারিসন রোড। জীকিডেজজির সেন ৩৩, ৩ পড়িডিবা

রোভ, ভবনিশ্র। জুলুরেশ্রমের্য থকা, ১৬ দাগর বর দেন। জ্রীপাক্তের বে, २ जानव वत राजा - शिक्साविकता प्रदेशभावात, ०० शांतिनव द्याए। शिक्सकार्य त्म वि थम, मुकाबाववाव शेषे । शक्तिकत क्राह्मभाषात, >- अक्षेत्र (सम । शहतवकी-कांक बरन्याभाषाय, कराक्षक भवायक्त ह्यांक, बाबीवका विवक्तिसार्व ह्यांभावात । कविशां विकित्तारम कर्त, ३७ कियान मूलित शति । श्रीवानमां विक, ७० कर्तन होते । গ্রীরবেশতক দাদ ওয়, কুচবিধার । প্রীবেচাতিকরা দেন ওয়া কবিয়াল, জ । বীপরাধন मान क्या का क. के। जीननावागांव मान क्या, (इंड गांडीन, क्याक्रिक हारे इत, के। গ্রীচিত্তাহরণ সেন ভথা, প্রচিতিহসক, ঐ। প্রীক্রনমোহন হান ভথা, নিক্ষক, মেকলিগত হাই कुन, हो। श्रीवजुनाहस गांग कर्त वि क, निकन, स्वत्विका शहे कुन, हो। श्रीवजुक्तान **चर्च वि ब, के । जैन्द्रकंत कर्य बन ब, किरोहित। करमत्वन बनागन, के । जैरकारिय-**আৰু বেন ঋথ বি এন, মারেব, আবেনকার, ভুকানগঞ্জ, ঐ। প্রীনবেজনাথ নেন ঋথ বি এ, Clo का शहारकक्षमां रामा, वे। शहरकोकांच कथ, बेकीन, कावानमंत्र, हांका। जीरबारशक्षमांचे राम क्या बन ब, वि बम, के। जीतरबन्छ्य रमम वि बम, के। जीवरमक्ष्य श्रद्धं बार बा, कि बार, के। कि कल्लाकुमात त्यांम, के। क्षिप्रवादा स्थांक, कार्यात्रवाह, हाका । श्रिकानकीनाथ द्वार, ४२ कामादनगत्र, हाका । श्रीबटनकनावांका निवा वि वान, केकीम, केवियाबाद, काका। किकानसभम (बाब (क्रीयुनी, कानकवावृत्ति सन, क्रांका। **बिहेक्टर्शाहन वक्षु, शुरू दर्शातामनगर, के । क्षिटेन्ट्यक्कट्यबर बाब, ३२१ वामीक्या, राज्य ।** ত্রীক্ষবিকারের ভরপদার বি এল, সরিকা, ঢাকা। ক্ষিরাক ত্রীগ্রিয়নাথ গান, গোরাননগর, ছাকা। জীলকরকুমার বরাত বি এল, ঐ। জীপিরীশচন্ত্র দাস বি এল, উক্তীল, পুরাজন (बाधकहेंगी, के। अधिनहत्र कान, ১২१ के। जैनएडाजनांद खर, व जानक कान, हाका। अवीरशक्तकात वस वि धन, एकायून, छाना । अभरतमहत्त पृत्यामधान धन ध, जनामन हाका करणब, के। श्रिमनाबरवाकन त्यन, C/o त्यन थक त्यार, गहेबाहियी, के। श्रिमरहासमाप त्मम, इतिवाहे, थे। श्रीकादन्द्रस्य मधूनशात वि अन, नाग्हीन त्मम, नवावनुत, हाका। क्रोर व्यरकोक्तरपारम ताथ, थे। क्रिकायकश्चमत मध्यमिति, थे। जैपरमोत्यासन तान, थे। किवास्त्रमान रह वि जन, मानोटोमा, जे। किविनिमित्सादी तम वि जन, जे। जी श्रीशास्त्रमाथ वक्, शहेबाहेगी, के। श्रीवादनीयाथ शांव अन अन अन, शहेबाहेगी, के। क्षिणामाक्ष वस वम व, वि वम, के। क्षिणवनीक्षमान तांत श्रवितात, कामैमपुत, के। कांत्र श्रीशिक्षक पान, क्नारविद्या स्वाड, के। क्षेत्रकुमहत्त स्वत, कार्यावत्रव, के। श्रीनगांक-माहम मान चरा, नवान बाहाहरका आहेरको मानकोति, खे। वीक्रक्यांत कर नि वन, केवारी, के। अव्यक्तावक्य कर वि क्या, केवीन, केवी अधिराज्य वन वि क, भरतीय पूरणा नरकाडी बाराज निकल, लोका । वीवियरगांच त्मज, वी वियागांवत चल वन क, वि वन, नन्नावक, विवर्गका, के। अवक्रविद्याती क्रवरकी वि क नन्नावक काकाश्रकान, के।

क्षेत्रपुक्त वस्, डेकोन, जसरकार्ड, जे । क्षेत्रारान्त्रक्ष त्यत वि ज, निक्रक, नरतान कुन, जे। जीतांकाल वानक्ष्यं वि या, करनिवारके परनार निकार, ये। जीवांशांकाल वक्ष्यकात्र धन थ, हाका छिनिर करनव। धीनरनांत्रक्षम स्वाद होत्ती, बानकरनांक स्वन, थे। अव्यक्तिकार करा वि अन, वेकोन, यांनीलना, के। अमिनियोकांड कर्डमांनी अब अ, क्किंद्रकेष, हांका विकेशियम । जीरीयम् प्रकृतमात्र वि था, देन्निविद्यान त्रिविधीय - दिक मांड्रीत, छाका । श्रीअरकास कृताव त्यास का क, ऐकिंग ऐम्हिडिक्सन एक गांडेाय, छाका । अमिनिकानाहम मान्यसं वि थ, सनकृतात देन्हिकिनात्व दर्क महिता अधानतकृतात त्मम वि a, दश्यमांक्षेत्र, गरनाक कृत, के 1 कीमुर्गाइन बगांक वि a, केकीन देव्हिडिनेन्ट्सब नक्कांडी अंशाम निकक, के। क्रीनकाक्ष्यन क्षत्र वि था, नन्नाक्ष्य हांका शासक, जै के कवितास क्षेत्रकोलमांव शांतकतं, कांकिशांमात्र, के । चिवीरतबत्र रमम वि अन, कवरमार्केत केमीन, कविममुद्र । क्षेत्रराज्याच पृश्वाभाषाच वि क्षत्र, व्यवसार्वे, वे । श्रीवरोक्षक नक्षमांत, के। कविशांक श्रीनियांत्रपंत्र शांत, क्षेत्र श्रीनंत्रक तांत्र वि व्यम, क्षेत्रीमं, क्षेत्र किरबारमण्डल पहेक, थे। क्षीबरबारमायून वहाति, थे। किरबारमञ्जल वहाति, थे। किशिन-कक्ष ठळनको वि अन, वे । बीरशंशियका शंत चर्च, के । बीयरस्क्रक बीननविन, वे । किनियांत्रपटक राम ध्या थ, दश्क माद्रीत, थे। किनिनीत्रधन राम वि धन, दश्क माद्रीत, वेभावी : क्षेत्रीकामाथ कर्षकांत्र वि छ, कवित्रमुख । जीवनवकुमाद शांग खर्ख, छ । जीवनविद रमन, जे। जीवासकृतांत सांत समीकांत, जे। जाः श्रीहतवानव पात, जे। जीरहतका त्मन वि था, एक बांडीय, शांकर बांडे कुम, थे। कीव्यरमण्डल जाव वि था, विकास, थे। किञ्चबारकरणबंदा नूरबांशाशाह, विकातिया, के। किञ्चकृष्ठमान पूरबांशाशाह वि क, के। श्रीरमाशामहत्व हर्देशियामा अस अ, वि अम, समस्कारहेंच केकोन, विव्यान । जिल्लामनाथ राम वि था, किमाबूरवा रूक गाँहोत। क्रीयरक्तमाथ थथा, वि था, क्रियमदेकेत, वि थान करणक, के। क्षेत्रकरवास्त्र त्यत वि कत् क्षारकार्टित छेकीन, 🚵। वीदांगांत्रन पृत्यां-পাধার, বি এব, উভীন, ভোলা। ছাঃ জ্বিভয়ঞ্জন্ম ভণ্ড, ঐ। জীবভোর বার মোডার, ঐ। অবিদিক্ষাৰ ঋষা বি এল, ক্বাকোটের উক্তাল, ঐ। ত্রীছরেপতত যাপ্রথা বি এল: केकीम, तरमूत्र । श्रीशिविकाधानत कर, थे। श्रीकृत्वितीकांख राग कविनांत, यशियांत। विरोहितकार्य त्यांन अप अ, वि अम्, महमनिरह, क्क्टकार्टेन छेकीन, वे । व्हेडिकाकम त्यांन, वक्रकार्ड, दे । कीवांकरकांव त्यम, दरकलांक, वे । कीवीरकल्यांवम त्यांव वि थ, त्वभूती बार्बिट्डेंहे, त्यवरकार्गा, जे। चरतवयांथ तात वि अ, जे। बीडेंट्यनंत्व व वि अम, छेचीम, জনকোর্ট, কুমিয়া। প্রিকারকুমার পেল, সাব ওভারনিবার, কোছিবা (লাগা ছিল)। विवीरतक्षमांप रह, मि: कि, अस मान, वि'अम नि, बानकृत । क्षेत्ररवांपत्व रवांप, देविनिशंह, क्यांगेंद क्यांकन, दशनी । वीरियानांकियांदी त्नव, त्नांग्रेनातके व्यक्ति, वद्यवनिष्ट । জীয়েগজীয়েহের সেন, বরিশাল। ত্রীভূপেশচক্র বাশকর বি এল, উদ্দীল, ব্যায়ালনবয়, ঢাকা। এরাধারমণ পাল, বি এল, উম্বীণ, মুলীগঞ্জ, এ। এবভীজনাথ হান, বি এম, শ্ৰীগৰেক্তৰাত নাপ, জ। প্ৰীত্ৰবিকাঞ্জনম দেন ওখা, বি এন, উত্তীন, মেহিনীপুৰ। ব্ৰীনন্তৰ-मांच शांचात्र अम अ, वि अन, के। विचाराहितन हक्तवती, वि अन, विकीन, बानता, বৰ্ষপূৰ্ব। কৰিয়াক জীবোলেজকাৰ সেন, ঐ। জীবেষচন্ত্ৰ সেন কাৰ্যতীৰ্থ, নৰাৰপুৰ, हाका । जिल्लाहरू हान, काविनाकान, के । जैनायनहरू क्य, अन अ, कार्यनमन्द्र के । এলোরাক্ষরি ধর উকীল, শাধারিবাকার, ঐ। জিনীরহাকার সেন পর্বা, তেপুটা ন্যাকিট্রেট, शृतिता। जैकोत्ताशकाच राम थथ, प्रकोन, थे। जैकियोगाच राम, कांकात, थे। क्षिणात्रकाल बाम भर्गा, थे। किश्मीश्रमत्र त्यांय, देवीम, थे। श्रीशारमाज्य त्यम भर्गा. क्रमाहोत्राह । वीश्रवत्राच लांगक्टा, वि क, (रूप्पाडीत, नचीकांच राहेंचन, कर्मा, जांची। শ্রীবীরেম্রকুরু নিরোগী, জনগাই ছড়ি। জীবভীজনাথ রার, এল এব এল, নেভিকেল অফিলাম, নার্জিনিং। প্রভারাকুমার দেনগুল, বি এল, মেক্লিগঞ্জ, কোচবিমার। প্রস্তুরেজনার चल, अम अ, क्लांत्रविद्यात । औरक्रामक्किरमात्र राम चल, दि अम, दिख क्लार्क, अनः म्यासका-शांत, कारेम् व्यामिरकके देहे काकेकिन, नागांतन विकान, कांहविशांत । औरकशांत्रमाथ स्वाबाबनात वि.ब. होना । श्रीरक्तांत्वपंत राग वि अन, रवकांडीह, होना । श्रीखरतसमाध সেন বি এ, সহকারী প্রধান লিকক, ঐ। জীনুগেল কুমার ব্যক্ষাপানার, কোচবিহার। क्षिक्रांत्रम नक, केवीन, मात्रावनश्च, हाका। क्रिक्तिकाहत् वसू, केवीन, वद्यननिश्क। জীকুলহাচন্ত্ৰণ লক্ত, আ। জীকালীপ্ৰসন্ত সেন খণ্ড, আগন্তলা, জিপুনা। জীবসভভুষান সৈন খণ্ড বি এল, উকীল, মোরাধানী। জীবীরেজচজ্ঞ রায় জনীবার, "রাবহাউন", আনন্তক্ত बार होते. हाका। श्रीकामानवत्र नामधार्थ, दि धान, केकोन, रकाहाम स्ववेदी, हाका। **बिमामाबक्त नाम्कानामात्र वि अन, छेकोन, बामाब क्लेफी, खे । जैन्यमबक्ति क्लाक विवास** कांत्रीबाबाद, होका । अध्यादक्षत्राव मृत्यानाशाव वि धन, छेकीन, खबनूद, के । अक्नक्क्याद त्मन, वि धन, केवीन, वांश्नावांबांव, खे। औयरहखनांव पूर्वाते वि धन, बूटनक, बूजीनब, खे। अधार्याध्वय तन, जन जम जम जम, महमननिश्ह । क्षेत्ररनारमाहम त्व वि जन, केकीन, छोका । श्रीविभिमविशाती बहेक, हिम्मिशाका, शश्चिक्तव (शाः, कतिकत्व। श्रीमछीनेहळ हान्यस्त, ১৬ এে ট্রাট, কলিকাতা। জীহেমচন্ত্র লাগধর্ত বি এ, শিক্ষক, মুখ্যীগঞ্চ ছাই ছুল, চাকা। शिकेरशक्तक्त्रात क्य वि था, कथरकारवेंत क्रेकोण, थे। जा: शिक्षत्नीरशास्त्र वात थन थम এন, পটুরাটুনী, ঐ। শ্রীনরেপ্রকুষার সেন বি এ, বাবভিভিন্নাণ অভিলাত, মলরা। श्रीवामगानमात्र तन, क्यांत्रो, लाका । बीवेटलक्षरमात्म नान करा वि तम, वेकीन, प्रकृतिना । अफेरनक्ष्य वानक्ष दि अन, केकीन, मुक्तीनक, ठाका। अफेमाइटन त्मन, दि अन, के। শ্ৰীকাৰাখ্যাচয়ণ সেন বি এল, উৰ্বীল, ভোলা। জীলনেত্ৰনোহন বত্ন, নাৰ্ভিভিশ্বাদ অভিনান, त्रांगापाठे। औरव्यवस्य बरन्याभाषाव वि धन, केकीन, रविभाग । अवधीसरमञ्ज्य त्याव. वि अन्, क्रेक्नेन, रामात्री । अध्यक्षत्रकृतात ७, छ। क्रिक्रे क्रिकेश रामात्रीवात । छ। अध्यक्षत्रकृत ভও এক বি, শ্রপুর, চাকা। প্রীহরেজনাধ ভও এন এ, পাবনা। ব্রীর্মেজকুষার সেব বি এ, জুপারিক্টেডেক, পোই জাকিন, করিবপুর। প্রীকালার নেন বি এ, জেপ্ট জেনেরব পোই বাইার, G. P. O. কবিকাতা। প্রজানিতরঞ্জন বৌর এম এ, বি এল, ১০ বাইব মুখার্লি রোজ, জুবারীপুর। প্রীহেরঘচন্ত ভর এম এ, বি এল, ২০ কালীপ্রনাধ করের ইটি। প্রিক্টিজন বি এল, উকীল, পভারিরা, চাকা। প্রিক্তিজ বছ বি এল, উকীল, নরাবাজার, চাকা। বিং জে, এন বানাজি, জরনেবপুর, এ। প্রস্তুরেশচন্ত ভর, নারভেপুট করেক্টর, কার্ম, মুরনিয়ারার। রার বাহার্ম প্রস্তুর্জন রার, উকীল, বছরনপুর। প্রীহর্মান্তরের লাল বি এল, উকীল, কটুর। রার নাহেব প্রীর্লিক্তিজের্মান্তর বেল, ওরারা, চাকা। করিবাজ প্রস্তুন্তিজ বালভার, চাকা। ব্রীর্মান্তরের প্রির্মিন্তরের বেলাপারার বা এ, প্রেরিন্তর্জা করেরের অধ্যাপক, কলিকাতা। প্রীপ্রভারতের বেলা, ওরার্মান্তর পাল লেন। প্রীর্মান্তরের বিয়ে, ৬ ক্রকান পালের। প্রীর্মান্তরের বিয়ে, ৬ ক্রকান পালের। প্রীর্মান্তরের বেল, ২০০ বিজ্ঞাপুর ইটি। প্রিবিন্তর্মার রায় এম বি, ১২ ক্রকান পালের বেল। প্রীর্মান্তর্মান রার, ১২ প্রকান পালের বেল। প্রীর্মান্তর্মান রার, ১২ ক্রকান পালের বেল। প্রীর্মান্তর্মান রার, ১২ ক্রকান পালের বেল। প্রীর্মান্ত্র্যান রার এম বি, ১২ ক্রকান পালের বেল।

উপহারদাতা ও উপরত পুত্তক

Superintendent, Government Press, Madras-> | Annual Report of the Archaeological Department, Southern Circle, Madras, for the year 1916-17.

Director General of Observations,—? Report of the Administration of the Meteorological Department of the Government of India in 1916-17.

Superintendent, Government Printing, India. - o : Monthly Statistics of Cotton Spinning and Weaving in Indian Mills, July 1917. s : Do, August 1917. c : Do, September 1917. c : Patent Office Journal, July to September, 1917. 1 : Report of the Chief Inspector of Mines in India. for the year ending 81st December 1916.

Officer in Charge, Bengal Secretariat, Book Depot.—* | Triennial Report on the Working of Hospitals and Dispensaries under the Govt. of Bengal for the years 1914, 1915 & 1916. * | Annual Report of the Veterinary College and of the Civil Veterinary Department, Bengal, for the year 1916-17. * | Report on the Police Administration in the Bengal Presidency for the year 1916. * > | Report on Inland Emigration for the year ending 30th June 1917. * | Report on Wards Attched and Trust Estates in the Presidency of Bengal for the year 1916-17. * | Report on the Land Revenue Administration of the Presidency of Bengal for the

year 1916-17. Se | Report on the Working of the Co-operative Societies in Bengal for the year, 1916-17. Se | Indian Education in 1915-16.

Supdt of Archaeologly, Hyderabad.—56 | The Journal of the Hyderabad Achaeological Society, 1917. 56 | Annual Report of the Archaeological Department of His Highness the Nizam's Dominions, 13157-1915-16

A. D. 56 | The Daulatabad Plates of Jagadekamala, A. D. 1017.

Director of Statistics in India.—:» Review of the Trade of India in 1916-17. 2-1 Statistics of British India, Vol. III, Public Health 1915-16. 251 Annual Report of Statistics Relating to Forest Administration in British India 1915-16.

Director, Geological Survey of India.—> 2 + Records of the Geological Survey of India Vol. XLVIII. Part. 1, 1917. 20 | Do. Part 2, 1917. 28 | Memoirs of Geological Survey of India Vol. XLII. Part 2.

Agricultural Adviser to the Govt. of India.—24 | Scientific Reports of the Agricultural Research Institute, Pusa, 1916-17.

Secretary, Smithsonian Institution.—251 31st Annual Report of the Bureau of American Ethnology, 1909-10 271 A Contribution to the Comparative Histology of the Femur. 251 Preliminary Survey of Remains of the Chippewa Settlement on La Pointe Island, Wisconsin.

Mr. H. G. Wyats.—es | Methods of School Inspection in England.

প্রক তাঃ ব্যক্তরাধিকাল চৌধুতী—হব। Elio-Metchuikolf and his studies of Human Nature. ৩৬। Fresh Water in Bengal. ৩৭। Fish and Mosquito-Larves.

द्वीतृष्क देशलक्षत्रभाव (स्व-कः । Preservation of Cows.

ত্রীৰুক্ত নরোজকুবার নাগ চৌধুরা--তঃ। Origin of the Durga Puja. 0-। Hin-ইন Philosophy.

स्वा कर्य कर्या कर्यों—a> । Speeches and Minutes of the Hon'ble Kristodas Pal Ray Bahadur 1867-81.

of the Atreya School of Medione -1917.

জীবৃক্ত বিহারীলাল সাম--->। লাধ্য-ক্তিকা, ২ । সাধ্য-স্কোহ (২র জার), ৫। নীলাছলে ব্রহমাধুনী। জীবৃক্ত কেবারনাথ মক্ষণার—০) বালালা সাম্ভিক সাহিত্য। জীবৃক্ত
ক্রেন্সকর বন্ধিত—৫। পাশ্ববন্ধিতা ও ভারত-নাবিত্রী। জীবৃক্ত নাব্রশ্ব ওপ্ত—৫। ওভচুতি,

१। जानवाना। जीत्रक नित्रक्षम कांत्रकोषुती—>। नित्रकि। जीत्रक कि वस् कोषुती—>।

पर्युक्त विकार, २०। समनातो-जन्नकम। जीत्रक क्रिकेताव केक्ट्रि—>)। ते निका

व्यक्ति, २२। जीकश्वरक्षा, २०। व्यक्ति क्यां, २०। तांका क्रिकेत, २०। पांनाव,
२०। विका-सम्बद्ध क्रिकेत्रका, २०। प्रांचिकत। जैद्क क्रिकेत्रका जीत्रक क्रिकेत्रका निका

प्राथमिका। जीत्रक क्रमीनक्षम विकारिताह—>>। प्रतक्ष क्र क्रमाक। जीत्रक क्रीरविक्रक्रमान

प्राथ—२०। प्रश्न, ना श्रमंक्षनक्षि १ २२। वर्ष क्रकान। जीत्रक क्रीरविक्रक्रमान

क्रिकेत्रकान। जीत्र प्राक्षम जीव्रक क्रीनांक वस्य—२०। वर्षक।

পুৰি

উপথানপাতা— অনুক ছয়েজনাথ নশী—১ : হৈডভচনিতান্ত (चাৰি), ২ । ঐ (भाष), ৩ । ঐ (चाष), ৩ । অনুকাৰিক (নাম — ১০ । চিকিৎনা-নান-নংগ্ৰহ । উপথানদাতা— অনুক শাবনচন্ত্ৰণ কোল—১০ । কিবলেন লাভ পুথি— শেষ্টা ওপাছিকা, ১০ । নামমী কণা, ১৪ । বালান্ত্ৰিল্ল, ১৫ । গোলোক-বৰ্ণন, ১৬ । আনুবোধ, ১৭ । ঐ । উপথানদাতা— অনুক নাৰাল্যন বন্দোপাধ্যান—১৮ । নামমীন সংস্কৃত পুথি (অভ্যালা), ১৯ । ঐ (নশক্ষণ পছতি), ২০ । প্ৰতিশি-প্ৰতিষ্ঠা, ২১ । ভাষাভোৱ ও ভাষাক্ৰচ, ২২ । নামীকিক্ক নহাত্ৰিক ও ক্ষ্যুভ্ৰনাক্ৰ।

৺রাজা বিনয়ক্তফ দেব বাহাছরের চিত্রপ্রতিষ্ঠা উপলক্ষে

ততীয় বিশেষ অধিবেশন

২৮তে পৌৰ ১৩২৪, ১২ই জাছয়ায়, শনিবার অপরায় বা- টা

উপছিতি--

वाननीत छाः त्यवागांव नवाधिकांवी एतिहत्र, धम् ध, छि धम्, नि कारे है। तार शिक्ष इनीजांव वद् वाश्राहत धम् वि, धक नि धम्, कारे धम् ७, महातांव श्रीमुक्ष प्रश्वाहत निर्द बाराहत, महाबारशंभावतांव छाः नठीभावत विश्वाक्ष्य धम् ७, नि धव् छि, वहाबरशंभावतांव श्रीमुक्त स्वत्रवांच एक्स्पन, सूनांत श्रीमुक्त स्वत्रवांतात्व त्यव वाहाहत, श्रीमीतक्षि स्वन्धां-नावांत, श्रीमण्डव त्यव, श्रीस्वत्रवांच नवांत्वनित्र, श्रीद्वादक्षत्रवांच वांच वि ध, श्रीद्वादक्षत्रवांच बालानांवांत, काः श्रीविभिनविश्वति स्वाय, श्रीमत्वादक्षत्रवांच वस्त, श्रीद्वादक्षत्रवांच वस्त, श्रीद्वादक्षत्रवांच वस्त, विदेशकर्गाच स्वाप, विदेशकर्माच मक्ष्यमंत्र, विच्यालकाच प्रवाणावान, विद्याणावान स्वाप्त विद्याणावान विद्याणा वि

রার বাহাত্তর ভাক্তার জীবুক্ত চুনীলাল বস্ত্র মহাশবের প্রভাবে এবং মহামধোণাঞ্চার ভাঃ জীবুক্ত সভীশচক্ত বিভাক্তবে মহাশবের সমর্থনে ও সর্বসম্বভিক্রেবে পরিবলের অভভন্ন সহকারী সভাপতি জীবুক্ত দেব প্রসাধ স্বাধিকারী বহাশর সভাপতির আসন প্রহণ করিলেন।

न्नांगिक महान्यात देखांत गतिन्यात नन्नांगिक जीवक त्रात नक्षांता दिन्दी जिन्हें, अन् अ, वि अन् महान्य अध्या अहे विराद निवास निवास अध्या अहे विराद निवास निवास अध्या अहे विराद निवास निवास अध्या गिर्फा प्रात्म — अहे नाहिका-गतिन्य त्राव पाक निक्क अन्या क्षा के निवास निवास का विवास का व

পরিলোধ করার চেরী যুখা।" পরিবাদের পক হইতে হাজা বাহাছরের নিকট ক্রজজার বাধ পরিলোধ করার প্ররাব আরে ঐ প্রকার। কিন্তু তথাপি আল পরিষৎ বর্থাপজি, জীহার বুজি ক্ষকার লল এই ব্যবহা করিয়া বড় ভাগই করিয়াছেন।

তৎপত্তে সভাপতি মহাপত্তের আহ্বানে মহামহোপাব্যার ডাঃ জীবক সভীনচক্র বিশ্বাভূষণ महानव बरमम-नाथ व बशाबात चुकि-महात नामता छैनविक व्हेंबाहि, किनि नतिबरतन একলন অভিক্রাতা। পর্নীয় লাক। বিনয়কুক দেবই অপন কভিগন ব্যক্তির সাহায়ে এখনে বেদণ একাডেমি অফ্ লিটারেচার নামক সভার প্রতিষ্ঠা করেন : নেই সভাই পরে বজীব-সাহিত্য-পরিবৎ নামে পরিবর্তিত হয়। সাহিত্য-পরিবদের বে 💷 উন্নতি হইবে, ইয়া ভখন কেছই আশা জংখন নাই ৷ বিশ্ববিদ্যালয়ে তথন বালালার স্থান হয় নাই--ইবা তথন জনায়ত--উণেক্ষিত, এই সময়ে বিনি বাখাণার 💵 এড চেট্টা করিবাছেন, উচ্চার আর কোন উপরা বেভয়া বার না। তিনি নিক্ক ভবনে নাহিত্য-পরিবৎ ছাপন করিবাছিলেন। আমি ২য় বর্ষ इकेटल हेकाव मनक इकेबाहि अपर कथन इकेटल मजाब जैमिक्क हहेबा काहाब काशावनीरक ब्रंथ कृत वहेकान । करतक परजब शरब दिव । एत, शतिबरतब मा। अकृति गामा शृष्ट कांबक्षक । পরিবং বর্থন নিজের পারে প্রতিষ্ঠিত, জালার বর্থন নাম-খ্যাতি কইবাছে, তথ্য তিনি সাহিত্য-সভা নাবে আম একটি সভার প্রতিষ্ঠা করেন। এই সভা তিনি পরিবদের সভিত প্রতিষ্থিত। कत्रियांत यह शामन करतन नारे--अतियानत क देशात केटक्छ अकरे किन । जिनि धरे नजात প্ৰাৰদ্ধ পাঠ কৰিতেন--- অন্তৰ্কে বিয়া প্ৰাৰদ্ধ পোইনা পাঠ কৰাইতেন, বেশেল প্ৰাশ্বৰ-পঞ্জিত-ৰশুলীয় নিৰ্মান পাখিত্য সংখ্যানধেন বিভাৰ্থে ব্যবহৃত কবিবায় অভিপ্ৰাহে ডিনি ভিন্ন ভিন্ন জিলা হটতে বিশেষক পভিতপণতে আহবাদ করিলা তাঁহালের বারা উপাদের প্রথম লেখাইডেম। প্ৰিচম**ও**দীৰ মধ্যে বালালা ভাষাৰ আৰু নাজা বাহাছৰ বে পৰিবাৰে প্ৰতিষ্ঠিত কলিছাছেন, অপৰ কেছ ভাষা কৰিছে পানিলাছেন কি না, নকেছ। এমন কি, অনেক ইংবাৰকেও ভিনি ল্যান্ডাৰ্ণ সাধাৰে। এই সভাব বঞ্চুতা দেওৱাইভেন। জাতার চরিত্র আছি জিলাল ছিল-লে একম লোক আঞ্চলাল দেশে বিজ্ঞা। অনুস বিস্থা, প্রাথা-মহারাজাণের মধ্যা বন্ধ একটা দেখা বার না। তিনি শিক্ষা সবংক অনেক প্রাবক লিখিয়া সিহাছেন। সেই সকল প্রাৰ্থ তিনি নিজে নতার পাঠ করিতেন—বড়ে পড়িলে উল্লার ভূতি ব্রুত না। তিনি কলিকাভার ইতিহাল লিখিয়া পিরাছেল এবং বালালা ইংরাজী অনেক প্রবন্ধ ভিনি লিখিয়াছেল। বিনি এখন বিনৱী, এখন সাহিত্যের পোৰক, আল সৰ্জপের আধার, উাহার পৃতিচিত্ নাছিজ্য-পরিখনে থাকে, ইলা নকলেমই বাঞ্নীয় , তাহা সামাত হইলেও আমানের প্রভাগ সাম্প্রী।

ভংগরে নহারহোশাখ্যার জীয়ত, অন্থনাথ ভর্কভূবণ নহাশত বলিলেব,—আমি বক্তৃতা করিব, এরপ সংক্রম করিয়া আদি নাই; হতরাং বেশী কিছু যদিব নাঃ বে মহাপ্রবের স্বতিহিত হাগন উপগতে অভ আনবা এবানে নমবেত হইরাছি, উাহার প্রতি প্রভা প্রকাশের কর্ম এক কথা যদিব বাব। নালা বিষয়ক দেবের মৃত্যুর ৫।৬ বালের পরে পরিবলৈ তাবার চিয়ের আবরণ উলোচিত হইতেছে। ইংগ কালও অনেক পূর্বে হইবে তাল হইত। বাহা হউক, পরিবৎ যে এ বিবলে অবহিত হইবাহেন, এ আল ব্যুবার। তাহার চরিত্র সমূহে বেলী কিছু নলা আবন্ধক মনে করি না; কেন না, তাহার চরিত্র যে কিন্তুপ উলার হিল, ভাহা এখানে উপস্থিত সকলেই জানেন। বাজালা সাহিত্যে আজলার হে নব্রীধনের জোত প্রবাহিত, তিনি তাহার কর্পনার হিলেন। আতীর সাহিত্যের নেতৃবর্গ কাতীর জীবনের উপস্কৃত সাহিত্য প্রকৃত করিবার আল যে অলাক পরিপ্রন ক্রিয়া বিবাহন, সাহিত্য-পরিষ্ক্রের প্রতিষ্ঠাত্ত্বের মনেও তাহা আগার ছিল। ভাহার সকলতার আল বে মৌরব, পরিষক্রের প্রতিষ্ঠাত্ত্বের মনেও তাহা আগার ছিল। ভাহার সকলতার আল বে মৌরব, পরিষক্রের প্রতিষ্ঠাতাবেরও তাহা প্রাণ্য। এইরেল প্রস্কর্যারর শ্রিচিক রাধিবার ব্যবহা করিবা পরিষৎ উপযুক্ত ক্রিই করিবাহেন। এ আল পরিবংকে ব্যবহার।

তৎপরে দকাপতি বহাপরের আহবানে জীয়ক রাখান্যাস বল্যোপাখ্যার বহাপর থলি-লেন,—সভাপতি মহাপর আহাকে কিছু বলিতে আহেশ করিবাছেন। কিন্তু পরীর সাঞা বাহাত্ত স্থানে আমি বিশেষ কিছু আমি মা। রাখা বিসরক্ত থেবের মৃত্যুর আ কিছু দিন পূর্বে উথায় সহিত আহার আলাপ হয়। জীয়ক রাবেজস্থার বিবেদী বহাপর উথার নিকটে আহাকে পাঠান। আমি চুই হিন উথার বাড়ীতে সিয়াছি; ছুই দিনই তিনি আহার নিকট পরিবাধের আলা বিষয়ের ধবর বিজ্ঞানা করিবাহিনেন। ইহা হইতে বুরিলায় বে সহয় বিবাধ সঞ্জেও পরিবাধের উপরে উথার সেহ করে নাই।

তৎপরে বার বাহাত্তর তাঃ শ্রীবৃক্ত চুনীলাল বন্ধু মহালর বলিলেন—রাজা বিসম্ভক্ষ বেবের সহিত অনেক দিন ব্রিয়া একল পূব বান্ঠতাবে লিণ্ড থাকার উথের চরিত্র এবং কাণ্ডাবলী ধর্মন করিবার আনার বিশেব ক্ষরিবা হইরাছিল। তালার ঝীবন আ চরিত্রে বাহা কিছু বিশেবক লকা কহিলাছি, তালার কিঞানাল আন্ধ আপনালিগের নিকট বলিব। উথের প্রথম বিশেবক—বিভাচটোর ও নিকার প্রতি ঐকান্তিক অন্থলাগ। আনি বথনই উথোর নিকট লিগছি, ওথনই ক্ষেত্রিছি বে, হর তিনি কিছু লিথিতেকেন কথনা পাঠ করিতেকেন। বিশেবকঃ ইতিহাস সংখ্যীর বই তিনি পুর পড়িতেন এবং পাঁচ অন বন্ধবারুককে একলিও ক্ষরিরা ইতিহাস পাঠ করিবা ওনাইকেন। ইউরোগার ইতিহাস সক্ষে আনার বাহা কিছু জান, ভাষা বাহারই কও। এই জানচর্চার উল্লেখ্য সভাবান্তার তিনেটাই নোনাইট তিনিই ছাপন করেব। ওথম ক্ষরিকাভার এত সভা-স্থিতি ছিল মা—কালেই সেই সভার অনেক পণানাভ শিক্ষিত্র থাকিও কাছিল-পরিবহ সংস্থাপিত হর। এ অন্ধ তাহার নিকট আন্ধা সকলেই রাজল। তিনি বাহিত্য-সভা নানে আর একটি সভা সংস্থাপিত করেন। এই সভারণ উল্লেখ্য করেবল। এই সভারণ উল্লেখ্য বহানকে বহানবালায়ার বিভাত্বণ সহাকর কিছু কিছু ব্যিয়াছেন। নাহিত্য-সভার আরও একটি উল্লেখ হিল—কংকু নাহিত্যে বা লালাবিল কুর্যানিক ক্ষরিবাহে, তাহা বাহিত্য ক্ষিয়া সাধারণে প্রকাশ ক্ষরতা নাহিত্য বা লালাবিল কুরানিক ক্ষরিবাহে, তাহা বাহিত্য ক্ষরা সাধারণে প্রকাশ ক্ষরতা নাহিত্য বা লালাবিল কুরানিক ক্ষরিবাহে, তাহা বাহিত্য ক্ষরা সাধারণে প্রকাশ ক্ষরতা নাহিত্য বা লালাবিল ক্ষরানিক ক্ষরিবাহে, তাহা বাহিত্য ক্ষরা সাধারণে প্রকাশ

কলা। ভালা ছাড়া ইন্টেডলার একটি উলেজের কবা বিভাত্বণ মধানর বলেন নাই। সে উদ্দেশ্য এট বে, এই সভার তিনি প্রায়ণদিপকে আহ্বান করিয়া, তাঁরাদিপের মধ্যে বাহাতে পাক্ষান্তা পিকা প্রবেশ করে, লে সম্বাদ ভিনি বর্থেই চেষ্টা করিতেন। ভিনি বলিতেন, আহমা ৰতই সংখাবের চেটা করি না কেন, ভ্রাহ্মণ-পণ্ডিতগর্ণের বারা ভাষা বভ বিন অভুযোগিত মা ৰটবে, ডড দিন লে সংখ্যাল-চেটা সকল হবে না, লে সংখ্যার ভিস্কুসমাজে গুলীত ভটবে না। সেই ক্ষ ব্ৰাহ্মণ-পঞ্জিপণের বধ্যে কাহাতে পাশাত্য শিকা বিভার লাভ করে, ভার্ত্ত ছেটা ভিনি প্রাণপ্রে করিতেন। এই বে বিলাওবারা গ্রহা এত গোলবাণ--প্রাণ্যে ও কেন্দ্ বিলাজে বাইডেই চাহিতেন না এবং বিনি বিলাভ চইতে আসিতেন, ভারাকেও কেং স্বালে প্রছৰ করিতে সাহস করিছেল না। তিনিই প্রথমে 👚 সম্বন্ধে স্থা করেন---ব্ৰাহ্মণ শভিতের মত দইরা বিলাভবারা বে শাল্ল-বিক্লম মতে, ভাচা সঞাযাণ করেন। কানছ-সনালে আজ্বাল যে বিশাভ গ্রভাগত ব্যক্তি এক রক্ষ চলিয়া গিরাছে, ইয়া ভালারই চেটার-ভালারট উত্বোগে। তিনি বেশের বালা মক্ষকর বলিরা বৃথিতেন, काराहे कविरक्त । किन बाजानाव विकास-शामात परवे गराव है कविरक्त । विकास नवाब-जाना नवाक जानि वांश किह कतिएक नवर्ष रहेशकि, छांश कीशांतरे केंद्रवाहन अवश ৰছে। ভাঁহাৰ বাহাৰা না পাইলে বিজান স্ব্য়ীৰ আমাৰ কোৰ পুত্ৰই স্পূৰ্ব হইড ना । अरे नकन अरा कांत्र भारत कांत्र कांत्र कांत्र की हित्रकान वृत्ते । छीहांत्र চরিত্রে বিভীয় বিশেষৰ পরবুংধকাতরতা। পরের বুংধ-কট কেবিলেই ভারার চিত্ত ক্রবীভত হইড—ভিনি বথাদাব্য ভাহার উপকার করিতেন। বালা ব্যুক্তেই ভিনি "সভাবাদ্ধান্ত স্থাভযা-স্কা" অতিষ্ঠিত করেন। এই সভার অব, ধর আ আতৃত্বের অয়সংস্থান এবং আরও আনেক ৰুদ্ধে সাহায় কৰা হইড। ডিনি এই সভা হইডে ছাত্ৰেৰাও অনেক সাহায় ক্ষিতেন। ভিনি বাঁছালের বেঝা-পড়ার 📖 সাহায্য করিয়াছেন, এখন সেই সব লোক স্মাকে প্রতিষ্ঠিত। व वक बहुन विनाइत्का नाम क्यम मुश व्हेटव ना । आयात कुछ प्रकटल आहेम श्राहिक-ত্রত বছটুকু লাধন করিতে পারিয়াছি, ভারা ওাহারই লাহচর্যে এবং ভাঁচারই লিবট বিকা ক্রিরা । স্থাধানিক অর্থ-সাহ্য্য নয়, বুর্তিক, ভূনিকম্প, অরিণার, অসপ্লাবন এক্রডিভ चांबरख्य द्य त्यांन व्यापरभन्न वाशियागीना वर्धन विशन धरेशारह, उपनरे किनि चांबाशिश्यक সভাবাঞার দাত্বা সভার ধবা দিলা সাহাত্য ভালিবতেল। এটা সভার ২০ বংসর বাবং জাছার মহিত আবি একবোগে কাল করিবাছি। তিনি চলিছা পিয়াছেন-জাহার নাছার-काकारबब व्यवक्र शृर्वात की ब्यान मारे । करन कामना काहात मुख्य महेना ट्यान अवटन केलाह कीर्थ क्यूब नाविट्ड ८५डे। क्विडिंह । छोरांव हित्यत कांव अक् वित्यवक-बानन वन अक् मकरबाब मुहका ; यांचा महत्राहेब कायारिय स्मर्भाव स्मारक वर्षा स्मर्भ मान् करिक बाहा हिंदशहि, जाहारे संगद। जानि अकताब बकरत्य बारे, हम बाद बाद कर हारायान. ইংৰাজ্ঞান সংৰ যাক ব্ৰহ্মদেশ কৰ্মণ ক্ষিনাছেন। জ্যান ক্ৰম মধ্যে মধ্যে সাম্ভিক বিভাগের

কাৰ্যান্ত করিভার। একজন এক্সাসীর ভলিতে একটি উত্তরপদ্মিরপ্রাভনিবাসী সৈজের আ**ভূগে কও** হয় ; এখন কও বে, আছুৰ বাছ না দিলে চলিবে না। ভাহাকে ক্লোবোখনৰ ভনিতে সেলে সে বলিক-একটা আকুল কেন, পাঁচটা আকুল কাট্যা কেনুন, ভাষাকে আবার কিছুই हरेर जा । किस चानि कथमरे क्लारताकते मुण्डेयां रवह न वहेव ता । छात्रारे करेल, कतांछ जिला কর কয় করিরা বহু জাপের পার আজুল কটি। হবল-নে থাজি একটু মুখবিয়াতি পর্বাত করিল না । রাজা বিনয়কক্ষের টেক এই রক্ত করত মনের বল কেবিলাছি। একবার উট্টার পৃথিত হব--পিঠ বৃত্তিরা একটা থালসার বত ত্রণ বইয়াছে, জীবন সভ্টাপর। অনেক চিকিৎসার পর কাটাই ঠিক ক্টক-কিন্ত ভিনি ক্লোকেন্স ক্টডে স্বীকার ক্রিকেন না : বলি-দেন---লাপনারা আয়ার মনের বল দেখুন, বতক্ষণ ইন্ডা, আপনারা অল্ল চাণান, আমি একট্ট মুখবিক্লতি পর্যায়ত করিব না। ঠিক ভাই ; 💵 ঘণ্টা ধরিয়া এব কাটা ব্টল, এণের অধিকাংশ कांत्र कांत्रि विशे कांत्रियां बांच द्वाबदा हरेका, किनि विशे बहिरायन । आनशा छाशान मध्यदात बुक्का এক মনের বল দেখিরা বিখিত ক্ইলাম। তাঁহার আর এক সংসাহলের পরিচর পাই, কলি-কান্তার প্রেলের সময়। তথ্য সকলেই কলিকান্তা ভাকিরা পদাইতেছে। প্রথে কি বলিতেছেন, ছোৰনা পদাইও না : গ্লেপের চীকা গও, ভাচা হইলে আর গ্লেপের 📉 থাকিবে না। এ কৰা কেছই ওলিজেছে না। সকলেই কলিকাজা ছাড়িতে উৎস্থক। রাজা-বহারাখালের বাজীতে क्षान तान क्या मां अवर विमक्किक केव्या कविरागरे वाकिटक त्या त्यांन वाक्ष्मांव नगविवारक বাইতে পারিতেন। কিন্ত তিনি ভাষা করিলেন না এবং সকলে বাহাতে ভাষার ভুটার দেখিবা প্রেলের টাকা নায়, নেই অভ তিনি নিজে সহধর্ণিক ও পুত্র-কভানিগের সহিত প্রেলের हीका क्षेत्रकत । आवता विकास, आध्यात हैका करेबाव छात्राकर कि १ फिलि विद्यालय প্রয়োজন নাই বটে, কিছ আমি টীকা দইলে সকলে বুরিবে বে, ইহাছে কোন জঃ নাই : তথন बारतर कहे और मिका करेरत । कीशांत और वृद्धीय त्य कत प्रस्थ, काशा जानवांता नकरत वृद्धित-(क्या । कीशांत करें अक्ष कथा मान व्हेरन कीशांक करवन मनावात्त अक्ष मनिवार अस हव । উল্লেখ্য কৰা বলিতে পাতিলাৰ মা-জাত্তও জনেক বকা আছেন; ভাঁচারা বলিবেন। আত্ত একটা কথা বলি। তাঁহার বন্ধ-বংসনতা অসাধারণ ছিল-বন্ধর এক ডিনি সর্বাহ্ন ভাগে করিছে शांविएकत । अरे वक केंद्रांत करते वक्ष भारतक क्षत्रिवाहित । वेंद्रांतित विविक व किनि कक्ष क्यांकि, वर्षकृत क्या क्यायान क्यान कतियांकिरना, क्याया नीवा नाहे। देश महक्रक ভাছারা পুদরার ভাঁহার নিষ্ট আসিরা মাহারা প্রার্থনা করিলে ভিনি নহারতা করিতে কর্মই প্ভারণত হুইডেন না। এইরপে উছিলে সহিত আমার ২০ বংসর বাবং পরিচর। উট্টার ঋণের কথা বলিতে থেলে আমানে অভিকৃত হইরা পড়িতে হয়। সাহিত্য-পরিবং বে উটোর পুতি-সন্ধার ব্যবস্থা করিলাছেন, এ বস্ত আমি আম্বরিক ব্যবস্থার প্রদান করিছেছি।

তৎপরে পতিত ত্রীযুক্ত হরেশধ্যে স্থাকপতিষ্টাশর সভাপতি ব্যাশবের আব্যানে বলিলেন,
—স্থাকা বিষয়ক্ত বহু দিন শোকাকবিত হুইরাছেন। আরু তাহার অবশক্ষে চিত্র প্রতিষ্ঠার

আবোজন ক্টবাছে। এ ন্ডার ভীকার চরিত্র বিশ্বেষণ সময় নছে। ভীকার চরিত্র স্বত্তে অনেকে অনেক কথা বলিবাছেন ৷ রাম বাহাছর চনীলাক বছু বহালর আর সময়ে ঘটনার লেখার, প্রমায় গুলিকার এবং ভাবের বর্ণে কর্মীয় রাজার বে বর্ণচিত্র করিবাছেন, ভাচা चक्नतीश। चार्वि चनविकान-ठाई। कविव नां । चानटक विवश्टकन---वाका वाराहत नाविका-পরিবদের অন্ততন প্রতিষ্ঠাতা। 'অন্ততম প্রতিষ্ঠাতা' বলিলে নতা অনুলার্থ থাকে। তিনিই লাছিত্য-পরিবলের প্রতিষ্ঠাতা। লাছিত্য-পরিবৎ উল্লায় বানদ-ছবিভা না হইলেও উল্লায়ই পালিত কলা। কথাটা এট, রাজা বিনহকুক বাবুপরিবর্তনের বস্ত একবার দেওখন সিমা-ছিলেন। সেইখানে ৰাজালীয় আভংখ্যবীয় প্রাক্ষারারণ বস্তু বচাশ্রের সহিত উচ্চার প্রিচর এবং ম্মিষ্ঠতা হয়। সাহিত্য-পৰিষ্ঠেক মত একটি প্ৰতিষ্ঠান প্ৰতিবাহ মত সাধনাবাহণ বাবুর মনে বরাবদ্ধ সংকল্প ছিল। তিনি তথন বাজা বিনয়কুঞ্জে নেই ভাবে অভুগ্রাণিত করেন। কালা বিনয়ক্ত কলিকাভার প্রভাবিত হবল সভর কার্যো পরিগত করেন। তারার ভবনে লাহিত্য-প্রিথণের প্রতিষ্ঠা হয়। সাহিত্য-পরিবং লাগনারপের মানসপ্রী-- রাজা বিনয়- करका शहर कृतिक व्हेतांकिन। महातांत्र दिनशक्त देवांत शांकी व्हेशकितन। शतिया. ভাষিষ্ঠ ভইবার পর তিলি ইতাকে অপত্য-নির্বিশেবে লাল্য-পাল্ন ■ 'অঞ্চিত্ত প্রভাবে শাসন' কমিবাভিগেন। তিনি ইয়ার অভত্য প্রতিষ্ঠাতা নর-অভ্যান্ত প্রতিষ্ঠাতা। এই व्यक्तिहारन पूर्वीत रक्तावान हक्त्रवर्षी अवर निष्टां कि नामक अक्कान देशदान चाहार नहारांचे ছিলেন-ভখন ইয়ার নাম ছিল "বেদল একাডেমি অব নিটারেচার।" এই নভা হইতে প্রাথমে একবানি ইংগালী প্রিকা বাহির হইত ; বোধ হয়, নিওটার্ডই তাহার সম্পাদক ছিলেন ৷ ৰাজালা আহার উন্নতি সাধন করিবার ভঞ্জিতা, কিন্তু দেই মড়া এবং ভাষার সুধপত্র পরি-চালিত হয় ইংগ্ৰালী ভাষার, এট বিবয়'লইয়া তবন'নুব-প্ৰতিষ্ঠিত একথানি মাসিকে এই উত্ত ব্যবস্থার প্রতিবাদ-বিজ্ঞাগর্ভ কঠিন প্রতিবাদ প্রকাশিত চুট্টাছিল। কেন্তু কেন্তু কথন ব্যক্ত ক্ষিতে আরম্ভ করেন । ইহারই পর এই সভার সাহিত্য-পরিবং নামকরণ ধর । এই সমুয়ে লালা বিনয়ক্ষ, কৰিবৰ নবীনচন্ত্ৰ নেন এবং হিজাত-পরিত্রালক পরক্তে ধান আহাকে সাছিছ্য-পরিষদে বোপ দিবার বভ আহবান করেন। তথন আমি ইনার সভা হই নাই। পরে আমি সভ্য-শ্রেষ্টাক্ত হর্টা রাজা বিনয়ক্তকের ধনিষ্ঠ পরিচয় লাভ করি। ছালা বিনয়ক্ত পরিষয়কে লালন ও পালন করিছেন, ভাগা পর্যবেক্ষণ করিবাছি ; তাহার বিশেবছ চিরকাল ধেথিবাছি ৷ बाका बाराइक अरुवान व्यवस्थात प्रशीमारेकात (organiser) विश्वम-'वर्गानारेक' प्रेथीर সংখ-বন্ধ করিবার অন্তত ক্ষমতা ছিল বলিৱা তিনি সাহিত্য-পরিবংকে গড়িরা তুনিতে পারিয়া-ছিলেন। ইহা আর কেবই পানিতেন না। আৰু ডাঁহার অরণ-সঞ্চার একটা গোচনীয় খট-লার কথাও বলি। সেহবদতঃ পরিবংকে বেমন ভিনি সমেতে লার্ম-পালন করিতেন, আনার ভেষনই সমতে সমতে ভাজনাও করিছেন। কেন্ত পাপমাশভতে এবং নর ও ফল্যার কামনা করিবাই, পরিবাধনে ক্লপথে বাধা আবস্তুক বিবেচনা করিবাই ভিনি চাপকোর উপরেশের অপস

আবেশনও অন্নবর্তী হইছেল। কিব অনেকে তাহার বিপরীত ব্রিরাহিলেন, আৰু ভাষা আবীকার করিয়া লাভ নাই; সভ্য গোপন করিবার কোনও কারণও নাই। এই বতাই তথন পরিবং হানাভরিত হইরাছিল। যে অবহার আমরা পরিবংকে উঠাইরা আনি, আরু ব্রিতেছি, জিনি বদি ভাহার মূলে সংহতিগজি না দিতেন, তবে তাহা এইরাপ একটি বাতার আহ্ঠানে পরিবংক ক্টভার বা পরিবংদর ক্তরতিঠা-উৎস্বে বোসনান করিয়া ভিনি সম্বাহরতা ল সাহিত্য-জীতির পরিচয় বিয়াহিলেন। তাঁহার লে মাহর্শ কথনও জুলিতে পারিষ না। অনেক হলে দেখিরাছি, কালের ক্স তিনি তাহার অতিয় ব্যক্তিকেও আম্বরণ করিয়াছেন, কার্যা-মিছির ক্স তাঁহার নিয়োগ এবং তাঁহার সাহ্চর্বা করিয়াছেন। আমরা হবি পরিবংশ ভাহার ভাবে আহ্বাণিত হইতে গারি, ভবেই তাঁহার উপর্যুক্ত বাতি রাণিতে পারিষ।

ভংগরে শ্রীযুক্ত থগেন্দ্রনাথ মিত্র মহাশর বলিগেন,—গালা বিনয়ন্তকের চিত্র প্রভিটার ক্রছ সাহিত্য-পরিবদের ভেটা স্বাঞ্চাবিক এবং স্থানত। সাহিত্য-পরিবৎ এবং সাহিত্য-দেবী, শৃক্ষেই রাজাবাহাত্রের নিকট ফুডজ। জাহার এই ছভি-অভিটার দিনে আমরা বভজেরের ক্ষা ভাবিব না। কুমুর ভবিষ্যতের গিকে চাহিয়া দেখিব। আমি সাহিত্য-পরিষ্যের উন্নতিকে বিশাস করি। সাহিত্য-পরিবং বে কাজ করিখাছেন, ভারাই মধেই নহে। বর্তমানে সাহিত্য-পরিবদের বাঁহার: ধুরত্বর, ভাহারাই ইহার সব নহেল। রাজা বিনরকৃত্তের 📰 ভাহাছের চরিত্রও এক দিন আমলা এইখানে রাড়াইরা কোনও এক সভার স্থালোচনা করিব। भाषास्मय २७ क्या विवकान शांकित मा-किय नाविका-भविषय विवकान शक्तित । वस्त्र সাহিত্য-পরিবংগর কর্মক্ষেত্র আরও বিস্তার বাক করিবে--বর্থন থেশের সাহিত্য ও চিন্তার ভত্তমূল পরিবংকে সকলে ভক্তি ও প্রভার চন্দে বেধিবে, ওখন নাহিত্য-পরিবনের আপ্রভ দাতা ও অক্সতম প্রতিষ্ঠাতা বিনরক্ষেত্র ক্রতিখ ও গৌরব সেই সংগ গোলে প্রভার সহিত প্রথ করিবে। ইউনিভারসিট ইনিটেটিউটের সম্পর্কে আসিরা পাবি ওাতার দান এবং ছাত্রদের বস্তু মুখল কামনা বানিতে পারি। তিনি কলিকাতার উত্তর-বিভাবের ছাত্রদের बारकाविक-करम २०००- हो को मान करवन ; ्नवे मानवे मार्काम रवामान निवारणंड वीक-चन्नभा नकरमहे बारमन, मार्कीम खातान हरेटड श्रांजरनत कि भौतमान कमानि नाथिक हरे-রাছে। এ বস খাখ্যা সকলেই উল্লেখ নিকট কডকা।

তৎপরে ঐনুক্ত নম্বধনাধন বহু ন্যালর বলিকেন,—রাজি অধিক বইবাছে। বালা বিসম্ক্রক কৈব বালাছরের সবংগ্র অনেক কথাই বলা কইবাছে। আলিকেনস কালাকেও লালি না, বিনি রাজা বালাছরের সংগ্রেই আলিরা তুরা কন নাই। তালার বে সম ওপ ছিল, ভালা বলিরা শের করা যার না। তালার নিকট পরিষদের আবার বালা বলার। তালার বালা করিবালের করার না। তালার নিকট পরিষদের আবার করা ও তালার। তালার বালা, পরিব্রেই অন্যালারিও চিলার। তবাপি আমি বলি, পরিব্রেই অন্যালার করার উচিত। তিনি পরিব্রেই অন্যালার বালাকেও ব্রেই আলি বর্তি আলি করার আলি বলার করার আলিক পরিব্রেই অন্যালার বালাকেও করার বালাকিবালার বালাকিবালার বালাকিবালার করার বংগরাভিই করার, নালবোর বে তালার পালক পিতা, তালা করার কুলিবার বর্তি বিনের করার করার বালাকিবালার প্রালার করার বালাকার বালাকার বালাকার করার বালাকার বালাকা

তৎপথে উদ্বাহ লগধন দেন মহাগর বজিলেন,—গালা বাধাননের খণের কথা কনেকেই বজিয়াছেন। আমি নে নৰ কিছুই বজিব না। আমি বলি, ছেনের নাম রাধিবাধ আমি জিলা বিভাগ হৈলের পার বাধিবাধ আমি জিলা ই কালা ছেনের পারটোচন নাম রাধিয়া থাকেন। কিছু বিনরক্তকের পিডা কি করিয়া জার ঠিক নামটি রাধিয়াছিলেন ? তিনি নাবেও বা, কালেও তাই। আমরা বখনই উাহার নিকট নিয়াছি, তিনি আমাধিবকৈ কোলে নড়াইরা ধ্রিয়াছেন। বুংবু দ্রিত্ত সাহিত্য-নেবী-বিগতে উাহার আমন আর কেই বছু করেন নাই।

ভংগলৈ পরিষদের সম্পাদক জীবৃক্ত রার বডীজনাথ চৌধুরী বহাণত, জীবুক্ত রাজেজকুমার জিবেরী এবং জীবৃক্ত রাজেজচজ্ঞ শাল্পী মহাশ্রহণ অনিবাধ্য কারণে এই সভার উপস্থিত হুইতে না পারিয়া বে সহাস্থাতি-পুচক গজ কোনৰ করিয়াছেম, ভাহা পাঠ করিখেম।

তৎপরে প্রীয়ক্ত পাঁচপাক বংশাাপাবাার বর্ণের বলিলেন,— রাজা বিন্রকৃষ্ণের ক্রান ১৮৮৮
মালে আয়ার প্রথম পরিচর। আবি জীবনে বে সব বল্প লাভ করিরাছি, ভাষার জনেকই
উল্লেখ্য ক্রান সে কালের বড় পোক্ষের বৈঠকথানার পভিত, দেশক, বজা, গারক অভৃতি
পর থাকিত, ভালার বড় লোকের সমে খেন কড়াইরা থাকিত, বড়লোকেরা ভাষের সাহায়
ভারতেন। সমাক-ভাগনের এই বে একটা কেলে, ইলা রাজা বিনরকৃষ্ণের স্বেকই পের কইরা
নির্দ্ধিয়ে। তাঁলার বড়ু-বাংসল্য-শ্বিকেলা সরভাই ছিল। সাহিত্য-পরিষ্থ কইরা ব্যান
ভারতা, ভবন আরি রাজা বালাক্রের পাশে ছিলার আদি প্রতিবাদ করিয়াছিলাম বে,
প্রিষ্থকে ভোলা উচিত নর। বালাক্তিক, তিনি পরিষ্টেশ্য নবলুক প্রবেশ উপনক্তে এখানে

আনিয়াছিলেন। ভাঁছার শ্বভিষক্ষার জন্ত বে আবোজন হরবাছে, ইলা নাবিভা-পরিবছের পক্ষে পৰীৰ্যে নহে। বিনহক্ষ্ণ কি কিলেন, সাহিত্যে তাঁহার কিন্তুপ অনুবাগ চিল, ইহা আনুকাল-कांत पुरक्तन्त्व वृक्षाहेबा (कक्षा केहिन । देश ना इहेरन-इहिन्छा हिस्स हिन्द मा। এই বে স্ব ভবি দেখিতেতি, ইয়া কেন ? ইয়ারা এক একখন জাতীয় ভাবের প্রোভিত---লাজীর ইতিহাসের অর্ণুঞ্জন। তাই ইতিহাস পুলিবার লগু-লাতীর ভাবের উত্তোবের জ্ঞ এই সৰ চিত্ৰ আমন্ত্ৰ। বাধিরাছি। জাল বলি নালা বিনঃস্ক্রের বুজি-সভার এই বন লোকে পূর্ব দেখিতাম, তবে বড়ই আনশ বইত। সাহিত্য-পরিববের অনেক উরতি ব্ইয়াছে, আরও হইবেঃ কিন্তু বিনয়ন্তক্ষেত্ৰ বাড়ীজে বে ভাবে সাহিত্য সহলে বে আলোচনা হইত, ভাহা এখানে হর না। প্রেরের স্থর রাঙা বিনয়ক্ত হাঁদা নিরাছিলেন, কিন্ত আহি নিতে পারি লাই। পার একটি কথা বলি। গ্রেলের সময় ধকণেই প্রতিতে বাত, কিন্তু মেন পার কই প টেশৰে ভারি ভিড়, শিক্ত ■ বোদীয়া থেতে পার না, বল পার না, পথা পার না, ঔবধ ভ পাৰই লা । বাজা বাহাছৰ বাত্ৰীদের এই ছববছা দেখিয়া বলিলেন, ইভার বাবছা কৰিছে र्देर्द। ७९७९१९ फिनि क्षेद्रम, १९१), शांचान, क्रम श्रकृष्ठि मन्नक व्यव्यादक क्रिन्ना निरमन। আক বিদ তে ট্রীট নিয়া একটি গ্রেপেঃ মড়া লইবা বাইভেছে। বাহকের। অনেক দুর চইভে বহিলা वामिरफरक, बांत शांत मा-धरक्यारन वहन । होता विमाहक व बानि तारे नथ विवा পাড়ী করিয়া আসিতেছিলান। ঐ দুল্ল দেখিরাই তাহালের কট ব্যব্দেন এক সম্ভ বিষয়েই বেশ স্থাবেশাবত করিবা দিলেন। এইরণ প্রাকৃতির লোবের এক বে সমাজ-সংক্ষি ছিল, উহিলো একে একে স্ব চলিয়া পিয়াছেন। সে রক্ষ লোক আর হইতেছে না। যে স্বালা বিনয়কুক আনাধেৰ জন্ত এত কৰিবাছেন, তাঁহাৰ স্থতি থকা কেবল চিত্ৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰিলে হটুৰে मा । जीवाब मक्य-छाराह ठविया दिनावामीटक मा वृक्षावेश मिटक लाटक छोजाटक विवास না। তাঁহার পৃতি রক্ষার 💵 এরপ ব্যবস্থা করা উঠিত, বাহাতে আধুনিক লোকেরা ভারতক বৃথিতে পারে। রাজা বিনয়ন্থকের নিকট সাহিত্য-পরিবৎ অপের প্রকারে কবি। ভাই পরি-रामत कर्ष्वभव्यक व्यष्ट्रशांव कृति, क्षांशांशां एक हिन व्यक्तिकारेका क्षांबिकारे क्षांबर व्यव अतिराज्ञात ৰা কৰেন। দে পকে বাহা ভাল কৰ্ডব্য, ভাহা পৰিবৎ কৰল বাহাতে ভাহার স্থাতি প্রতি शहरक कामश्रामत गरम जेमन देव ।

সর্বাধেরে সভাপতি প্রীয়ুক্ত দেবপ্রসাদ স্থাধিকারী মহাশর বনিলেন,—এই স্কার উপস্থিত হুইরাছি।
হুওরা আসার অবত কওঁও। তাই অনেক কাল ফেলিয়া বহু পূর্বেই আদি উপহিত হুইরাছি।
ক্রেরা, জাবিয়াহিকায়, একটু বিলয় করিয়া পেনেই গিলা এবন লনতা কেবিব, বাহাতে পরিবাদের নহকারী সভাপতির পক্ষেও অতি করে একটু হান লাভ করা অসম্ভব হুইবে। আমার
এ অহুবাস বিখা৷ হুইরাছে; ইহা আয়ার মুর্ভাগ্য, সেলের হুর্ভাগ্য। আমার আরও মুর্ভাগ্য,
বিসম্ভব্যের স্থৃতি-চিত্র উল্লোচন-সভাহ আলাহ সভাপতির আসন এহণ করিতে হুইণ। সাধাহুণ-বিজ্ঞান্ত কারণে রালা বিনয়ক্ষণ সেবের স্থুকে কোন কলু আ করা আয়ার পক্ষে সম্ভব ও

উটিত নয়। প্ৰভয়াং আৰি বেশি কিছু বনিব দা। ভিনি বে কালে হাত দিভেন, ক্ষেক কন ছাতা প্রায় স্কুল আখারই ভারতে প্রাণপথে বাধা ছিভেন। ইয়া সভেও কোন সংকার্যেট ভিমি কথন পশ্চাৰণৰ হইতেন না। পত্ৰিবং হইতে ভাঁছার প্রতি-সভার বে নিমন্ত্রণ-পর ছাপা क्रेंबार्फ, फाहाज क्षेत्र विक चानि (क्षिकांत, एटर फाहारक चानि छीकांत वर्गनांद "नाहिका-মেৰী" লিখিকাৰ না-"লাহিভিাক-লৈবী" লিখিভাব। সামরিক লাইভিডার ভিলি বে কণ্ড উম্বাটি করিবাটিলেন, ভাচা ভানিতা বাবিতার বিষয়। বিগত প্রয়েশী অব্যোলনের ভিতি বে আৰুছ, ইয়া ভিনি প্ৰথমেই বুৰিয়াছিলেন; তাই ভাহাতে ভিনি সম্পূৰ্ণ ভাবে ৰোগ দেন নাই এবং জাতার দুর্লবিত্তর প্রথাণ পরে বছল পরিয়াণে পাওরা নিরাছে। সাহিত্য-সভাবধন প্রতি-🗫 हत्त, छथन वार्षि छाहारछ लाग (वहे मारे : हेरारफ छिनि कथन व्यवद्धे हम मारे : यहर সাছিত্য-পরিষদের দৃহতি সম্বন্ধ রাখাতে স্বোর প্রকাশ করিয়াছিলেন। ইয়াতে তাঁছার উদাত্ত ভয়তের পরিচর পাওয়া বার। নাহিত্য-পরিবং ভাহার স্থতি রক্ষার ব্যবস্থা করিবাছেন। কিছ विजय क्रेबाइ वर्ड - क्य छाहाट काल्ड कान कान नाहे। चान धर क्या, बढ़ সাক্রবের তেলেলের ব্যোল-ম্যালা-মহারাজানের মধ্যে বে সাহিত্যসাধনা-প্রবৃত্তি এপন বাড়িয়াছে, ইহা পদ্ধ সংখাবের কথা : ইচা তিনিই আনরস করিবাছেন। আমি তাঁহার পরিবাদ**বর্ণে**র পক কুইডে সাহিত্য-পরিবংকে ধঞ্চবাদ গিতেছিঃ এই বলিয়া ভিনি তৈলটিয়ের সামান উল্লোচন করিলেন। পরিবাদ উপস্থিত সকলেই মঞারমান হইরা আবরণ উল্লোচন-কার্য্যে সভাতভতি দেখাইরা মৃত মহাত্মার প্রতি সন্মান প্রদর্শন করিবেন।

প্রিলেবে জীবুজ মল্লগ্যোহন ধন্ধ মহালয় সভাপতি বহালয়কে বছাবার দিলে পর সভা

জীকিরপচন্দ্র দন্ত সংকারী সম্পাদক।

জ্রীহরপ্রদাদ শান্ত্রী কর্তাপতি।

জন-সংহশাৰন

২৩শ বাৰ্ষিক, ৮।৯ বাসিক অধিবেশনে নিয়লিখিত প্ৰভাবিত সহজ্ঞানের নাম ঐ অধিবেশনের বে কার্যবিবরণ প্রকাশিত হটবাছে, ভাষাতে ক্ষবশক মুক্তিত হয় নাই। নিয়ে নেট নামগুলি ৩ প্রভাবক ও সমর্থকগণের নাম প্রমুভ হটবা।

প্রভাবক—শ্রীননীলোপাল বজুনলার, সমর্থক—শ্রীঞ্চলাস সরকার, সহত—শ্রীক্টাডোরকুলার বাব চৌধুনী এন্ এ, নিটাকলেলের অধ্যাপক, কলিকাতা। ডাঃ শ্রীপরচন্ত্র বোব এন্ ডি,
৪৯ চাউলপাট রোড, ভবানীপুর, কলিকাতা। শ্রীকিলোরীপ্রামার লয়সওরাণ এন্ এ (অরান),
ব্যারিষ্টার, বাকীপুর। প্রভাবক—শ্রীপ্রামিতকুমার বস্থা, সক্ষর্থক—শ্রী, সম্বত্ত—শ্রীলিবরার
কৈন্ত, ১৫৮ কর্পপ্রালিস্ ইটি, কলিকাতা। প্রভাবক—শ্রীনামক্ষণ সিহে, সমর্থক—শ্রী, সম্বত্ত
—শ্রীক্ষিত্রণ সিহে বি এ, রলোড়া, কালী, মুর্লিয়াবার। শ্রীব্রেলিচন্ত্র নিহর বি এ,
বালিরা, কালী, বুর্লিয়াবার। শ্রীবিকুপর বার বি এ, ১৬ নরেজনার সেন ছোরার,
কলিকাতা। শ্রীস্থীসচন্ত্র সাধুর্থা, ১৫৬ আগার সাকুলার রোড, কলিকাতা।

জিকিরণচন্দ্র দত্ত সহকারী সম্পাদক ।

বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদের কার্য্য-বিবরণী

शैविश्य वार्षिक अधिरवयन

३वर्षे खादन, ५०२०, ७०**८न भूगा**वे १৯३७, वरिवा**क, जगहांकू की**र

উপ্ৰতি-

মহাম্ছোপাধ্যার শ্রীমুক্ত হর প্রদান শান্ত্রী দি আই ই, এম্ এ (সভাগতি)

শ্রীপুক্ত সারদাচরণ মিত্র এম এ, বি এস

- ্র রামের ফুকর ভিবেদী এম্ এ
- ্ভা: নতীশচন্দ্ৰ বিভাতৃৰণ

धम् ध, नि धरेह छि

- ুলিভচন্দ্ৰিত এম্এ
- _ হীরেজনাথ সক্ত বেবান্তরত্ব

এম্ এ, বি এল

- ু সভ্যানৰ বহু বি এল্
- _ অন্তনারায়ণ দেন
- ্লগেন্দ্ৰাথ স্থাকাৰ এম্ এ
- ্ থগেন্দ্ৰনাথ মিত্ৰ অম্ এ
- ्र दरमण्डस मक्समाद अम् ■
- ্বাধানদাস বন্ধোপাধ্যার এম্
- ু চাৰচল্ল ভট্টাচাৰ্য্য এৰ্ এ
- , নগেন্দ্ৰনাথ বহু প্ৰাচ্যবিভাষহাৰ্থৰ
- ্ব কেশবচক্র গুপ্ত এল্ এ, বি এল
- ु कशरकु (सारक
- ু হেৰচজ দাশ ধ্ৰপ্ত এৰ্ এ
- ু বাৰ চুনিবাৰ বন্ধ বাহাছৰ

धम वि, अक मि धम

- ু ভূরেশচন্দ্র সমান্ত্রপতি
- **, क्यांनक गांगो**
- , सोनरी ३७गन चानी कोंगुडी
- . दर्दरश्रक्षमान शाव वि क
- 🔹 অধ্যাচয়ণ বিভাজুন্ধ

গ্ৰীৰুক্ত চিত্তত্থ সাঞাল বি ই

- , হেমেন্দ্রনাথ সিংক বি এ
- <u>, थेडाउ६ङ प्रवाशावाव</u>
- 💂 বিজয়লাল 📺
- _ ठोक्ठळ वळ्
- ু ডাঃ প্রস্থনাধ বন্দেস্পাধ্যায় এম্ এ, ডি এন্ নি, ব্যারি**টাছ**
- ু সরলকুমার বস্থ
- 🚚 সভোষকুমার বস্থান, বি এল
- ু ল্লিভাপ্ৰসাদ 📰
- 🧝 ত্রিপুরাচরণ চৌধুরী
- ু পতিত বৈশাসচন্দ্ৰ ক্যোতিবাৰ্থৰ
- ু পাঁচককি দাস
- ু ৰভীক্ৰমোহন রাব
- , गडीखरमयक बन्ही
- ু ভারাপ্রসন্ন খোর বিশ্ববিশোদ বি এ
- , रहमहत्त्व रमन कक्ष ध्वम् ध
- ু আওতোৰ বহলানবীশ
- ু নবিনীয়খন পঞ্জিত
- ु देवरमाकामाथ हरहाभागाव
- , রাম্চ্রি আফু বি এল
- ্ ননীগোপাল মকুষ্যার
- নগেজনাথ খণ্ড
- ু গৌরহলি লেন
- ् वरवैरवांस्य द**राव** वि 🖷

া বলীর-লাহিত্য-পরিষদের

क्षेत्रक अवश्वाहन रह वर्ष व

- ্ৰ হয়গোৰিক লক্ষ্ব চৌধুনী
- ্ৰ চাৰুচজ বন্দ্যোপাধ্যাৰ বি এ
- ্বত্যকুৰণ ৰন্যোপাধাৰ
- _ মঞ্জনাপ লাহ
- " খবিলাখন বিখাস
- ু কবিরাক মধুরানাথ কাব্যতীর্থ
- ্ল সভীশচন্ত মিত্র
- , कीर्रावधानाव विश्वविद्याप, धम् 🔳
- ু প্রবোধচন্দ্র চট্টোপাধ্যার এম এ
- ু গণেজনাথ ব্ৰহ্মচাকী
- ু কাণীপ্ৰদন বন্যোগাণ্যৰ বি 🗷
- ু আচনজনাথ বোষ বি এ
- ু বয়স্কুমাৰ বহু এম্ এ, বি এল
- 🍃 ভা: ব্যৱিদ্বরণ সুখোপাধ্যার এল এম এস
- , शेरतकक्ष रस्
- ্ৰ হরপ্রসাদ নতুমদার
- ্ৰ ডাঃ একেন্দ্ৰনাথ ঘোষ

এম্ভি, এম্ এস্ গি

- ু বিধুভূবণ সেনগুপ্ত এম্ এ
- ু : ক্লামাপদ রাম
- ু অনাধনাথ ঘোষ
- ্ব ব্যৱস্থাৰ ব্ৰোপাধ্যায়
- ্ব ক্যোভিশ্বস্ত বোৰ
- ু পথনচন্দ্ৰ বিখান বি ই
- ্ব শশিভ্ৰণ মুৰোপাধ্যার
- ্ব ক্ষেত্ৰনাথ বন্ধ্যোপাথার কাব্যক্ষ্ঠ
- 💂 ডাঃ দলিতযোহন পাল

🌉 বুক পঞ্চানন বিজ এগ্ 🔳

- ু নগেজকুমার রাছ
- ু বসভক্ষার রাগ
- ্ অক্ষত্নার বস্
- , कारनक्षनांव शंग अम् अ, वि अम
- ু ডাঃ বেণীমাৰৰ চক্ৰবৰ্ত্তী
- ু ভারাপ্রসর কর বি এ
- ু পিরিশ6ন্ত দত্ত
- ্ব ভানেক্রনারারণ রারচৌধুরী
- ু শৈলেজকুফ লাহা
- ্ৰ ক্ৰেণ্ডক গলোপাধাৰ
- ু অভুলচ্*জ সেন*
- ু প্রসরকুমার সরকার
- ... **क्**यीटक्थ भिक
- স্বোৰক্ষার সুৰোপাধ্যার বি 🔳
- _ বিলোদবিহারী
- _ ভাষাপদ ভট্টাচার্ব্য
- ু সভ্যেন্দ্ৰনাথ বন্দ্যোপাধাৰে
- _ শুচীন্তানাথ বস্থ
- ্ সিক্ষের দাস
- ু বসম্বর্জন রাম বিশ্বলভ
- ু ভাৰাপ্ৰসন্ন ভট্টাচাৰ্যা
- ু সুৰ্বাকুষাৰ পাশ্
- ু বিনোদবিহারী চক্রবর্তী
- ্ৰ রামক্ষণ সিংহ
- ু পঞ্চানন ভট্টাচাৰ্য্য
- ু উপেন্দ্রনাথ উপাধ্যার
- ্ৰ ভোলানাথ কোঁচ

শ্ৰীবৃক্ত ব্যৱ ৰতীক্ৰমাৰ চৌধুৱী শ্ৰীকণ্ঠ, অকিতৃহণ, এমৃ এ, বি এন (সম্পাদক)

- ু মুণাগকান্তি কোব
- ু বাইনাথ নদী
- ্ ভারেজনাথ কুনার

नरकाती नन्गांककः।

শীৰ্ক কিৰণচর 💌 (সংকাৰী সম্পাদক) অনিবাৰ্থ কাৰণবশতঃ উপস্থিত ক্টতে সাংলব নাই, পক্ষ বাৰা আনাইয়াছিলেন।

वार्विक व्यविद्यन्त्रम व्यवसाठा विका-)। मानिक व्यविद्यन्त्रम व्यविविका शक्ति। ২। থাবিংশ বাধিক কাৰ্যবিবরণ পাঠ। ৩। সভাপতি মহাশ্যের সংখাধন। ■(平)। ১০২৩ বলাবের জন্ত কর্মাধাক নিরোপ সকলে কার্যনির্বাহক-সমিতির প্রয়োব। (খ) ১০২৩ ৰঙ্গান্ধের ব্যক্ত কর্মাধাক নিয়োগ সহজে শীযুক্ত কেশবচন্দ্র গুও এমু এ, বি এল মহাশবের এবং শ্ৰীকৃত্য দলিনীয়খন পণ্ডিত মহাপৰের অভাব। (গ) ১০২০ বছাজের কার্বানিনীহক-স্মিতি গঠন। ৪। ১৩২০ বলাকের আকুনানিক আর-বার মঞ্জর । সহারক-সক্ষা নিরোপ। ৭। চিত্রপ্রতিষ্ঠা—(ক) মহানহেশাগার পণ্ডিত ৮চন্দ্রকার কর্বানকার, (ব) কবি ভরজনীকান্ত সেন ও (গ) অধিকাচরণ ব্রন্ধচারী নহাশরগণের চিত্র। 🕶 🕆 প্রবন্ধপাঠ,—ই শ্রীবৃক্ত অমুলাচরণ বিভাত্তবণ মহালয় কর্ম্মল "১৩২২ বলাকের বাললা-লাহিত্যের বিধরণ^ই শীৰ্মক প্রবন্ধ। ৯। ত্রিপুরা ও নদীয়া-কুক্ষনগরে বনার-সাহিত্য-পরিবদের পাথা-ছাপন-সংবল। ১ ১০। পরিবদের নিরমাবলীয়.১০(খ), ২৫, ০৯(ক) ও(খ), ৫০ ছ ৫৯, ৬৫ সংখ্যক নিরমন্ত্রীর পরিবর্ত্তন । পরিবর্ত্তন । কার্যানির্বাছক-স্থিতির **প্রায়া**ব। ১৯। প্রায়ি বংসর ২বা বৈশাধ ভারিৰে সেই বংস্বের **আ** কার্যানিকাছক-সমিতি গঠন **ল ক**র্মাধ্যঞ নিয়োগ সম্বাদ্ধ জীয়ুক কানেজনাৰ খোষ বি এ মহাপৰের প্রকাৰ। ১২। আহানি-জীযুক্ত গুলদাস সমকার এম এ মহালর-প্রসন্ত চুইখানি প্রচীন ইটক 🗷 জীবুক রাধানকার রাম বি 👊 মহাশন-প্ৰদাৰ একথানি প্ৰাচীন ইট্ৰ ও একট প্ৰায়ৰ-হৈড়া ৷ ১০। পুৱৰ 🔳 পুৰি উপহার্ছাত্রণকে ভতজতা জাপন। ১৪। সাধারণ-সদস্য নির্ফাচন। ১২। শোক-প্রকাশ--(ক) গণ্ডিত শরজন্ত নাজী, (ব) পণ্ডিত গুলনীকার চক্রবারী, (গ) চাকচন্দ্র ব্যানিক, (ব) শ্বক্তর স্টিক, (১) আসরকুমার বোষাল এম্ এ, (১) রাধ্ক্ষল রায় কি এল, (১) হিরশাভূবৰ বন্দ্যোপাধ্যার 🔳 (ব্দ) ক্ষীরোগচন্দ্র রাখ চৌধুরী এমু এ মহাশ্রপ্রণের প্রবাদ্ধ-नमरन । ১৯। विविधा

>। আনা সহকারী সম্পাধক শ্রীবৃক্ত হরেজনাথ কুমার মহানার প্র ১০খ বালিক অধিবেশনের কার্য্য-বিবরণ পাঠ করিলে উহা- গৃহীত হইল। তংপরে শ্রীবৃক্ত বতীজ্ঞবোহন বার মহানার প্রতাব করিলেন বে, গত চতুর্থ মাসিক অধিবেশনের কার্য্যবিবরণ কোন সভাই প্রিভ বা গৃহীত হর নাই। অভএব উহা এই সভার পঠিত আর্হীত হউক। শ্রীবৃক্ত রমেশ
অক্ষায়ার মহানার এই প্রতাব সমর্থন করিলেন। তাহারা আরও আন করিলেন বে, উহা পূর্ণে কোন বাসিক অধিবেশনে উপহালিত করা আন নাই কেন শ্

সম্পাহত আৰু কাৰ হতীক্ষণাথ চৌগুড়ী বহাল্য এই প্ৰৱেশ্ন উত্তৰ বিলেন। প্ৰীৰ্ক্ত হেমচন্দ্ৰ লাশগুণ্ড সহাল্য প্ৰীৰ্ক্ত হতীক্ষ্ণোহন হাৰ মধানৱেৰ প্ৰান্তবেদ সংগোধত প্ৰভাৱ ক্ষিত্ৰেল যে, উক্ত চমুৰ্থ সামিক অধিবেশনের কাৰ্যানিবৰণ পঞ্জিত বলিয়া গুটাত হউক। <u>জীকুক্ত মন্মাধ্যোহন বহু মহাপন্তের সমর্থনে ।</u> সর্বাসন্তভ্রেমে এই **প্রা**বাদ পূহীত হইস।

় ২ । শ্রীযুক্ত স্থাবিজ্ঞার স্থার সহকারী সম্পাদক মহাশল গত ছাবিংশ বাবিক কার্যাবিবরণ পাঠ কবিলেন।

শীবৃক্ত কেশবচন্দ্র পথা মহালয় প্রাপ্তাব করিকেন বে, এই বাবিক কার্যাবিবরণীমধ্যে প্রোস কমিটির সদস্যাপ একসমনে বে পদত্যাস করিয়াছিলেন, ভারার কারণ এবং এই বটনার উরেও করা হউক। ইহার উত্তরে সভাপতি মহালয় প্রশ্ন করিলেন বে, তাঁহারা করে পদত্যাপ করিয়াছিলেন। শীবৃক্ত কেশব বাবু মলিলেন বে, গত কল্যকার সভার শীহারা পন্ত্যাপ করিয়াছেল। উপস্থিত অভাক্ত সদস্যগণ বলিলেন হে, এই মটনার উল্লেখ পূর্ববংশরের বাহিক কার্যাবিবরণ মধ্যে থাকিতে পারে না। সভায় সমস্কেত সদস্যগণের বত অহুসারে সভাপতি মহালয় শীবৃক্ত কেশব বাবুর প্রাণ্ডাব অপ্রাণ্ডাকক বলিয়া উপস্থাপনের অব্যোগ বিবেচনা করিলেন।

কংশবে জীবুক্ত ললিতচপ্র মিজ মহলরের প্রকাবে, শীবুক মন্নথমানন বস্থ মহালনের সমর্থনে ও.সর্বসন্মতিক্রমে পঠিত বাবিক কার্যাবিবরণ পূর্বীত হইল।

- ০। অতঃপর মহামহোপাধ্যার প্রিযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশ্বর উহোর সংখ্যান পাঠ
 করিলেন (ইহা পরিষ্থ-পত্রিকান ২০ ভাগ, ২য় সংখ্যার প্রকাশিত ভ্ইবে)। সভাপতি মহাশ্ব
 নিজ সম্পাদিত লাখগোলার বিভোৎসাহী রাজা প্রীযুক্ত বোগীক্রনারারণ রাষ্বাহাত্তরের
 সম্পূর্ণ বাবে মুক্তিত পরিষ্ণের গ্রহাবলীভূক্ত হাজার বংস্তের প্রাণ বালালভাষার শেখা
 বিরীছ গান বোহার্শ পরিষ্ণকে উপহার দিলেন।
- ৪ (ক)। অতঃপর সভাপতি মহাশয় অলিলেন বে, বর্ষপেষে সভাপতি অবসর এইণ করেন,
 এই জন্ত তিনিও অবসর এইণ করিতেছেন। তিনি বলিলেন,—ভ্নিলাম, বোগাতর বাজি
 সভাপতি হন, ইহাই কাহারও কাহারও ইচ্ছা। আমি বর্তমান বর্বের জন্ত ডাঃ অসমীশচক বন্ধ্ব
 মহাশহের নাম সভাপতির পাদে প্রভাব করিয় অভকার সভাপতির কার্যা হইতে অবসর
 প্রহণ করিতেছি।

অভঃপর প্রীযুক্ত নারধাচরণ মিত্র নহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। এই সমধে
প্রিযুক্ত সভ্যানক বস্থ মহাশর প্রীযুক্ত ভাক্তার জগদীসচক্র বস্থ সি আই ই মহাশদের একধানি
প্রশ্ন পাঠ করিলেন। এ পত্রে ভাঃ বস্থ মহাশদ জানাইদাছেন যে, ভিনি পরিবদের সভাপতির
পদ প্রহণ করিতে পারিবেন না। প্রীযুক্ত সারধাচরণ রিজ মহাশদ বলিলেন, ভাগ হইলে আমি
প্রভাব করি যে, মহামহোপাধার প্রীযুক্ত হরপ্রামাদ শাল্লী মহালন্নই সভাপতি-পদে পুননির্বাচিত
হউন। এই প্রভাব প্রিযুক্ত সভ্যানক বস্ত মহাশন সমর্থন করিলেন। প্রীযুক্ত কেশবচক্র
ভঞ্জ মহাশন এই প্রভাবের প্রভিবাধ করিলেন। প্রীযুক্ত সুনাক্রের সমাধানিত বহাশন এই
ক্রিয়ালের সমর্থন করিলেন। প্রীযুক্ত সারদাচরণ মিত্র মহাশন ধণ্ণর বেক্তিবাদের র্

সংসাই **উহিার প্রভাবের প্রতিযাদ করিতেছেন, তথন তিনি উহিার প্রভাব প্রস্তাহার** করিলেন। প্রীযুক্ত ভাই কাদীলচক্ত বস্ত সি এস আই, সি আই ট, এম্ এ, **ডি.** এস্ সি মহালর সর্বাসম্বতিক্রমে ১৩ল বর্ষের জন্ত পরিষ্ঠের সভাপতির পদে নির্বাচিতিত হবৈদন।

৩ংশরে ব্রারীতি প্রান্তাব ও সম্প্রিকর পর ২০ বর্ষের **চনা নিছলিখিত ব্যক্তিবর্গ পরিস্থান্তর** কর্মাধ্য**ক হইকোন। নিয়ে প্রতাবক,** সমর্গক আ কর্মাধ্যকের নাম প্রান্ত হইক।

बेख रक

সমর্থক

क्षीशक

সহকারী সন্তাগতি

শ্রীযুক্ত চাক্তচন্দ্র বস্থা শ্রীযুক্ত কেষে প্রশ্রেশন থোব ১। জীবুক্ত সাধ্যদাচন্দ্র নিজ এম্ এ, বি এন ২। হাজা রাও শ্রীযুক্ত যোগীজনারামণ শ্লাম

বাহাছুৰ

৩। ভুমার ত্রীবৃক্ত শরৎকুমার হার এম্ এ

। মহারাজ খ্রীবৃক্ত জগদিকুলাথ রায়

व । वशाबाधिशाल श्रेष्ट्र मात्र विकारीण

মহাতাপ বাহাত্য কে টি,

क नि अन बाहे, क नि बाहें है

🛚 🖟 মাননীর ডাঃ শ্রীবুক্ত দেবপ্রানাদ

সর্কাবিকা<mark>রী</mark>

৭। মহামহোপাবার ত্রীবৃক্ত ছরপ্রসাদ শালী

৮। श्रीवृक्त त्रारंशस्य स्मारं बिरंगरी

20世代日本

ত্ৰীকুক গলিতচক্ৰ মিত্ৰ ত্ৰীকুক নগেজনাথ বস্থ ত্ৰীকুক বাব বতীজনাথ চৌধুনী সক্ৰামী সম্পাদক

ঐবুক্ত সভীপচক্র বিভাতুরণ

১। 🖺 খুক্ত মূণালকান্তি হোষ

২। 🦼 ছবেজনাথ কুনার

ও। 🔒 কিরণতর কর

s) <u>ৰগেন্ত্ৰ</u>নাথ চটোপাথাৰ

ং 📲 শ্লিনীর্জন প্রিক্ত

পরিকাশক

উৰ্ক বানেজইকর জিবেদী জীবুক লগিতচক্র নিজ

বহুনিহোলাধার

षाः जैव्क मधीनहत्त्व विषापृत्त

বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষ্টের

ш

अपर्यक वर्जा सक প্রভাবক बनावाक শীৰুক হীরেজনাথ দত শীৰ্ক কলিডচক্র নিজ শীৰ্ক প্রকৃত্ননাথ ঠাকুর ্ব অবৈধিচন্দ্ৰ চট্টোপাধাৰি প্রীমৃক্ত মন্মধমোহন বস্থ 新聞付売 শ্ৰীযুক্ত ক্ষেত্ৰভাৰ কুমার 🔒 কালিদান নাগ চিত্রশালাধ্যক ু মুণাগকাতি বোৰ ু নীলনণি চক্ৰবৰ্তী এমু এ শ্ৰীবৃক্ত নগেন্তনাথ বশ্ব আরবার-পরীক্ষক ু প্ৰথমাৰ ব্যাপাধ্যার ১। জীবুক জানেজনাৰ বোৰ ... चारशिक्षकाच विक ২। 💄 উপেঞ্জচন্দ্ৰ ৰন্দ্যোপাৰ্যাৰ ৪ (প) ৷ ভংগরে সম্পাধক শ্রীৰুক্ত রাম হতীজনাথ চৌধুনী মহাশগ কানাইলেম বে, নিছলিখিত সহস্তগ্ৰ লাধায়ণ-সমস্তগৰ কৰ্ম্বক স্বাৰ্থানিকাহক-স্নিতিয় সভ্য নিৰ্কাচিত क्रेशांटक्न,---৯। জীবুক হীরেজনার্থ 💵 ্ঠঃ। ঐীধুক্ত অসুনাচরণ বিভাত্বণ ু ক্ষেত্র স্রকার ২ ৷ 🚆 রাধালদাস বল্যোগার্যার \$8.1 ২০। ু পশুত হুৰ্গাচয়ণ নাংখ্যতাৰ্থ ৩। 🍦 💂 খলেজনাৰ দিল 😘 । 🦼 यज्ञश्रमाहम वज्र a h নুনেরেশার বস্ত্র 🧫 (हमहत्वः मानकश्च 36 | ু বাণীনাধ নকী ১৬ I ু ৰোগেজনাথ দলে**ও**ঠ ্ব হেমেক্সপ্রানার বেবি ১৭: 🔒 🎫 রওপন আলী চৌধুরী ্ব বোগীজনাথ নমান্ধ্যর 🖢 । 💢 রমাঞানাদ চন্দ >>। ___ हांक्रध्य बरक्तांशाशांव »। , जन्म नस्तरात ' 29.1 。 (中中45度 学校 ু ভাঃ ৰনগুৱালাল চৌধুরী ২০। 💂 ভাঃ শৌৱীক্ত কুণাৰ 🚃 50 H এবং বিশ্বলিখিত স্বজ্পণ শাধা-পরিবৎসমূহ হইতে মির্মাটিত হুইবাছেন,— विवृक्त श्रास्तावतः III (होष्ठ्ये) 🔹 🔊 🕸 বুক্ত হরিনাথ খোষ ২। 🎳 ধোধিদখ মেন 81 , नवक्रक दांब তৎপারে সহকারী সম্পাদক তীবৃক্ত সুণালকাত্তি বোব ঘঢ়াবর ২০শ বর্ষের আঞ্ছ-মানিক আম-বাম-বিবরণ পাঠ করিবেন। এই প্রাথদে জীযুক্ত লগিডচঞা, বিজ্ঞ क्षाचान क्षतित्वम त्य, बरक्रहेव मरना शंक्यांक होकांत बैंद्रश्च क्षिएक हतेता। जर्जनविक- ক্রমে থকেট পৃথীত হইল। জীবুক গণিতচন্ত্র থিত্র মহাণর পরিবরের স্থায়ী ভথবিবের সম্পূর্ণ হিসাব দেখিবার প্রক্রাব করিলে, স্থির হত, উহার বিবয় আপানী নাসিক অধিবেশরে আলোচিত হববে।

- শতঃপর তীর্জ রায় য়ভীক্রনাথ চৌধুরী মহাশয় নিয়লিখিত বাজিপথকে সহায়কঃ
 সহক্রপে নির্বাচনের প্রভাব করিলেন,—
 - শ্রীবৃক্ত পঞ্চানন বন্দ্যোগাধার বি এ (কলিকাডা)
 - ২। ুনলিনীরঞ্ন পণ্ডিড 💩
 - ৩। _ নিবারপচন্দ্র ভট্টাচার্যা (কুচবিহার)

শ্রীযুক্ত প্রবোধচন্ত চট্টোপাধ্যায় মহাশয় প্রকাষ সমর্থন করিলে উক্ত হাজিগণ সর্মান স্বাভিক্রমে স্থায়ক-স্থান্তরে পৃথীত হউলেন।

- ৰ। তংগৰে সভাপতি মহাশয় কর্তৃক নিয়লিখিত চিত্রগুলির প্রতিষ্ঠা হুইল,—
 - (১) মহামহোপাধ্যার চক্ষকাস্ক ভর্কাক্ষার মহালয়ের ভৈলচিত্র
 - (২) রজনীকার সেন মহাশরের ভৈণ্ডিত্র
 - (৩) অধিকাচরণ জন্মচারী স্থাপ্রের জোমাইড

এই চিত্রগুলির মধ্যে প্রথমখানি রাজসাতী জোগ্রাড়ীনিবাসী জমিদার প্রীযুক্ত মোহিনী-নাথ বিশি মধাপর আ ওরধানি শ্রীযুক্ত ভোলানাথ ব্রস্কচারী মহাপর পরিমধ্যে দান করিয়া-ছেন। বিতীয় চিত্রধানি রজনীকাস্তা-স্বৃতিস্বৃত্তা-স্মৃতির ভাগ্রায় হুইছে ব্যাহা হুইরাছে। উক্তঃ ন আ ৩য় চিত্রের উপভারশাভূগণ্যে ধ্যুবাদ ক্রাপন করা হুইল।

- ৮ । শ্রীৰুক্ত অমূল্যচরণ বিভাভূষণ মধাশ্ৰের "১৩২২ বলাকোর বালালা সাহিত্যের বিংরণ" নামক প্রবন্ধ পাঠ ক্ষতিত রহিল ।
- ৯। অতঃগর তীবুক হয়েজনাথ কুমার বহাণর জানাইলেন বে, নদীরা কুক্ষনগরে থ অিশুয়া কুমিলার পরিষধের ছুইটি শাখা ফালিত ক্ষয়াছে।
 - ১•, ১১ ১২ আলোচ্য বিষয় সময়ভাবে আলোচিত ত্ইল না।

শ্রীবৃক্ত মংগজনাথ বন্ধ মহাশর পরিবাদের অভতম সহারক করিছে প্রক্তান উপহারপ্রক্রণ আছান একটি ক্ষা সরস্থাসূত্তি ও ল থানি পূথি প্রদর্শন করিছে প্রাণ্ডাকে ধন্ধনান প্রক্তি ক্ষাব্যপ্রতি সাধারে গৃহীত হইল।

- ১৩। উপহারশ্বরণ প্রাপ্ত নিয়লিখিত প্রক্রকালীর উপহারদাভূগণকে খরুবার জাগ্র ক্যা হবল। (এছতালিকা গরে এইবা)।
- >৪। নিম্নতিথিত ব্যক্তিবর্ম বধ্যরীতি প্রকাব 🖩 সমর্থনের পর সামারণ স্থাক্তরণে নির্বাচিত হইকেন। (ভাগিকা পরে দ্রইবা)
- ১৫ । নির্নিধিক সংক্রাণের সূত্যতে পরিষ্টের শোক আগন করা হইব। স্ভাত্ রুক্তে রুভার্যান হইরা এই শোক-প্রভাব 🚃 ক্রিগেন।

ৰঙ্গীয়-দাহিত্য-পরিষদের

১। পণ্ডিত লয়ভল্লা লাজী

২ ৷ রখনীকান্ত চক্রবর্তী (মানদহ)

৩। চাক্চক্র মলিক

100

। শবদ্ধে গোব মৌলিক

ে। অসরকুমার বোবাল এম্ এ

■) সামক্ষণ দার বি এক

१ । स्विमाञ्चन व्यक्तामाधाः

৮। স্পীরোগচন্দ্র হার চৌধুরী এম্ 🔳

অভঃপর সভাপতি মহাশয়কে গ্রুবাদ জানাইর। মভাভল হইল।

শ্রীকিরণ**চস্ত দত্ত** সহকারী সম্পাদক। শ্রীসারদাচরণ বিত্ত শ্রভাপতি।

উপ**ন্নত পু**স্তকের তানিকা

প্রধান্তা—শ্রীকুজ কিরণচক্র 💶	১৮। গোলে ৰকাৰণী
১। ভপজী	১৯ ৷ কাপ্তেনবাৰু
২ : আদিশুর ও বল্লাগদেন	২০। কেয়াশী-চরিত
০। পৃ ৰ্ীরাজ	২>। বাশ রে কালি
হ ৷ পল্লী-স্মিতি-দূর্শণ	২২। বিল-বিজাট, পঞ্চং, ১ভাগ
¢। সা#হানের ইতিস্থ	২৩। প্রণয়- কৃত্ ম
🕶। নটেন্দ্রলীলা কব্য	২৪ ৷ অনুবোধ প্ৰবোধ
 শ্ৰদ্য-সংখ্যক্তিনী 	ec l ত্বলাকের অভার্বনা
৮৷ কডিণয় কবিডা	২৬ ৷ পোহত্যা 🖿 গোয়ক্ষা
»। (शारक्षमा-काविनी, नः २	২৭। দিজ-বিদাপ কাব্য
 ভাঙা-ভূবাৰ বোহাচাক 	২৮ ৷ ভারতে ববন
১১ বিলাভী সভী	গ্ৰহাডা—ইংবৃক নিমাইটাণ শীল
३३ । भूको-मारकोद्या न	२३। (भषपृष्ठ
১৩ ৷ যোষ্টেশংশন্তি	৩ ০ জা শ্রম
১৪। ক্তিপন্ন কবিভা	ঞ্চৰাতাজীবুক পঞ্চিত শিবনাৰ শামী
(ইংরাজী অক্বার সহ)	৩১। বিধ্বার ছেলে
১৫। সময় শায়িকী	०२ । धर्मकीयम, ३३ ४७
> ৬ ৷ বৃদ্ রসাবোদ নাটক	८०१ को रहा,
১ণ। আইনত অধিকার	०३। के ज्य

ঞায়াতা—শ্রীযুক্ত যোগিসম্ব সেন

০৫। রামধান-প্রস্থাবলী, এর ভাগ আমাতা—-প্রীযুক্ত মামনারাধণ বড়বী

৩**৬। কলাতির ধর্ম-বৈ**ষ্ণা **প্রান্তঃ—-শ্রীমৃক্ত মাধাক্ষণ মুখোপা**ধাায়

৩৭। দরিজের জন্মন গুলান্ডা—শ্রীযুক্ত রাধালদাস বন্দ্যোগাগায়

৩৮৷ ধর্মপাল

৩৯। প্রচীন মুক্তা, ১৭ ভাগ

8+1 **ख**रक

8 > 1

প্রদাতা---বীবুক্ত গভিত 📰 প্রদাদ শাস্ত্রী

৪২। কাঞ্চনমাধ্য প্রদান্তা—শ্রীযুক্ত ব্রহ্মারী গণেক্রমাধ

६७। 🛎 न्दर्गन

өв। কর্মবোগ

se! ভজিবোগ

१७। त्रावरकांश

ঃ৭। ভজিবহন্ত

८৮। धर्मिखान

৪৯। পরিব্রাক্ত

< । छारवात्र क्या

es ৷ আচ্য ভ পা**ৰ্**চাত্য

८२। वर्तमान छात्र्थ

৫০। পজাবনী, ১ম ভাগ

दशांकी स्त्रा_

बदा थे आ...

🐠 । চিকাগো-বজ্জা

<! ভারতে বিবেকানক

८৮। क्रांशक्वन

৫৯। শীরাবামুখ-চরিভ

७०। नाम जान वहांगत

भागा क्षेत्र काहासाय व

♦২। প্রহারী কাব্য

৩০। নিবেদিতা

😘। ঐতীবামকক উপদেশ

et। খ্রীঞ্রীরাসকুষ্ণার্ভ ক্রথমালা

৬৮। স্ব্যাসীর গীতি

প্রদাতা-শ্রীযুক্ত বিধুমুবণ সরকার

१ निरोधा-माध्यो

৩৮। খ্রীগৌরাস

🕶। 🖺 🏝 विक्थिया, अम 🕶

আদাতা---শ্রীবিভূতীশচন্দ্র কাব্যগ্রামারণভীর্ণ

1 শ্রীষদ্গোমলন্

গ>। হরিপ্রেমায়তং
 প্রশাতা—শ্রীযুক্ত সভীপ্রসাদ স্থান চৌধুরী

৭২ ৷ নৰ মধ্যের সাধনা

 Glempses from the Life-story of Sasipada Banerjec.

প্রদাতা—শ্রীযুক্ত বিষ্ণানচন্দ্র বোষ

981 প্র**ণয়**-প্রকাপ

গ্ৰদাতা—গ্ৰীৰুক কণীজনাৰ ৱায়

961 | 100

অলাভা--- জীবুক আলীখন ভট্টাচার্ব্য

ৰঙ। ছাত্ৰগণের নৈতিক অবস্থা আ ভার্যার প্রতিকায়

প্রণাডা—৮ব্যোসকেশ সুক্তমী

৭৭ ৷ চাকচৰ্যাপভৰ

৭৮: আর্থনা (১ম ভাগ)

৭১ : অর্থ-পুপা

৮০ | ব্লগ-নিৰ্বোষ

৮১ ৷ সভানারাগণের পাঁচালী

৮২ ৷ কবিডছ

৮৩: ক্লম্পছতি (১ম জাপ)

বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদের

_	
প্ৰদাতা—প্ৰোদকেশ মৃত্তদী	>>>। लीनां यखी
৮৪। উপনিবং (১ম খণ্ড)	১১ । বিদ্রে-পাগ্ শা বুড়ো
rei। উপনিষ ং (২য় থ ও)	১১১। জামাইবারিক
৮ ৬। আগাধাজীবি ভা (১২ বও)	५५२। यहांनद्ध कीर्येक श्रीयुव
৮ ৭। হিন্দুর উপাসনাতৰ (১ম ভাগ)	১১०। सहसूनी कारा
৮৮ ৷ আর্থা-রমণীর শিক্ষা ও বাধীনতা	১১৪। वास्य कविडा
 ৮৯। বিফুপুরের ৺কাণীয়াভার পুর্ববৃদ্ধায় 	>>¢ প्रध्नर्वह
৯০। পূৰা	>>७। मौनवब्दीयमै
৯১৷ গ্ৰন্থোন্তর-বছৰালা (১ৰ)	व्यमाना—श्रीकृष्ट पञ्चक्नात्त भूरवाशामात
এবাডা—শ্রীযুক্ত কণীশ্রহণ্ড বহু	>>१। अञ्चलको
৯২। পঞ্জালা (চম ভাগ)	১১৮ ৷ বিধিপ্র সা গ
৯৩ । এই (২য়ভাগ)	১১৯। ভীষণ প্ৰতিশোধ
৯৪৷ 🔄 (ঙ্গভাগ)	১২ ০। প্ৰাশী ৰ স্চ ন।
৯৫ ! নাগাল্ডমের অভিনয়	>२५। यक्षणकी
ə७। শ্ৰোমোহন-গীতাব লী	১২২। গতি
১৭। হিন্দু আচায়-ব্যবস্থা	প্রদান্তা—শ্রীধৃক বাইমোহন বরাট
৯৮। হুলী ন	১२०। (अरुग्ड)
প্রদান ব্রহ্মচারী গণেক্রশথ	১২৪। শুএকাদশ্ব বা ভক্তিবিশু
৯৯ ৷ বীরবাণী	প্ৰদাত!—শ্ৰীৰুক সভীপচন্ত্ৰ চৌধুৰী
১০০ ৷ কেববাণী	३२६ । উদ্ধৰ-সংবাদ
১০১ ৷ পাণিনির ৰহান্তাব্য	১২৬। দরণ দলীত বা ছারগোনিয়ন শিক্ষা,
ঞাধাতা—প্রীপুক্ত কিরণটাদ দরবেশ	১ম ভাগ
>•२। यन्त्रिय	১২৭। টা, ২ৰ্ডাগ
১০৩া - জীহরিদীদারদান্ত-দিন্ধ (১ন ভাগ)	প্রদাত্য— শ্রীবৃক্ত রঙ্গনীকার দক্ষিদার
১•৪। ঐ (২য় ভাগ)	১২৮। সরন বোটকবিচার-শিকা
প্রদাতা-শ্রীযুক্ত দলিভকুমার বন্যোপাধার	১২৯। পাস্থা, রখ ও চিন্নবৌ ৰন লাভে র
২-৫। কপানকুওলাত্ত্ব	সহজ উপায়
- আহাতা শ্ৰীবুক্ত রায় বহিনচক্ত নিত্র বাহাছ্র	১৩০। কোটবছতা ও ভাহার প্রতিকার
>+e। हो वद	১০১ ৷ সাংস্তকণ সমুদ্ধে বৈজ্ঞানিক
ঞ্জনতা জ্রীকুক পশিওচন্দ্র নিত্র	य ९कि (श्र ९
३०९। नोगवर् ग न	थनाका—धिवुक कामीवृष्य सूर्यायायाह
১০৮। ধৰীৰ ভগৰিনী	১৩২। সভী স্থকক্সা

œ	ৰাভা—জীযুক্ত শি, এন, 📰	268.1	বন্ধীয় পণ্ডিত ৰাডিয় কৰ্মী
2001	দেশের গান	>6% [চাব্দেলী, (১ম বশু)
1 80¢	चर्छन	54+ I	গোনার কেশ, (১ম ৭৩)
206.1	দতী প্ৰশক্তি	2021	গৰ্শা
70#	নিঝ'র	2451	বিংশ শ ভাশীর কুনকে ত্র
2041	কাকলী	2201	कमना
2061	দ্নরামকাহিনী	248	পাগল হরনাণ, (১ম, ২ম, ৩ম ও ৪ব
2091	মোহিনী মায়া		পত্ত)
58+1	শাধানীভিবিজ্ঞান, (১ম পাঠ)	42	গতা—শ্ৰীষ্ক গোৰাৰী শশিভূৰণ
2821	বিধবা দৰ্শনে ও পুনভূ		वटन्सा भारतीय
>8 > 1	মহারাজা গোবি শ্বলাল আর বাহা -	>5t 1	धर्षद्व, उषरोप
	ছবের শীবনচরিত	565 [💂 রাধাতৰ-রাসলীলা
2801	পঞ্চৰ ক্ষেত্ৰ বিংহাদৰাবোহণ	>591	নাধক-সহচর
2881		>6¥	হেম্বটপ্র
	আণের টান	269.1	কুম্বলীন-পুরস্বার, (১২শ ও ১৩শ)
	नस्य-मञ्ज	1486	5 कन्।
	াডাপ্রিযুক্ত বিজ্ঞাস 💷	5151	রম্বোদ্ধর
1886	শ্ৰীৰৎ শঙ্কৰাচাৰ্য্য ও শঙ্কর-দৰ্শন,	>121	অমৃতা
	(১ম ভাগ)	প্র	াতা—শ্ৰীৰুক্ত নিৰ্মাণশিৰ ৰস্যোপাধাৰ
281-1	ঐ (২য় ভাগ)		বীরপূকা
	গতা—শ্রীবৃক্ত বিষয়কৃষ্ণ বস্ত্		বাহাছ্য
	বায়ন্ত্ৰাসন (১ ৭৬)	टांप	ত্য
	ভি-ত্ৰিক ইপুত্ৰণ দে মজুমৰাই	516 [
	মার্কিণ্যাত্রা ভা—শ্রীসুক্ত রাময়াশাল খোব	œi n	াভা—জীযুক চণ্ডীৰাদ মুৰোপাধ্যার
	विश्वनंकि		মূহ্না
	রবীন্ত-দাহিছ্যে ভারতের বাণী	cet v	াঙা—-শ্ৰীযুক্ত নিতাসকপ ব্ৰহ্ চাৰী
3601	A		শ্ৰীকণুৱানীভচিত্তামণি
>69 1	শাগণ		াত্রীশ্রীষতী অহরণা দেবী
) 4e [নিশ্ৰো ৰাভিশ্ব কৰ্ম্থবীয়		শোষাপুত্ৰ
5461	ৰ্ভযান লগৎ; (১৭ ডাগ)		गांश्रहका
341)	ঐ (২ৰ ভাগ)		মন্ত্রপক্তি

প্রকাতা---শ্রীকুজ শেখ মৌদনী অনিকৃত্তিন ২০১। মুরল সুরলী ১৮১। हेननामी बङ्ख २०२। औषन वीमा ১৮২। ইম্বামী সভ্যতা ১৮৩ ৷ আস্থ বাহালা প্ৰস প্রশাতা---ইীযুক্ত হার বিনোদ্বিহারী বস্তু ১৮৪। মহাভারত, আদিপর্ক २०४। इक्टिबिड ১৮৫। রামারণ, গম কাথ ১৮৬ | দিগুদর্শন, এতিলে ১৮১৮, সার্চ্চ ১৮১৯ ं खदः **बार्**शांद्री २५२०, खी**टांग** २५२० २०७। मःगावहका ১৮৭। লিপিমালা ১৮৮ ৷ ভারতবর্ষের ইংলভীরদের রাজবিধনণ ২০৮। ভোৰারই প্রদারী--- শ্রীমতী অমুরপা দেবী ২-১: গোধন ১৮৯ ঃ জ্যোতিঃ হারা ১৯०। हिन्दमीन ३३३। हेन्द्रा প্রদাতা-শ্রীবৃক্ত সিদ্ধের বিংহ >>२। (माम्डाम, रव १५७ ২১১ । শতাগল প্রদাতা--- জীপুক্ত বিজয়মাধৰ মিত্র ১৯३। (क्रांबर প্রদাতা-শ্রীমুক্ত পুলিমবিহারী 📖 ১৯৪। ছালাম্যী ১৯৪। বসজোৎসব ১৯৬। অহিংলাদিগ্দর্শন २>४। भद्रग-ब्रह्मा প্রধাতা--- প্রাযুক্ত অতুলক্ষ গোৰামী ১৯৭ ৷ প্রীয়ম্ভগবদগীতা প্রদাতা--- শ্রীবৃক্ত অভয়কুমার শ্রহ ১৯৮। सोन्पर्गडप বাৰাঙা--- প্ৰযুক্ত ব্ৰদেৱসাথ बरकाशिक्षाव **১৯৯। नुत्रकारा**न

২ 🛊 🕒 😘 🖛 🗎 পঞ্চ

প্রদান্তা---শীবুক চাক্ষচন্ত্র বন্যোপাধ্যার ২০৩1 হোজের কুল প্রদাতা-প্রীবৃক্ত বিশিম্বিহারী দেবশর্মা ২০৪। খ্রীঞ্জীতৈতন্ত্র-চরিত थाराजा-जीवुक क्षेत्राज्यस मूर्यानांशांव ২•৭: সোনার স্থপন প্রদাতা-শ্রীবৃস্ত গিরীশচন্ত্র চক্রবর্ত্তা প্রবাতা –প্রীবৃক্ত হারেক্সনাথ দত্ত **२>०। बगर्धकृत चावि**र्जान এবাতা-শ্রীপুরু শচীজনারাগণ মজুম্লার প্রদাতা--- ত্রীপুক্ত সভীশচন্ত্র বিদ্যাভূবণ ২১২। ভবভূতি 💷 তাঁহার কাব্য ২১০। আনুতব্রকাণ গুৰাতা---শ্ৰীৰক নিশিবনাথ বাৰ २>৪३ कविक्थां, (५म् ४४) ২১৬। প্রভাপাদিত্য প্ৰদাতা---প্ৰাযুক্ত দেব বেহাক্উছিন আহ্মান ২১৭। সচিত্র আরব জাতির ইতিহাস, ১ম খণ্ড के के à প্রসাতা---শ্রীমৃক্ত সভীশচন্ত্র বোর ২১৯ : চট্টপ্রামের বিবরণ্ট 🗯 ভৌগোলিক ভাগ এলভা — শ্ৰীবৃক্ত মুনীজপ্ৰসাৰ দৰ্কাধিকাৰী ্ৰাৰান্ডা---প্ৰবৃক্ত গাবধাঞ্চলাৰ ঠাতুৰ

२३०। पूत्रणी

কার্য্য-বিবরণী

উপহার দা ভা		উ শন্ত গুৰু
ीनुक प्राप्तकञ् कत विद्यकी	1 655	কালীকুত্বমাবলী
ু পারালাল লে ন	२२२ ।	ভা ৰদীপিকা (ভৈনতাগ্নালা, ২০)
 णुनिमिविष्यंत्री प्रकः 	२२० ।	শৃ পার্তিককম্
্ব প্ৰকাকচন্দ্ৰ মুখোপাধ্যাৰ	₹281	আহিকভত্বযাগা
Supdt. Govt. Printing, India	२२६।	Losa Exhibition Antiquities Coro
	२ २७ ।	nation Durbar 1911. Cotton Spining & Weaving in Indian Mills Dec. 1915.
	229	Patent Office Hand-book.
	২ ৭(ক)⊹	Cotton Spining & Weaving in Indian Mills Jany. 1916.
	२२৮ ।	Do Feb. 1916.
	549	Do March ,,
	२०० ।	Do April ,
	२०३ ।	Statistics (tables relating to Banks in India.)
	१११ ।	Annual Archeological Report 1912 to 1913.
	1001	Do Part 1st. 1913 to 1914.
	1.86.8	
	२७४ ।	Statistical Abstract of Public Health 1913-1914.
	२०७।	Indian Education in 1914-1915.
Officer in Charge, Bengal Sects. Book Depot.	२	Report on the Working of the Co- operative Societies in Bengal for 1914-15.
	₹७५	Resolution Receiving the Report on the Working of the District Boards in Bengal 1914—1915.
	409	m i Dani B i i i
	₹8+ [Supplement to the Report on Pub-
		lie Instructions 1914—15.
	₹85 <u> </u>	Notifications and Orders relating to the War in force Bengal,
	262	Annual Progress Report on Forest
		Administrations in Bongal 1914-15.

বঙ্গীয়-**সাহিত্য-প**রিষদের

	*	
	580 l	An Introduction to the Grammar of the Tibetian Language with the Texts of situp, sumtag etc.
	₹88 <u>†</u>	
	₹8€ }	75 N 1 M 1
	₹8 % j	Publications of the Department of Education 1911-15.
	2811	Proceedings of the Board of Forestry.
	1 48 4	Statistical Returns with a Brief
		Note of the Registration Dept. in Bengal 1915.
	२ह≳ [Annual Report on Royal Botanical Garden and of the Gardens in Cal-
Under Secy. to the Govt.	₹€+ [cutta and Darjeoling 1915-16. Report on the Weights & Measures
of India Commerce and Ind		Committee 1913—14.
শীবুক্ত নগেজনাথ বস্থ	4€>	A Short History of the Indian
- and a second of the	(2)	Kavusthas.
Under Secy. to the Govt of	₹#₹	
India Education Dept.		Drugs Committee Vol. I.
Î	२∉७⊹	The Second Report of the Indi-
		genous Drugs Committee.
প্ৰভাৰক সম	ার্থ ক	मश्च
क्रिक्ट्रमध्य शेरमा शांशांत्र व्याहरू	अ रामक्त	শ্ৰীৰীবনকৃষ্ণ সরকার এমৃ এ,
		র অধ্যাপক, কটক হ্যাভেন্সা কলেজ, কটক।
গ্ৰস্থৰেজনাধ গলোপাধ্যাৰ	и	শ্রীক্ষীরোণচন্ত্র দেন বি এ, পি দি এস্
	-	(छप्डी मालिक्ष्टिंह, कत्रिवपूत, मावाबीपूत्र।
		শ্ৰীধানবচন্দ্ৰ চট্টোপাখ্যাৰ
•	•	চীক্ একাউন্টান্ট, বিউনিসিণান
		করপোরেশন, রেকুন। নারবাহাত্তর শ্রীনিশিকাক কোব বি এল,
.	*	•
,		ववस्त्रातिश्क् ।
	🌲 भा	ননীয় নথাৰ নৰাবজাৰা দৈহৰ আগতাফ আলী,
		দি প্রাপেন, বঞ্জা :

थेखांवर	স্মৰ্থক	기관명
জ্রস্থরক্তনাৰ গ্রোপা ধ্যায়	। খ্রীকেসচক্র দাশগুপ্ত	শীম্বিকাচরণ লম্ভ বি এ, পি লি এস, সাব্ডিবিস্নাত অফিসার, ব্লিরহাট, ২৪ প্রগণা ৷
শ্ৰীনলিনীবন্ধন পণ্ডিভ	শীমূণালকারি খোব টি	কিলোরীমো হন ঋথ , ব্যাকর ণতীর্থ, এম্ঞ, ৭৪৮ হরিঘো রে র খ্রীট।
*	श्री कतीय प्रशा धार	শ্রীপিরি শাভ্ ষণ চট্টোপাধ্যার সাধুহাটী, বশোহর।
		শ্রীস্থরেক্তনাথ ঘোষ
	4	•
শ্ৰীবা ণীনাথ নক্ ৰী	শ্ৰীষূণালকান্তি গোষ	১৩ বস্থপাড়া লেন। গ্রীহুর্নাদাস সরকার
		৮ মহেশচন্দ্র 🚃 লেন, আলিপুর।
শীরামক্ষণ সিংহ		শ্ৰীনপেজনাথ ঘোৰ,
		৬২ বেশগেছিয়া রোড।
ী বাণীনাথ নন্দী	শ্রীষ্ণালকান্তি বোষ	শ্ৰীআগুতোৰ সুখোশাধাৰৈ বি এ,
		১ ভাঁভিবান্ধার বোড, ইটালি।
201	জীৱামকম্য বিংহ	শ্ৰীহরিদাস বিশ্বানিষি,
		৪ ওয়েগিংটন স্বোগার।
নিবিধকুমার চট্টোপাধ্যার	শ্ৰীহেসচন্ত্ৰ পাশগুৱ	ইমতিশাল কল্যোপাধ্যাৰ,
		পোঃ হাজিপুর, মত্তাকরপুর।
4		শ্ৰীঞ্চৰায়নাৰ বহু
		ওভারনিয়ার, ডিঃ বোর্ড, নঞ্জ রপুর।
e e	şi	শ্ৰীসভীন্ত্ৰনাৰ চটোপাধ্যাহ,
		য্যানেকার—কোর্ট 🗪 ওরার্ডন
		अरहेष्ट्रे , छत्रमन्त्र, यक्दरूर् त्र ।
श्रीकालो धनक वस्त्राणांश	াৰ শ্ৰীরানে অখ্যুপ র জিবেদ	্ৰীদাশর্থি ঘোৰ এখ্ এ, বি এল,
		উকীন, হৰনী কোৰ্ট, চুঁচুড়া।
*		শ্ৰীদীনদাৰ দেন বি এল,
		खेकीन, हुँ हुड़ा ।
,	•	, ज्ञेनरकञ्च उपहांदी धम् ध,
		(हेनी ः क्रम्ब, इ श्रनी ।

বঙ্গীর-দাহিত্য-পরিবদের

श्रक्ष (प्र

স মর্থ≆

113

<u> শীরামকলন নিংহ</u>

শ্রীধনস্করত্বর রায়

🗐 নপেন্দ্র লাল 🚃

হণদিরা, ছর্মাণু**আ**গবের সম্পাদক, ঢাকা।

শ্ৰীক্ষৰভাগাৰ বস্তু

ত্রীস্থেক্তনাথ কুমার ত্রী

ज्ञेकारमञ्जनाच वरमग्रानावाम

मन चानीर बार्डिंग, गांडकीयां, चूनमा ।

প্রথম মাসিক অধিবেশন

৪ঠা ভাত্ত, ২০০শ আগষ্ট, স্ববিবার, অপরাষ্ট্র ৬টা

উপহিতি---

শ্রীসূজ ভাক্তার জগদীশচক্র বহু দি এন আচ, এন্ া ডি, এন্ দি (নতাপতি) মহাবহোপাধাঃ শ্রীযুক্ত ভাক্তার দঙীশচক্র বিশ্বাকৃষণ এম এ, পি এইচ ডি

क्षितृक्क शास्त्रसन्धन्त विदिशी धन् व

- ুলিভচন্ত মিত এম্ এ
- ু ছীরেন্দ্রনাথ দত্ত বেদাক্তরন্ত,

এম্ এ, বি এল

- 🍃 নগেজনাৰ ৰত্ন প্ৰাচ্যবিভাষগাৰ্ব,
 - **শিদ্ধান্তবা**রিধি
- 🌉 ভাঃ আৰুদ গছৰ দিদিকী
- ্ল থগেজনাথ মিজ এণ্ এ
- 💂 होक्छल मिछ धन् थ, वि धन
- ্ল অসুণাচয়ণ বিভাভূবণ
- 💂 স্থানস্থার 🔳 এন্ এ, বি এন্
- ু হেমচজ দেন ওপ্ত এম্ এ
- ু চাক্তজ ভট্টাচার্য্য এম এ
- ্ৰ প্ৰবোষচন্দ্ৰ চটোপাধ্যায় এম্ এ
- ্ৰ ক্ষেচজ দাশ ধৰা এম্ এ
- ্ৰ চাক্ষটন্ত ৰন্যোপাধ্যায় বি এ
- ্ব শশি**ভূষণ নিংছ ধি** এ
- ্ব নিজেখন নিংখ বি 🔳

খ্ৰীৰুক স্থনীভিকুৰার চট্টোপাধ্যায় এন **এ**

- ্ল সপুরামাণ সক্ষমদার কাব্যতীর্থ,
 - ক্ষবিচিন্তাৰণি
- ্ৰ কৈলাসচন্ত্ৰ ক্যোডিয়াৰ্শৰ
- ্ব সাতকজি সিদ্ধান্তসূৰণ
 - ্ৰ চিভখুৎ সাভাগ বি ই
 - ্ল শুকুলাস সরকার এম্ এ
 - , লণিকাপ্ৰবাদ বন্ধ
 - 🚚 ৰভীন্তনাৰ হস্ত
 - ্ব বতীক্রনাথ নরিক
 - ্ৰামাচরণ সঞ্মলার
 - 🚅 इपीनान जिस्त्रही
 - " । भगनन मूर्याभाषाय
 - 🌲 সমুধনাৰ সাহ
 - 🍃 পুংরস্তানাথ সেন
 - 🍃 প্রভাতচন্ত্র মুখোণাধ্যার
 - 🍃 শাদৰচজ্ৰ বিজ্ঞ
 - ्र कारमक्षमाथ शाव वि ख

শ্ৰীৰ্ক গণিডমোহন পাল

- মহত্মদ এলাকুৰ আলি
- আহমদ লালী
- দংশাৰ আৰু ল লভিক্
- मारुष्यर मनित्रक्रमान
- বাণীনাৰ সন্দী
- রাজেন্তনাথ বস্থ
- ডাঃ বারিদবরণ সুথোপাধ্যার এল এম এস
- গলাধর ভট্টাচার্যা
- সভাচৰণ বস্থ এম্ এ
- মুরেশচন্দ্র দেব
- শাব্দিগাৰৰ বিশান
- ক্যোভিক্তম্ভ বোষ
- ক্ষথবিদারী 📰 চৌধুখী
- खारमञ्जनाथ मान अम् अ, वि अन
- হাজেন্দ্ৰনাথ খোৰ
- রবীক্তমাথ চক্রবর্ত্তী
- অনস্করণ ভট্টাচার্য্য
- ्र ८०महन्त्र त्वीव
- दमञ्जूक्षम जाम विवद्यास
- রাশক্ষণ সিংহ
- ক্রেজনাথ চটোপাখ্যার

- ্ৰ যুগালকান্তি হোধ
- _ কিবণচন্দ্ৰ 📖
- ्र स्टब्स्नाथं कृषात নশিনীয়ন্ত্ৰন, পঞ্চিত

গ্রীবৃক্ত মকেশর দাসওও

- সভীশচন্ত দাসপ্ৰথ
- ব্যস্তকুমার বাহ
- ্ৰ গোলাম মোডেকা
- নগৈজনাথ খোষ
- मरश्क कुमांत्र त्रांत्र रहीयूत्री
- অভুগচর চক্রবর্তা
- ্ এশচন বস
- ু ক্ষুখছু বারভাগ
- জিতেন্দ্রনাথ **মে**ন
- ু ককণাচন্ত্ৰ মকুমদার
- ু প্রভূমনাথ বন্দ্যোপাধ্যার
- ু তৈলোকানাৰ চটোপাধ্যায়
- ্ব উপে**স্তাচন্দ্র বন্দো**।পাধ্যাম এম্ এ
- ্ৰ পুলিনবিধারী দম্ভ
- _ মণীস্তাৰাধ মিজ
- _ र(वेक्क हता
- বিপিনবিহাতী বিশ্বাভূষণ
- গণিভৰোহন বদাক
- ক্ণীক্ৰক্ক ৰমু
- ভুকাণচন্ত্ৰ নিজ
- ু গিরিকাভূবণ ঘোষাক

জীবুক হার বতীক্ষনাথ চৌধুরী জীকণ্ঠ, ভক্তিভূবণ, এমু এ, বি এশু—(সম্পাদক)

আংলোচ্য বিষয়--->। পুত্তক ■ পুৰি উপভার্থাতুনাণ্ডে ভুড#তা জাপন। ২। সাংখ-🔳 সম্পাদিক্তিন। 🔍। পরিক্ষের নির্মাবিদীর ১০ (খ), ২৫, ৩৯ (অ) ও (থ), ৫৬, 4a ■ ७९ मःशुक् नित्रमेश्वनित्र गतिवर्श्वम श्व गतिवर्श्वम मद्राद्य कार्यानिर्याहक-म्यिश्वित औद्यार । 👫 আজি বংসর ২রা বৈশাৰ ভারিখে সেই বংস্তের করু কার্ব্য-নির্বাহকসমিতি গঠন 🖿 কৰ্মাধাক মিয়োগ সৰছে জীবুক কানেজনাৰ বোব বি এ মহাদরের প্রকাব। ৫। প্রাবন্ধ পঠি;—কি প্রীযুক্ত অমূলাচরণ বিশ্বাস্থ্যৰ মনাগর কর্ত্ত "১৩২২ কলান্ধের বাঞ্চালা সাচিত্যের বিবরণ" ও (খা প্রীযুক্ত স্থানিক্তার মে এম্ এ, বি এল্ মনাগর কর্ত্তক "ইউবোলীর-লিখিড প্রশিল্ড বালানা গ্রন্থ" লামক প্রবন্ধর । ৬। প্রাধান — (ফা) প্রীযুক্ত রাখানরাক্ত রাম বি এ মনাগর-প্রদক্ত ২ খানি প্রাচীন ইইক, (খা) প্রীযুক্ত রাখানরাক্ত রাম বি এ মনাগর-প্রদক্ত ২ খানি প্রোচীন ইইক ও এফটি গাল্ডব-হৈতঃ এবং (গা) প্রীযুক্ত প্রিন-বিহারী মন্ত মহালার-প্রদক্ত মধ্বামঞ্জল ১ইডে আননীত হুই বাজার বংল্ডের পুরাতন কন্তক্ত্রেল প্রথবের ভয় নাবী-স্ক্ত, নাবী-স্ক্ত, গোমুব প্রভৃতি প্রথপনি । বা লোক-প্রকাশ ;—ব্লিক-জাল রাম মনাশ্রের প্রধানক্ষরনান । ৮ । বিবিধ ।

সভার কার্যারন্তে পনিবাদের অক্সতম সংকারী স্বাপতি প্রীযুক্ত বাহেক্ষত্বনর বিবেদী বঙাপর সাহিত্য-পরিবদের পক্ষ কইন্ডে বর্ডাধার বর্ণের সভাপত ডাকার প্রীযুক্ত জগদীশচক্ত বস্থ বঙাশারকে সাদর সভাপণ ও অভার্থনা করেন। তিনি বলিলেন,—"অক্ষ বঙ্গীর-সাভিত্য-পরিষৎ কইল। ডাকার বস্থর আল জগদিখাত বৈক্ষানিক ইছার কর্নিছা। তাঁহার অভ্ত প্রতিভা, জ্ঞান ল বিক্রেপা সর্বাজনবিহিত। তাঁহাকে কর্ণিয়েরণে পাইয়া পরিষদের প্রভূত মধ্যর সাধন ক্রেনে, তরিষ্কার আরু সন্দেহ নাই। আমি বে তাঁহাকে আল অভার্থনা করিতে পাইয়াছি, ইছা আমার পক্ষে আরু সন্দেহ নাই। আমি বে তাঁহাকে আল অভার্থনা করিতে পাইয়াছি, ইছা আমার পক্ষে আরুও গৌরবের বিষয়। কেন না, আমি তাঁহার ছাত্র। এক্ষণে প্রার্থনা করি বে, ডাকার বস্থু তাঁহার অনুভ জান ও প্রতিভা পবিবদের কার্য্যে নিয়েজিত করিয়া বৃদ্ধীয়-সাহিত্য-পরিবদ্ধে দিন দিন সমুয়তির পথে চালিত করিবেল।

ভাজার প্রমৃক্ত আফ্ল সমূর সিধিকী মহাশ্য রামেক্ত বাবুর অভ্যর্থনা-প্রস্ত ও এই আন্বেদন স্থাক্তকরণে অধ্যোদন কহিলেন।

অতঃপর ভাক্রার বস্ত্র সভাপতি মহাপর বলিলেন,—আন্ধ আমার দার্জ্ঞিনিং বাইবার কথা ছিল। কিছু আমার ইন্দ্রা হইল হে, আমি একবার আপনাদের সঙ্গে দেখা করি । ইতিপুর্বের্ড কুলেই মানে দার্জ্ঞিলিং এ আমি মহামহোপাধার পান্ত্রী মহাপথের মিকট শুনিরাছিলার যে, আমাকে সাহিত্য-পবিষ্ঠের সভাপতির পদ এইদ করিতে হটবে। কিছু আমার শ্রীর জাল নহে বলিয়া আমি জাজাবের সার্টিকিকেট দিয়া লানাইসছিলার হুন, গুরুতর ভার এইণ ক্রিছে আমি অসমর্থ। অবশ্রের প্রনিলাম হে, আমার প্রতিবাদ সভ্তে আপনাধা আমাকে সভাপতিত্বে বন্ধ ক্রিয়াছেন। আমার বত দুর পালি, আমি এই কার্যা উপবৃদ্ধ হটতে চেটা করিব। শাস্ত্রী মইলের হল ত বহু পাল্ডেন ক্রিয়া ক্লান্ত ইংগ্রেন এবং সেই লাল আমাকে এই ক্লান্তর কার্যাজার প্রথম করিব। তিনি অবসর এইণ কার্যাজার প্রথম করিব। তিনি অবসর এইণ কার্যাজার প্রথম করিব। তিনি অবসর এইণ কার্যাজার উর্নিশ্বিমে আমার শক্তি

প্রথমে তিনটি বিষয়ে এই গ্লার ইয়ভি করিছে আমি ইছে। করি। একটা বিষয় আছ বুলিতেছি। আমি বিখাস করি, জয় দিনে সাহিত্য-পরিবং উচ্চ স্থাস অধিকার করিবে। হারদী বেশে বে French Academy of Literature আছে, পথিবংকৈ ভাষার ভুলা कविट्ड इहेटन। दमधानकृति माना Politionntes हिंद ও माना धर्मक पुक्रक खेवन সুধিস্কৃত্ত ভাবে সাজান আছে যে, সেখানে ক্ৰাৰেণ কৰিলে লোক মাজেইট কেমন একটা क्ष्मात कार मार्थ Academy क भी भारता अ यह एक एक मन मुख्य एक । शरित र-श्राह मार्थित दिन (मरेक्का काद कारम, (मरका जारव भारवश्यक गाँउ कृत्य करत । जरनेक अनुना किनिय এখানে আছে, বছ বড় লোকের হাতের গোলা, সামনোধন রায়ের পাগ ড়ি, বাছনের কলন हें छात्रि चानक किनिय मार्स्स, किन्ह अशाब स्विकान नाह। ध्यमन प्रतिवश्यक अमन क्षितिक ষ্ট্ৰে বে, কেই জাগিয়া স্থানিতে পাতে বে, ইণা একটি মন্ত কার্ত্তি। একটা ক্নিটি ক্রিকে ছটবে। 👫 ১৯৯ 🚃 বাবু অবনীজনাথ ঠাকুলকে ভার খিতে ইইবে। বাধানধারু Antiquity माक्काक मधक विषय व्यवस्थितम, ध्वाकारिकामसर्वे मर्भावती अञ्चिति অন্তঃক্ত ক্ষেক ক্ষকে বৃহ সাঞ্চিইবার ভার দিতে ইইবে। পারবদের সমত স্থতাস্থ চিটি জিখে জানাতে হবে বে, প্রত্যেক এক এক বন্ধুকে দিয়ে পরিবদের এক এক সেট বহ কিলেরে দেব। বল্লমতী প্রত্তি সংবাদপত্তে উপধার হিগাবে বা মত কোন উপারে প্রিধদের বইঞ্জি বেচির। ফোলতে ২০বে। এই সম্ভ বিষয় কার্য্যে আনিতে পেলে সকলকে 66%, করে কিছু কিছু টাকা বিলেই এ কাল খ্ৰিছ ধ্টাত পারে। জাতুবারী মানের মধ্যে 🔳 কাষ্ট্র। সম্পন্ন করিতে হইবে। আমি নিজে ২০০১ টাকা দিভে প্রস্তুত আছি।

ভারণর উন্নুক্ত হারেজ্বারু বলিলেন বে, পরিষদের পক্ষ হইতে কামিও ভাকার বস্থা সংশিক্ষকে বছাবদি বিভিন্ন । পরিষদের প্রাত আন্তরিক প্রছার করাই ভাকারের বাবা সংশ্বৰ ভাকার বস্থা সংশ্বৰ ভাকার বস্থা সংশ্বৰ ভাকার বস্থা সংশ্বৰ ভাকার বস্থা সংশ্বৰ কর্ণথাকের কাথ্য করিকে সন্মত ইইখাছেন। পরিষদের সকল দিকে তার দৃষ্টি বাড়িভেছে। তিনি বৈজ্ঞানিক ত আছেনই, কিন্তা তিনি এক্জন বড় শিল্লী (Artist) তাই প্রথমেই দেই দিকেই দৃষ্টি প'ডেছে। পরিষদের গার্থে বাত কাঠা ক্ষার্থি পর্যাহর, ভালাত আন্তর্মান কানা কিন্তু মাল্লী ক্ষার্থিক বাহাতে ক্রিক্ত পাবে, ভালাত ক্রিক্ত পাবের মধ্যে পরিষদ্ধ বাহাতে ঠিকু থাকে, তাহার চেটা করিতে হইবে। আসামা নতেম্বর মধ্যে পরিষদ্ধ বাহাতে ব্যবহার ক্রিক্ত পাবে, ভালার চেটা করিতে হইবে। আমান বিক্তা করিকে হুইবে। আমান বিক্তা করিকে হুইবে। আমান বিক্তা করিকে হুইবে। আমান বিক্তা করিকে ক্রিকার বিক্তানিক শিকাপুলি বিভরণ করিবেন। প্রথেব বিধার এই, ক্রেক জন এই ভার এইক ক্রেছেল।

শাসনা বাৰ শীস শভা ভাগে কাইবেৰ বুলিয়া প্ৰথমেই শোক প্ৰকাশের প্ৰভাৱ উত্থাপিত স্ট্ৰ। তীমুক প্ৰেপ্তনাথ মিজ মহাশৱ বুলিলেন যে, বুগাল ইণিকলাল হাল মহাশুল লামায়

অলিকা পৰিশিক্ত একৰ হইল।

বিশেষ পরিচিত ছিলেন। তিনি বেশ স্থেপথক ছিলেন। নব্যজারত, ভারতবর্গ, মানদী প্রভৃতি মাসিক পজে ভারার নিদর্শন আছে। সর্বভাল নাগিকিচানের জন্ত ভারার করি—"বলান-সাহিত্যের অকৃতিম সেবক, পরলোকগভ প্রসিক্তান ছারের স্তৃত্তে বল্পীন-সাহিত্য-পরিবং গভীর পোক প্রকাশ করিতেছেন। তিনি নানা সক্ষর্ভ লিবিয়া ভা ভারতের অভান্ত ভাবা হইতে আভরণ আহরণ করিয়া বছভাষাকে সাজাইতে চেটা করিতেছিলেন। ভারার মৃত্যুতে বছভাষা কতিপ্রত হইলেন। ভারার নাক-বল্পত প্রত্ত প্রতিভ্রাক স্থাপার হার বি এ মহাশ্যুকে পরিবং স্থ্বেদ্যা ভাগন করিতেছেন।"

প্রচাৰিভাবহার্ণৰ নগেন্দ্র বাবু এই প্রস্তাব সমর্থন কবিলেন। মহামহোপাধার ভাজার বীযুক্ত সভীশচক্ত বিশ্বাস্থ্য মহাশয় ই প্রস্তাব অসুমোধনকরে বলিলেন,— রদিকলাশ বাব্ সংশ্বত কলেজের শিক্ষক ছিলেন। ছাত্রদের মধ্যে তাঁহার অভ্যক্ত প্রশংসার কথা শুনিতে পাই। ভিনি সরণ ও উন্নার ছিলেন। তিনি প্রশেষক ছিলেন। উত্ত উক্ত বিষয়ে তাঁহার কল্লনাশক্তি ছিল। তিনি বহুতর প্রবন্ধ রচনা করিয়াছেন। মৃত্যুর মাসেও তাঁহার কলেক প্রবন্ধ
মাসিক পঞ্জিবাতে প্রস্থানিত ইইয়াছে। তাঁহার কর্মকারন আদেশিক্রপ।

সকলে হঙামমান হট্যা এই অস্তাব গ্রহণ করিলেন।

স্তামেশ্র থাবু এই সমরে "সঙ্গীত-রাগক্ষক্রম"—বাহার বিভীয় ও তৃতীয় থণ্ড সন্তাভি প্রকাশিক হইরাছে, ভাষা সভান্ত সকলকে দেখাইয়া বিশিলেন যে, এই প্রকের প্রথম থণ্ড প্রথমে সহামহোপাহ্যার শীবুজ হরপ্রমান শাস্ত্রী মহাশর পরিষৎকে নান করেন। তথান আমরা আনিতাম যে, এই প্রকে এক বণ্ডই আছে। পরে লাগগোলার রাজা বাহার্যের পূজকাগর হতে আমরা এই পুরুক্তবানির ১ম, ২য়, ৩য় বণ্ড একরে পাই। তাঁহারই ইচ্ছামত ও তাঁহার আহ্নতুল্যে এই পুরুক্তবা হালার কপি করিয়া ছাপা হইরাছে। এই প্রকেরখিন ১ বংসর পূর্বে রাজা রাখাকান্ত দেব বাহার্যের শক্ষর্যাভ্রম সমন্ত্র রচিত হইনাছিল; এই ক্সেই বোধ হয়, ইহার নাম 'স্বাভ্রমণক্ষজ্ঞম" হইরাছিল: ইহার রচিত হইনাছিল; এই ক্সেই বোধ হয়, ইহার নাম 'স্বাভ্রমণক্ষজ্ঞম" হইরাছিল: ইহার রচিত হইনাছিল; এই ক্সেই বোধ হয়, ইহার নাম 'স্বাভ্রমণক্ষজ্ঞম" হইরাছিল: ইহার রচিতার নাম ৮ক্ষামন্ত্র বাধেনের রাগ্রমারর। লালগোলার রাজা বাহার্য নিক্ষেত্র আলি সভা সাছিত্য-পরিষথকে দান করিরাছেন। তবে কানাইরাছেন, আর বাক্ষা ১০০ শত প্রেম্বর্য স্বাভিত্য-পরিষথকে দান করিরাছেন। তবে কানাইরাছেন যে, ইহার বিক্রমণক্ষ আর্থি সাহাব্যে এই পুরুক্তের বর্ত্তমান করা হর্ত্য। প্রাচ্যাক্রমণ্ডন নামা পণ্ডিভগন্ত ক্রেমান সংস্করণ সম্পাদন ক্রিরাছেন। ভানিভেছি, ইহার ৪র্থ ভাগও নাকি আছে।

শীবুক গণিতচক্ত মিক মহাশর শালগোগার রাজা বাহাছরের ব্যক্তার শাল গন্তবারের প্রথমের প্রথমের প্রথমের প্রথমের করিলেন এবং ঐ স্বেপ্ত সম্পাদনের মাল নগেজবার্কে এবং এই পরিবদের ক্ষম্ভ ঐ মালসংগ্রহ করিবার নিমিন্ত রামেক্সবার্কে বিশেষভাবে ধক্তবার কানটোগন এবং প্রথমের করিলেন, সভাপতি স্থাক্ষের স্বাক্তরে এই ধন্তবান-প্রকার কানগোগার রাজা বাহাছরের নিক্ট প্রেরিড ইইবে।

এই স্বরে অন্তত্ম স্থকারী সভাপতি জীবুক রামেক্সফুল্ব ঝিবেদী বংশিষকে সভাপতির আয়ন প্রদান করিয়া ডাঃ বহু মহাশার অনিবাধী কারণবলতঃ গভাস্থল ত্যাপ করিবেন। তংপরে নিয়লিখিত গ্রহণ্ডলির উপহারলাভূগণকে বঞ্চবাদ প্রদান করা তুইল ■ নিয়লিখিত স্বক্ষণণ নুড্যানিস্কাচিত চইলের। । পরিশিষ্ট প্রইবা)

শ্রীযুক্ত হেমচন্দ্র দাশগুপ্ত মহাশয় নিয়মালীর স্পাবঞ্চকীয় পরিবর্ত্তমগুলি প্রথাব করিলেম এবং সর্বহন্দ্রভিক্রমে ঐ পাববর্ত্তনগুলি গৃহীত হইল।

- ১৩ (খ) দ্রইব্য ঃ—সম্ভাগণ ক্লিকাড়া ও মুদ্ধল ছই শ্রেণীতে বিভক্ত হইবেন। বাঁহারা সাধারণতঃ কলিকাড়ার অবস্থান করেন, জাঁহারা কলিকাড়া শ্রেণীভূক ■ বাঁহারা মুদ্ধণে অবস্থান করেন, জাঁহারা মুদ্ধণ শ্রেণীভূক হইবেন।
- (৫৯) দ্রইবা :—এই নিয়মান্তর্গত মকল্পনের অধিবাদী অর্থে বাঁগরা সাধারণতঃ মক্ষণে পাবেনা, তাঁহাদিগতে বৃদ্ধিতে হইবে। বান্ধব, আছাবন সমস্ত, অধাপক সমস্ত, মৌলবী সমস্ত, সহারত সমস্ত ও বিশিষ্ট সমস্তগণের মধ্যে বাঁহারা সাধারণতঃ মক্ষণে অবহান করেনা, তাঁহারাও এই উদ্দেশ্য সাধনের পক্ষে মক্ষণের অধিবাদী ব্রিমা গণা হইবেনা (২৫) কার্য্যনির্কাহক স্মিতি কর্ত্তক ক্রাধ্যক্ষরপে নির্কাচিত হইতে পারিবেন লা।
- (৩৯) (ক) বে কেই ধে কোন প্রভাব পরিষদের বিষেচনার্থ প্রেরণ করিবেন, সাধারণতঃ সে প্রভাব সর্বাত্যে কার্য্য-নির্বাহক সমিভিরে অধিবেশনে আলোচিত হইবে। কাহারও কোন প্রভাব প্রথমে কার্য্য-নির্বাহক-সমিভিতে আলোচিত না হইলে, পরিবদের কোন অধিবেশনে ভংগদের কোন বিদ্বান্ত হইতে পারিবে না।
- থে) কার্য্য-নির্বাহক-স্মিতির সভোর অথবা সন্নির্দের কোন সম্বন্ধের কোন প্রথাবের আলোচনার কার্য্য-নির্বাহক-স্মিতি যে নীমাংলা করিবেন, তাহা যদি প্রস্থাবকের বনঃপূত না হয়, তাহা হইলে তাহার অন্তরোধক্রমে নেই প্রান্তাব কার্য্য-নির্বাহক-স্মিতি উপযুক্ত স্মরের মধ্যে পরিষ্ণের কোন পরবর্তী আধ্যমেনের আলোচ্য বিষ্ণান্ত্রক করিয়া দিবেন।
- (৫৩) নিয়মে মাাসক ও বিশেষ অধিবেশনের পর "বার্ষিক অধিবেশন" বোপ করিতে ছববে।
- (৬৭) (ক) বিশেষ প্রয়োজনীয় ক্লে, কাধ্য-নির্কাছক-স্নিতির অস্থ্যতি কইবার পূর্বে ে টাকা পর্যান্ত সম্পালক নিজে ব্যায় করিতে পারিবেন, কিন্ত উজ্জ সভার অধ্যবহিত পরবর্ত্তী অধিবেশনে তালা অস্থ্যমাদনার্ব উপস্থিত করিবেন।

ত্রীবৃক্ত জানচন্দ্র ঘোষ বি ■ হিণাব-শরিদর্শক মহালার প্রথাব করিলেন, প্রতি বৎসর ২রা বৈশাধ ভারিখে সেই বংগরের অভ কার্য্য-নির্বাহ-সমিতির সঠন ■ কর্ম্মাণ নিরোগ হউক। ভাঃ গছ্ব এই প্রতাবের সম্বন্ধ করিলেন ৷ রামেশ্রধাৰু এই প্রভাব সম্পর্কে এক সংশোধিত প্রথাব করিলেন ৷ ভাঁচার প্রভাব এই—প্রতি বৈশাধ মানেন মধ্যে বাহাতে পূর্ববর্তী বংস্তের বার্হিক অধিবেশনের অক্টান হুইভে পারে, ইহার সম্বন্ধে বিচার ভ সিছান্ত করিবার আল ভার্য্য- নির্মাহক সমিভিকে অন্তর্গধ করা হউক। কার্য্য-নির্মাধক-সমিভিক্ক আগাসী অধিবেশনে আশোচনার ■ এচ প্রভাব প্রেচিত ইউক।

তৎপত্তে ত্রীবৃক্ত শুক্রণাস সরকার এছ আ মহাশর স্ববং উপছিত হইয়া ছইখানি প্রাচীন ইটক এবং বেখান হচতে উহা সংগৃহীত হইয়াছে, ভগাকার সংক্রির বিবরণ এবং গুলানকার শিশালিশির শাস বাহা ভিনি উচায় কহিরছেল, ভাছা পাঠ করিলেনঃ সভাপতি মহাশর গুক্রণাস বাবুকে হক্তবাল বিশেননঃ প্রীবৃক্ত রাখালরার রায় বি এ-প্রারম্ভ একথানি প্রচান ইটক ও একটি প্রক্রের-তৈতা প্রদার্শিত হইল। ত্রীবৃক্ত প্রসিন্ধিহায়ী লড় মহাশর ভীর্ভ ভাগাল মনুয়ামগুল হটুভে সংগৃহীত প্রস্তারের কতকভাল ভার নারীহন্ত, নারীমুখ ও গোমুখ প্রভৃতি প্রকর্ণন করেলেন। ভাছাকে বথাবিধি বল্পনান করেলেন। ব্রহ্মান্থিও বাধালা সাহিত্যের বিবরণ নামক প্রবন্ধ ও প্রীবৃক্ত প্রশানকুমার লে, এমু এ, বি এল্ মহাশ্রের শহ ইরোপীর-নিবিভ প্রাচীনভার মৃত্রিত বাখালা গ্রহণ নামক প্রবন্ধ শতি হাগাত বছিল।

শীৰুক নগেলাথ বন্ধ মহাৰত কৰিব সভাপতি মহাৰেতে বক্তাৰ কৰিবাৰ পাছ সভাভল ভটৰ।

শ্রীকিরণচন্দ্র দত্ত সংকারী সম্পাহত। শ্রী দারণাচরণ মিত্র দভাপতি।

পরিশিক্ট

১। সভাপতি মহাশংকর প্রাক্ষাবাত্ত্বারে নিয়্রিবিত বাজিপ্রণ নিয়্রিবিত টাকা দিতে
বা সংগ্রহ করিয়া দিতে খীকুত ক্ইয়াছেন।

(ক) ভা	কার অগনীশচন্দ্র বন্ধ	300
(4) 勤	কু শশিতচন্দ্ৰ মিক	210
(গ)	ু নিগনীব্যন পণ্ডিড	210
(T)	, চাক্চক বন্দ্যোপাধার	30.1
(*)	ু হীয়েক্তনাৰ গম্ভ	300
(F)	ু কিরণ্ডের দত্ত	300
(E)	_ হেনচন্দ্ৰ দাল ধৰ্ম	300
(4)	भार्यक्ष्यक्र जित्वते	3004
(ৰ)	🌲 💷 বভাস্কনাথ ভৌধুন্নী	3.17
(a)	, वांबाहत्रव सक्ष्यमात	300/
(4)	ু অবনীস্তনাৰ ঠাকুর	>
(\$)	"	30.84
(*)	ু আত্রনাথ ঠাতুর	***
		3000/

২ ৷ স্তিশহারপ্রাপ্ত পৃত্তক

	উপহান্ধাতা		4.e.≠
ত্রীবৃক্ত	डेट्स +६न्त्र देगव्य	H-1	হাক্স-ডহন্ত
	বোগেন্দ্রনাথ শুপ্ত	₹1	অৰ্ক্ ন
26	চিত্তস্থ বাভাগ	91	মহাভারত (থ তি ত m কি ম)
		6 1	বিভাহনত (থঙিত 🖿 ছিই)
	ङ्कव्य व्यवस्थान	£ 1	উৎস
		6.1	মেদিনীপুর সাহিত্য-সমাক্ষেম্ব 💷 বাবিক কবি-
		C	বেশনের অভার্থনা-সমিভির স্ভাশতির অভিত্যিশ
	ভাঃ ভুকুষার পাকড়াশী	11	কণিকাতা-ইই্ছ (এয় ৬ ৪খ ৭খ)
		W 1	ল্লটি লিখন
		۱ ۾	সভীপ্ৰশক্তি খা ভৰ্শদান্তলি
		5+1	দাৰ্শ্ভিলিঙ প্ৰবাসীর পত্ত
		>> F	ব্দহ-গ্ৰো
		58.1	বিশ্বাগয়ে ধর্ম লিক্ষা
		201	ষ্ঠ্যর পর জীবন
		381	জ্বক[শ-গ্রু]
	कीरवामध्यमाम विश्वावरमान	54+	আহেরিয়ঃ
		341	引有發音
	কিতীশ্ৰনাথ ঠাতুৰ	וויכ	লা ণের কথা
		2×1	🖷 পিতা নোংগি
		25.1	<u> ই</u> , ভগবৎকৰা
		₹• [বিকা-সমঞাও ক্রিপিকা
নী, বুৰ	p রাক্ষরি গোপাশচন্ত চৌৰুরী	453	নীলাচনে 🖺 জ্ঞীজগৰাধ ও জ্ঞীজীলোৱাক
	Officer in Charge,	स्रा	Report on Emigration from the
Ben	gal Secretariat, Book De	pot.	Port of Calcults to the British and
	Superintendent	₹७	Foriego Colonies. Monchly Statistics of Cotton Spin-
(G vi, Printing, India.	401	ning and Weaving in Indian Mills,
			May 1916,
	Officer in Charge.	98 1	Annual Report on the Police Admi-
Ben	gal Secretariat, Book De	put	nistration of the Town of Calcutta and its Suburbs 1915.
			BUA Its DUDUIDS TATO.

Supdt. Govt. Printing, Burma. Report of the SuperIntendent,

Arolecological Survey, Burms for the

year ending 31st March, 1916.

Officer in Charge Bengal Secretariat Book-Depot.

26 t Report on the Maritime Trade of Bengal for the official year 1915-16.

Registrar Calcutta University

34 | Calentta University Minutes, Fart VIII. 1913.

Re | Do. Part VI. 1915.

ইঃৰুক্ত বাব

before the introduction of English Education.

Supdt. Govt. Printing, India

Patent Office Journal, April to June, 1916.

Officer in Charge, Bengal Secretariat Book Depot. Report on the Administration of the Salt Department in Bengal during the year 1915-16.

পৃথি

ঞীবুক্ত ব্দস্তৰশ্বন বাহ

১ ৷ কৈমিনি ভারত (বিশ্ব অভিরাম)

২। গীত-গোবিন্দ (গিরিধর দাস)

৩-৪। গীত-গোবিন্দ (পিরিধারী দাস)

প্রথমকনন সিংহ জীহেমচন্দ্র ঘোষ শীবসক্ষরকান রাথ বিষ্ণ্যক্ত ১২ কালু খোষের কোন, ফলিকান্তা :

শীক্ষাকনন সিংহ জীহেমচন্দ্র ঘোষ শিক্ষাকার ঘোষ বি এল্
উন্ধান, থাইগঞ্জ, দিনান্দের :
শীক্ষাকিতথেকেন পাল শীক্ষাকার ক্ষার শীক্ষাকার শ্রাম শীক্ষাকার ঘোষ বি এন্
হঙ্গ শার নার্কু লার হোড় :
শীক্ষাকেন্দ্র ভিবেদী শীক্ষাকার শীক্ষাকার শীক্ষাকার বিহারী খোষ এন্ এ, বি এন্
চাল্ডা বাগান, কলিকান্ডা ৷

২৩শ বাৰ্ষিক, দিতীয় মাদিক অধিবেশন

২৫**শে ভাতু, ১৩২৩, ১**০ই সেপ্টেম্বর, হনিবার, অপরা**ত্র** গুটা

উপাহতি

শ্রীযুক্ত সারদাচয়ণ মিত্র এম্ এ, বি এল্ (সভাপতি)

নছানছোপায়ার ত্রীযুক্ত হরপ্রসাদ শাস্ত্রী,

সি আই ই, এম্ এ

প্ৰীৰুঞ্জ কুমাৰ শৰৎকুমাৰ রায় এম্ এ

- ু বামের হুকর ত্রিবেদী এম্ এ
- 💂 নিবারণচন্দ্র ঘটক বি 🥸
- ্লু নিৰিলনাৰ বাব বি এল্
- ু হেমেক্সপ্রনাম ঘোষ বি এ
- _ স্বাহবচন্দ্র নিজ
- 🚅 স্বাধারমৰ বিক্বাভূষণ
- 🍃 ডা: আবহুব পদুর নিদিকী
- 🎍 अकानल अधि।
- ু কলিভযোত্ন চট্টোপাধার
- 💂 श्रुनिसर्विश्वी पञ्
- 🧧 হেমচন্ত্ৰ ঘোষ
- ु साक्षांबर्गहन्त्र वटन्नग्रामाधास
- 🎍 উষাচরণ ঘোষ
- 🍙 প্ৰমৰ্মাণ মিজ
- 🚅 নিমাইকিলোর গোস্বামী
- 🍃 সভীক্রনেবক নন্দী
- 🔔 কেন্দ্ৰনাথ বল্যোপাৰ্যায় কাৰ্যকণ্ঠ
- ্ব শরকন্ত সিংহ
- ্ৰ জ্যোতিৰ্মন চটোপাধাৰ
- ্ৰ পাত্তিসাধন বিখাস

শীবুক ভাবাপ্রগর ঘোষ বিভাবিনোদ, বি 🔳

- ,, প্রভাতচক্র মুখোপাধ্যায়
- ু গীতেজনাৰ মিজ
- ু ব্দশ্রজন বাধ বি**ব্ধর্**ভ
- 🍃 ভারা প্রসন্ন ভট্টাচার্য্য
- 💄 শীক্তমোহন বহু
- ু বাণীনাথ নকী
- ্ল শিথিভূষণ সম্কার
- "বলিড**জে মি**ল এম্এ
- ু ডাঃ উপে**ন্দ্রনাথ** চক্রব**র্দ্তা এশ্ এশ্ এশ্**
- ্ৰ নগেন্দ্ৰনাথ বহু প্ৰাচাৰি**ভামহাৰ্**ব
- ু অধিকাচৰণ রায় এম্ ৩, বি এল্
 - ভাঃ প্রমথনাথ বন্দ্যোপাখ্যার

ध्वम् ध्व, छि व्यम् मि

- ্ৰমুলাচরণ বিভাভূৰণ
- " স্থীলকুমার দে এম্ এ, বি এক্
- " কেশবচন্ত্ৰ শুপ্ৰ এম্ এ, বি এল্
- 💂 হেমচন্দ্ৰ দাশ ঋগু এম্ 📑
- " বভীল্লমোহন রার
- ্বংমশচজামজুমনার অম্ এ
- " বাধানদান বক্ষোপাধাৰ অমৃ এ
- " मनाधरमांश्य वञ्च अम् अ
 - ্বামক্ষল সিংহ

শ্ৰীবৃক্ত হাম বতীপ্ৰনাথ চৌধুৰী শ্ৰীকণ্ঠ, এম্ এ, বি এল্ (সম্পাদক)

- " क्रिश्रेग्डस प्रखः
- ্বৰালকান্তি লোব
- 🚅 সলিনীরঞ্জন পঞ্জিত:

সহকারী সম্পাদকগণ।

আলোচ্য বিষয় 🚈 🤊 । পভ অধিবেশনের কার্য্যবিষয়ণ পাঠ। ২় পুরুক 🍙 পুৰি উপহারহাত্মগণকে কৃতজ্ঞতা আপেন। ৩। সংগারগ-সম্বত নির্মাচন। প্রবন্ধ-পাঠ:--(ক) **শ্রীকুক্ত অমূল্য**চরণ বিভা**ত্বণ মহাশ**য় কর্তৃক "১৩১২ বঙ্গান্থের বাদ্দীলা সাহিত্যের বিবরণ" ও (ব) তীৰুক স্থাপকুষার দে এম্ এ, বি এল সহাদর কর্ত্তক "ইউরোপীর-লিখিত প্রাচীনতম ৰুদ্ৰিত বালালা প্ৰছ" নাৰক অধ্যন্ত্ৰ। ৫। চিত্ৰপ্ৰতিটা--- জীবুক প্ৰভাতকুষাৰ মুৰো-भाषात्र महाभन्न क्षेत्रक क्षेत्रीह क्षेत्रहरू मूर्याभाषात्र महाभाषात्र विवा । ६। भारू-अन्तर--(ফ) লকানারারণ রার অম্ অ, (খ) ভূষণচন্দ্র মুখোপাধারে বিএপ**ু, (গ) বহিসচন্দ্র মান, (খ)** হেমেল্রমোর্ম বর্ম 🔳 (৪) স্তুমন্তর মুখোণাধ্যার মহাশ্রগণের প্রলোক্সমনে। 🤨 বিবিধ।

জীয়ুক্ত স্ভাপতি মহানয় উপস্থিত হইতে না পানায় অঞ্জন সহকায়ী সভাপতি জীযুক্ত मोद्रशंक्त्रन सिव सहाभद्र मधानिष्ठत चामन शहन करिरमन ।

- ১। অক্সন্তম সহকারী সম্পাদক ত্রীযুক্ত কিরপচন্দ্র মতাশ্ব গত ২ংশ বর্ষের চতুর্থ বিলের অধিবেশম ও বাবিংশ বার্ষিক অধিবেশন এবং বর্তমান বর্ষের প্রথম মাসিক অধি-বেশনসমূহের কার্য্য-বিহরণ পাঠ করিলে কার্য্য-বিবরণগুলি গুলীত ইইল।
 - श्वित्राणिक भूक्षरका भहा ब्रह्माकुल्लाक स्क्रुवान असाम कन्ना स्टेन,—

छ ल्हा ब्रुपा	51		

역명후

ঞীপুক্ত কির্পচন্দ্র দর

-)। देकनामवासिनोद शिक्तिम शर्माम क्यांथान
- ২। বৌবাৰ
- ৩। গোকুল-লীলা
- ৪। ওইকোওয়ার নাটক
- c। इत्य-मह्त्रो (कांवा)
- । ভারতে রাজপুরু।
- 91 몇억
- ৮ ৷ উপহার-কৃত্ম
- ৯। শরংকুষারী
- > 이 키웨이 무용됐
- ५) । कामन-वानाः
- ১২। ভালবারা
- ১৩**। বসস্ক**কুমারী
- नद्यसभाषांत्रम् बाब्रहोशुबी

গ্ৰীমুক্ত থেবেজবিকা বহু

- ১৫। ক্লিবগেট্র
- ১৬। সমাক-চিত্র
- ১৭: জীবনের শ্বর ও ভাহার অভিব্যক্তি

১৪। শ্রীমন্তগ্রদ্পীতা, ৪র্ব ভাগ

উপহারদাতা		ग् रकं
শ্ৰীপুক বিশাৰ্থভূমার মৃত্যদার	১৮। ভারতবর্ষের ইভি হাস, প্রথম ৭ও	
ু স্বামী সভ্যানন্দ	\$8.1	অস্তৃত ৰোগদাধন
 স্বেককুমার বস্থ 	3+	ৰকুল
	85.1	খ্যুন্তি
্ব পোপেক্সফ শিত্ত	₹₹ 1	মহাত্রা ভূলদীদানয়ত রামারণ, বানকাও
🚅 শলিভমোহন চট্টোপাধাৰ	२७	इ नना, २ था नि
	₹8	অনিলাৰাৰর-বদ্ধা, ২ থানি
্ধ কির ণ চন্দ্র দ ন্ধ	₹₹∣	Select Revelation of St. Mechtild. The Isle of Wright. The All-Indian Ayurvedic Conference, Seventh Session—Madra—1915.
Secretary, Smithsonian Institution	२७ ।	Report on Wind Tunnel experiments in Acrodynamics. Cambrian Geology and Paleontology. The Sense Organs on the Mouthparts of the Honey Bee.
Superintendent, Hindu and Buddhist Monuments, Northern Circle.	21(Annual Progress Report of the Superintendent, Hindu and Buddhist Monuments, Northern Circle, for the year ending 31st March 1915.
Curator, Peshawar Museum.	र⊭।	Annual Report of the Archæological Survey of India, Frontier Circle for 1915—16.
Director, Geological Survey of India.	२२	Records of the Geological Survey of India, Vol. XLVI pt. 2, 1916.
Superintendent, Govt. Printing, India.	۱۰۰	Monthly Statistics of Cotton Spin- bing and Weaving in Indian Mills, June 1916.
Officer in charge, Bengal Secretariat, Book Dep	93 po\$₁	Fifty-fourth Annual Report of the Government Cinchona Plantation and Factory in Bengal, for the year 1915—16. Annual Returns of the Lunatic Asylum in Bengal, with brief notes for the year 1915.

ত। নিয়শিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ ষধারীতি প্রকাবিত

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ মাধারণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিপ্র বিশ্বরণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ মাধারণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ মাধারণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ মাধারণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিগণ মাধারণ

 নির্মিবিত ব্যক্তিবিত ব্যক্তিপ্র বিশ্বরিত ব্যক্তিবিত বিশ্বরিত বিশ্বরিত ব্যক্তিবিত বিশ্বরি

to della secolo		
बा स्त्रावक	সমৰ্থক	সৃষ্প্ত
🕮 নশিনীরঞ্জন পশুভ	শ্ৰীস্ণালকান্তি থোষ	बीरगारशसङ्ख्य मिळ धन् ब, वि धन्,
		৫।> নুরম্খ্যুদ স্বক্তি দেন।
ż		গ্রিপণিভূষণ সিংহ বি এ,
		৮ পটলভান্দা ব্রীট ।
	15	ইংজ্যাতিকন্ত্র বিবা এম্ ৩, বি এম্,
		■ গীনবন্ধু গোন।
	,10	শ্ৰীবিপিনবিহামী মুখোপাগায়,
	হেড ক্লাৰ্ক, হ	রলকোর্ড স্মিথ এণ্ড কোং, ১ মি <mark>শন সো</mark> 🕕
		জী দক্ষকুমার রাব,
	itet s	র্জ বৃক গোগাইটি , ■ সামাচরণ দে ইটি ।
*	জীবাণীনাথ নকী	শ্রীশরচন্ত্র দেব এম এ,
		ভগৰ হলিছোৰ ব্লীট।
শ্ৰীকিবপচন্দ্ৰ দত্ত	শ্ৰীক্ষেত্ৰনাথ কুমার	🖺 হুত্রগাল যোগ,
		 দীভানাৰ বেভে, দিবলা।
	শ্ৰীমূপালকান্তি হোব	শ্ৰীক্ষেত্ৰকাথ কলোপাধাৰ,
		১২ গোঁসাই গলি, বা গবালা র।
ডাঃ আৰহ্দ গহুর সিদ্দিকী	ত্রীকি রগচন্দ্র দত্ত	মূলী দেশ আবৰত তহিম,
	'মোসলেম-হিটেডই	ী'র সম্পাদক, ২১ আণ্টনিবাগান লেন।
_		মুন্দী আক্তল হাকিম,
•	-	
		ডা: আবহুয়া আৰ্মায়ুৰ বোহাওয়াৰি
•		এ, এল এল ডি, পি এইচ ডি, ব্যারিষ্টার,
	`	৩ ওবেলেস্লি ১ম খেল ៖
		त्योगरी यनित्र-छेक् स्थान,
•	-	২৯ ক্ষপার সাকু লার বোভ।
	_	মুন্দী মোহাত্মৰ মোক্তেদ হক,
*	•	भाविश्व, नहीता ।
	_	(मोनवी त्यत्रांकक्ति भारत्यह _े
-	•	तम्योम, भूगकाश्वात, अवश्वा
		demand Kantons saxa

	*13/11	14.11
প্ৰস্তাৰ্ভ	স বর্তক	-
ডাঃ আস্চ গরুর নিদিকী	শ্ৰীকিরণচন্দ্র দত্ত	মুকী আঞ্সার্ছিন আহবদ,
		২১ জান্টনিবাগান শেন।
₩	•	মূ ন্সী মোহান্ত্ৰ ,
	;	দা হাবাব্ র কাছারী, বাহ্ডিয়া, ২ ৪ প্রপ্থা।
	*	ভাঞ্জার আৰছ্ণ হাদি খাঁ,
	পুটিয়ান নিশনারী গ	ডাক্তার, মাথাভাকা, বাছড়িয়া, २৪ গরগণ।।
	-	মৌল্যী মোহাত্মন কে চান,
		ক ্একজাহিনাস আফিস, এক্স্পেনডিচার
	সেন্	দান, ই. বি, রেলওয়ে, ও কর্না ঘাটা খ্রীট।
•	69	रिमप्रम स्वाहान्त्रम हेन्याहेन,
		। নর্ব শিরাশৃদ্ধ রোভ।
क्रीशीरप्रसङ्घक रङ्ग	গ্রীকেশবচন্দ্র শাধ	भै चं व्यवस्थाति ।
		bi> বাহিৰ মি র্জাপু র বো ড়।
এপ্রবোধচন্ত্র চট্টোপাধ্যার	-	শ্ৰীব্ৰেড সৰকাৰ এৰ্ এ,
		১২।১৩এ বদুরীদা স টেম্পন <u>ই</u>টি।
.10		শীলাড্লিমোহন মিতা এম্ এ
	বলবাদী কলেজের অধ্যাপক, ৯১এ হোরলকুড়িয়া গলি।	
শ্ৰীৰামকমল সিংহ	औरसम्बद्ध त्यांव	ञैविवनम् बट्यानाधाव,
		বেলভালা, মুরশিবাবাদ।
এ মৃণাগকাতি বোৰ		बीरीयञ्चहन्त्र होश्री,
		৪৬ বলরাম বছর লেন, ভবানীপুর।
a		শ্ৰীবামিশীকান্ত দোম,
		যরিগেট, গোপ্তানালা, দিলী।
	•	শ্রীপ্রতাসচক্র মুখোপাধার, দাহিত্যভূষণ,
		৩১ রাশ্বচন্ত্র সেন দেন ।
শ্ৰীবিলোগবিহারী বন্ধ	-	श्रिक्शिक्ष्म मस्मान,
		भवांशांकी, विमारेश्य, गर्भाव्य ।
я		শীকুমারশন্বর রার,
		৪৪ ইউরোপিয়ান এসাইলাম লেন।
জীললিডনোহন পাল	व्यवागिमांच मनी	-শ্রীবোগেল্ডনাথ দেম,
		১৫৬।২ জণায় সাসুলার হোছ।

শ্ৰমাণ-	সমৰ্থক	-
শ্ৰীমগেশ্ৰনাথ খন্ত্	জীবিরণচন্দ্র হত্ত	औरेनध्वन ठ ऋ वरम्यानाशात्र,
		শ্বিদাস, গাভপুর, বীরভূষ।
শ্ৰীৰভীশ্ৰমো হন ৱাৰ	*	শীমনোরঞ্জন খোৰ বি এল,
		জন্মকোর্টের উব্দিল, কামার্নগর, চাকা 🖯
36		শ্ৰীৰাজেক্ৰস্থিশার সেন,
		শ ষিদার, সেন বাড়ী, বর্মনসিং হ।
खेबारम ङ इ म्बब बिरवरी	এবরখ্ মোহন বহু	গ্ৰীশতীন্ত্ৰনাথ মুখোণাখ্যাৰ এম্ এ, বি এল,
		রিপণ কলেকের অধ্যাপক।
এইতন্তর হার		শ্ৰীবোগেল্পগাল চৌধুৰী অম্ এ, বি এল,
		ক্ষিণার, হুগণি।
শ্ৰীক্ৰাভচন্ত্ৰ মুখোপাধ্যাহ	टी रागिमाथ मनी	শ্রীচরণ চন্দ্র,
		৮ গোমাবাগান বেন।

প্রবিদ্ধ প্রিক্তি সভাপতি প্রীপুক্ত সার্লাচন্ত্রণ বিষ্ণ সহশির বলিলেন,—"অম্ন্য বাবুর প্রবিদ্ধ স্থালাচনার সভাসত পরিবৎ দারী নহেন। এই স্থালাচনার অন্যান্ত্র পরিবৎ দারী নহেন। এই স্থালাচনার অন্যান্ত্র স্থালাচনা করার স্থান বাবি আন বাবি ক্তিই ক্তান্ত্রের স্থিতি আন বহি। আন বহি ক্তেই ক্তান্তরের স্থিতি আন বহি। আন বহি ক্তেই ক্তান্তরের, প্রত্য ক্তিবিদ্ধান এই প্রবিদ্ধেন স্থালাচনা করিবে পারেন। আম্লা বার্লিলের এক্সা প্রবিদ্ধের উপস্কৃত্য বিবেছনা

করিরা পাঠের বাবস্থা করিতে পরি। কিন্তু আগরা সকলেই এই বিবরে নিক্ষাই এক্ষত বে, অমূল্য বাবুকে তাঁহার বহু পরিপ্রমে লিখিত প্রবর্গের জন্ত ধন্যবাদ আনাইতেছি।

- ॥ (খ)। শীবৃদ্ধ স্থীলকুষার দে এম্ এ, বি এল্ মহাশ্রের লিখিত "ইউবোপীরলিখিত আচীনতম সৃদ্রিত বাজলা গ্রহ" নামক আছে সমহাভাবে পঠিত হইল না। আবদ্ধটিতে
 আনেক নৃতন বিষয় আছে এবং ভাল করিয়া ভনা আবঞ্জ বোধে উহা বারাক্তরে পঠিত
 হইবে বলিয়া উহার পাঠ গুলিত রহিল।
- ব। চিত্র-প্রতিষ্ঠা—শ্রীষুক্ত প্রভাতচন্দ্র মুখেগাধার মহালর প্রায়ত পরাষ্ট্রনজন্তর মুখেগাধার মহালরে চিত্র-প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে পরিবদের এই অধিবেশনে জিরস্থানিন কালাকে প্রীযুক্ত বতীক্রনাথ কর মহালর লিখিও একথানি সংক্রিপ্র জীবনী পুরিকাকারে বিভরিত ক্টরাছিল। ইহাতে ক্ষরি ক্টাবনীর সহিত ওাহার বহুসাহিংছা ক্রিছেরও কিন্তিৎ পরিচর আছে। উঠা হইতে আহঙা ভানিতে গারি বে, "মহাভারত নাট্যকার" নামক বিরাট নাট্যবাহ "দোনার স্থানন" আ "তোটারই" নামক গীতিনাট্য ও নাট্কা প্রভৃতি রচরিতা, সলীভক্ষ ও কুল্লিভ-লান-রচরিতা প্রকৃত্তক মুখেগাগার মহালর অকালে ৪০ বংগর ব্যবেস ১৩০৮ সালে ১০ই অপ্রভারণ ভারিখে দেহভাগে করেন। গান-রচনার প্রাকৃত্তকের বিশেষ ক্রতিম ছিল, আর ওাহার শ্রেষ্ঠ কীর্তি বিরাট মহাভারতথানিকে নাটকালারে প্রথিত করা। কিন্তু ভ্রথের বিষর, আটারলগর্মের মধ্যে ২৬১৭ পৃথ্যা কেবল্যান্ত আদি ও সভাপর্মার নাট্যে পরিবত করিয়া গিরাছেন। ওাহার পিতার নাম জীযুক্ত পূর্ণচন্দ্র মুখোগারার। কার্যুক্ত প্রাতিশ্ব করেন। গান্তবির স্থানারার মধ্যের সংক্রা প্রায়ত্ত করেন। গান্তবির স্থানারার মধ্যক প্রতিদ্রুদ্ধ স্থানারার। কার্যুক্ত প্রতিশ্ব করেন। গান্তবির নাম জীযুক্ত পূর্ণচন্দ্র মুখোগারার। কার্যুক্ত প্রবিত্র করেন। গান্তবির নাম জীযুক্ত পূর্ণচন্দ্র মুখোগারার। কার্যুক্ত স্থানার অন্তর্গন করেন।

অই উপলক্ষে ঐতিহাদিক উপজান-রচরিতা ত্রীবৃক্ত হরিসাধন ব্রেপাধ্যার মহাপরের বিধিত একটি শুক্ত প্রবাদ ত্রিক্ত সভীক্ত সেবক ননী বহাপর কর্ত্তক পঠিত হয়। হরিসাধন বাবু কিথিবাছেন বে, বালাকাল হইভেই প্রক্তরের ক্ষিতার প্রতি অহলাগ ছিল। রামান্ত্রপ, মহাতারত প্রভৃতি এই সমূল তিনি পড়িতে ভাল বাদিতেন। ১৪ বংশর বর্ষে তিনি শুজারত প্রভৃতি এই সমূল তিনি পড়িতে ভাল বাদিতেন। ১৪ বংশর বর্ষে তিনি শুজারা বালাগতাতে প্রভৃতি এই সমূল তিনি পড়িতে ভাল বাদিতেন। তিনি শিতার একমাত্র পুত্র আ আকরা বিলাগতোতে পালিত; কিন্ত বরিজের প্রতি তাহার পুর দ্বা ছিল। প্রকৃত্তরে একমাত্র প্রকৃত্তর আকরা হিলাগ বিলাগতাতে, নিজে গালি বছলা হিলাগ প্রকৃত্তর একমাত্র ক্ষিয়া, নিজেই ভাহা গাছিয়া প্রাত্তর্বের আনন্দ বর্জন করিতেন। মহাভারত নাট্যকারা তাহার অতুলনীর কীন্তি। মহাভারত মাট্যকার্য বাভীত তাহার রচিত আর গ্রহণানি নাটিকা ক্লাফিক রল্পকে অন্ধিনীত হইয়ছিল—"লোনার অপন্ত ও ত্রোমারই"। প্রেমাঞ্চানি অভিনীত্ত হইয়ছিল—শ্বেনার স্থানার ক্ষিত্র বিলি ব্রিষ্টানের শালারার স্থানিক ব্রুলার প্রবাদ্ধ আন্তর্বনার আন্তর্বাণ আনহানার স্থানিক ব্রুলার স্থানিক আনহানার স্থানিক স্থানিক আনহানার অনহানার স্থানিক ব্রুলার স্থানিক আনহানার স্থানিক সাহানার স্থানিক আনহানার পরিবর্তনের কল্প আনশ্রক সীতগুলি রচনা করিয়া ব্যেন।

হলসাহিত্যের জন্ত প্রাণপাক পরিশ্রম করিরা সিরাছেন। আজ পরিবৎ-পশ্লিমে **উাহার** যে ছতি-রক্ষা করা ছইতেছে, ইছা বঙুই আন্দেশ্য ≡ সৌধ্যের বিষয়।

অত:পর দলীতক প্রীযুক্ত শরংচন্দ্র দিংহ মহাশহ বলিলেন বৈ, "প্রছ্মচন্দ্রকে আমি বিশেষ ভাবে জানিভান। ভিনি বাজালা দাহিত্যের বঙ্গ-বাড়ী-প্রস্কত-কারকের মধ্যে একজন। তিনি দলীত-শালে বিশেষক ছিলেন। ছেলেবেলা থেকেই তিনি গান বাঁথিতেন। ভাঁছারা তিন প্রক্ষে দলীতক্ষ। তাঁহার মহাভারত নাট্যকাষ্যথানি যথি কেই পূর্ণ করেন, ভাহা হুইলে উহা বঞ্চাষায় এক অপুর্বা গামগ্রী হয়।"

ভংপরে ত্রীবৃক্ত সমাধ্যোহন বন্ধ এম্ এ মহালয় বলিকো,—"আমি অকুলচম্বের সহিও বিশেষভাবে পরিচিত ছিলাম। তাঁহার সদীভাগ্রহাগ অসাধারণ ছিল, সদীভ-রচনারও তাঁহার বিশেষ স্থাতিৰ ছিল। তাঁহার রচিত গীতভালিতেই তাহার বথেষ্ট পরিচয় পাওয়া বার । তাঁহার স্থাতি বণার্বভাবে রক্ষা করিতে ক্টলে তাঁহার শ্রেষ্ঠ কীর্ত্তি "মহাভারত নাট্যকাবাশ্বানি সম্পূর্ণ করিতে হয়।"

অতঃপর সভাপতি শ্রীযুক্ত সারলাচরণ মিত্র মহাশার অস্থাতি প্রস্কৃতিকের প্রতিকৃতির আবিরণ উল্লোচন করিলেন। সভাত্ সকলে দকার্যনান হইবা অসীম কবির প্রতি সম্বান প্রস্থান করিলেন।

৬। তৎপরে (ক) ৮গলানারারণ রার এম্ এ, (খ) ৮তৃবণচক্স মুখোণাখার বি এল্,
(গ) ৮বিছমটক্স রার, (খ) ৮টেংমক্রমোধন বস্থ নামধের সমস্তগণের ছা (■) খাতনামা
সাহিত্যিক ৮তৃবনচক্র সুখোণাখার মহাশরের মৃত্যুতে বক্ষীর-সাহিত্য পরিষৎ ক্ষতিগ্রন্থ
ধ্বরা শোক-প্রকাশ করিকেন। স্থির ধ্বন বে, প্রকোকগত ব্যক্তিপ্রশের আশ্বীবগণের
নিকট পরিবদের সমবেধনা স্চক পত্র প্রেরিত হইবে।

তংগরে ত্রীযুক্ত ভাক্তার আবছুল গড়ুর সিদ্ধিকী মহালয় সভাপতি ম**হালয়কে বছরাখ** স্থানাইলে সভাভক হয়।

শ্রীকিরণচন্দ্র দন্ত সহকারী সম্পাদক। শ্রীসারদাচরণ মিত্র সভাপতি।

২৩শ বাৰ্ষিক, তৃতীয় মাগিক অধিবেশন

৮ই आधित २०२०, २०१म त्मरल्डेचत्र, त्रविदान्न, 📟 🖦

উপস্থিতি---

শ্ৰীৰুক্ত সারদাচরণ মিত্র এম্ এ, ৰ এল্ (সভাগতি)

শ্ৰীসুক্ত নিৰারণচন্ত্র ঘটক বি এল

- ্লু রাম সাংখ্য মুর্গাচলণ চক্রবর্কী এল দি ই
- ্ব হীরেজনার্থ 📺 বেশস্করত্ব,

धार्यं धा, दि धान

, छोः ध्रमधनाच राष्ट्राभाषात अम् ध,

ভি এদ দি (বাগৰিটার)

ভাঃ অনুকৃগচন্দ্র সরকার এম্ এ, জি ১১ইছ চ

পি এইচ্ভি

- , বদেশ*চন্তা* ৰ**জু**মদাৰ এৰ্ এ
- , বাধাণদাস বল্যোপাধ্যার এম্ এ
- " : হেসচন্দ্ৰ দা**গওও** এম্ এ
- _ ছবিহাৰ চটোপাধ্যাৰ
- " অৰুণ্যচৰণ বিভাভ্ৰণ
- ব্দস্তর্শন রার বিহ্নরভ
- , শক্ষাস সরকার এস্ এ
- , नदबक्षक्षांत्र वस्वकांत्र
- ু বভীন্তনাৰ 🔤
- 🚅 বোনেন্দ্রকুষার হাসঞ্চাবি 🔳
- 🍃 খুনীভিকুষার চট্টোপাথার এম্ এ
- ु इनोनक्सांत (१ अन् ब, रि बन
- ্ৰ সাদকুষার চক্রবর্মী
- ্ৰ পঞ্চানন মুখোপাথাৰি
- ু ভাষা ভগ্নচাৰ্যা এশ্ এ
- ু বিষ্ণুচরণ ভট্টাচার্ব্য
- 💂 আনেদ্রখোহন হাস
- ু বভীক্ষবোহন বাৰ

क्षेत्रक कारमक्षरभारन गाम अम् अ, वि अम

- ব্ৰজেক্ত্ৰণৰ বাৰ
- वीध्वक्षनाथ वस्यामाधाव
- ... वाहरुशादिन्स दाव
- ্ৰীকীৰ কাৰাতীৰ্থ
- ু ক্যোতিৰচক্ত যোৰ
- ্ৰ ভানেজনাথ বিজ
- ু বসস্তকুষার রায়
- ্ লণিডমোহৰ পাল
- ্ব হিৰেন্দ্ৰনাথ সিংহ ্ব হিমাংক্তণেশ্ব লাহিড়ী
- _ জিতেজনাৰ চৌধুরী
- ু ভৱেশচন্ত্ৰ চক্ৰবৰ্তী
- ু সপুরানাথ বস্থ
- ু স্থারস্তনাথ ভটাচার্য
- ্ৰ বুজনীকান্ত পাল
- ু গোপালচক্ত ভট্টাচার্ব্য
- ু নশীস্ত্রনাথ ভট্টাচার্য্য
- ু অখিনীভূষার যোগ
- ু স্বামক্ষণ সিংহ
- 🧸 জগৰৰ হালহার
- ্ব প্রভাতকুমার মূৰোপাধ্যার
- 🚅 ভূবেৰচক্ৰ মুখোগাখ্যান্ত
- 🎍 পাহালাল দাস
- ্ ভারাঞ্চনর ভট্টাচার্য্য
- 🦼 ভ্ৰাকুষাৰ পাগ

শ্ৰীৰুক্ত উপেন্দ্ৰমাথ উপাধ্যার

্ শ্রীকুজ অনাধনাথ মুখোণাগ্যার ভোগানাথ কোঁচ

দেবেজনাথ বোৰ

ত্ৰীযুক্ত মুণালকান্তি ছোৰ

- _ কিরণচপ্র দক্ত
- ্ব হাংক্তনাৰ কুমার
- নলিমীর#ম পঞ্চিত

সহকানী সম্পাদক্ষৰ।

আলোচা বিষয়—১। গত অধিবেশনের কার্চ্য বিষয়ণ গাঠ। ২। পুজক ও পূথিউপহার-হাতৃগণকে স্বতক্ষতা আগন। ৩। সাধারণ আলা নির্মানে । ৪। প্রবন্ধ-গাঠ—
(ক) প্রীষ্ক্ত হাণীপকুষার আ এম্ এ, বি এক্ মনাপর কর্তৃক "ইউবোপীয়-লিখিত প্রাচীনত্র
মুজিত বালালা গ্রন্থ," (খ) অধ্যাপক প্রীয়ক্ত হানীতিকুষার চটোপাধ্যার এম্ আ মহাল্যের
স্কুপার শাবের অর্থনের ও বালালা উচ্চায়ণ-তক্ষ্মারক প্রবন্ধর। ৫। বিবিষ্ধা

শাসতৰ সহকারী সভাপতি ত্রীয়ক সার্যাচরণ মিল্ল এম্ এ, বি এল মহালয় সভাপতির আসম প্রহণ করিলেন।

- >। (ক) সভাপতি মহাশবের আহ্বানে ঐীর্জ ক্শীলভ্মার 📺 এম্ এ, বি এল মহাশ্র *ইউবোণীয়-লিখিত প্রাচীনতম মুক্তিত বাজালা গ্রন্থ মামক প্রবন্ধ পাঠ করিলেন ।
- (৩) অধ্যাপক শীৰ্ক স্থীতিকুমার চটোপাধারে এগ্ এ মহাশ্য "কুপার শাছের অৰ্ডেন ল বাগালা উচ্চাংশভৰ" নামক প্রবঙ্গ পাঠ কবিলেন।

সভাপতি মহাশন বলিশেন—"অবৈদ্ধ-লেওক্তর তাঁহাদের গবেষণা ছ পরিশ্রনের জয় স্কলেরই ধছবাদার্হ । উপস্থিত ভদ্র বংগাদেরগণ প্রবন্ধের আলোচনা কলন।"

পতিত প্রীয়ক অনুগান্তরণ বোদ বিভাত্বণ মহাপন্ন বলিলেন—"কুপার শান্তের অর্থন্ডের" পুক্তক প্রকাশের কাল-সবদ্ধে স্থাতি বাবু বে ১৭০৪ খুং নির্পণ করিবাছেন, ভাষা ঠিক স্থাটান বলিলা বোধ হয় না। প্রকের টাইটেল পূচা পাঙ্যা বান না বলিলা, উলার প্রকাশকার ঠিক নির্দাণিক হওয়া কঠিন। আমার ধারণা, এই পুত্ত লখানি ১৭০৪ খুং রচিত হইয়া থাকিলেও উহার প্রকাশকার ১৭৪০ খুং। ১৭০২ খুং ২৮শে আগত্ত হারিলে Father Frey Manoel da Assumpção নামক চাকার নিকটবর্তা ভাগরাল নগরীর এককন পর্কাশীর Augustinian বিশ্বালী বক্তালা । পূট্ গীরু ভাষার প্রকাশির খুলীর ধর্মমন্তের ক্ষোলকখনছলে সংক্ষিপ্রায় রচনা করেন। ভিনি ইলার নাম মেন "Compendio dos Misterios da Fee, ordenandeom lingua Bengulla"। পুত্তকথানির আভোক ক্ষোভালে "Cathocismo da Doutrina Christaa" লিখিত আছে। এই প্রয়খনির বাব ইলাল আছু ১৭৪০ খ্রীরাজে নিস্কাশ হলতে প্রভাশিত কর। প্রস্থিত বাব ক্ষাণ্ডালি

আছে। প্রকণানির বাব দিকের পূঠার রোমান অকরে বাদালা এবং দকিব থিকের পূঠার ভাষার পর্কুনীল অনুবাদ আছে। এই পুরাজ সহছে বিশেব বিভূত বিবরণ—Bengal Past and Present 1914. No 17, pp 40-63 পূচার আছে। ১০০৭ খৃঃ স্প্রাচ্চ সিনাতার Xavier লিখিত "Catecismo de Doctrina" নামক একখানি মুন্তীর ধর্মমতের পুরুক বোরা হইতে প্রকাশিত হয়। উদ্বিধ সাহত Father Mancel এর এই পুরুকের কারার কিছু স্পাদের কিন্তু বিচারাধীন। এই পুরুকের কারার সহিত চাকা অঞ্চলের কারার বিভিন্ত ক্ষিণ আছে। তবে এ কেলার কোন্ অংশের সহিত কিক মেলে, ভাষা বলা ধার না। প্রবন্ধ-লেণক্ষর আমানের স্কলরেই বিশেষ ব্যবাদের পাত্র।"

ত্রীযুক্ত বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধ বিশ্ব প্রকের টাইটেল পেজ লা থাজিলেও বধন উৎসর্গ-পৃষ্ঠার (Dedication) ১৭০৪ খা বিশিত আছে, তথন অমৃত্য বাবু ১৭৪০ খা পৃত্তকের প্রকাশকাল ববিরা কেন নির্মণ করিতেছেন, তাহা জাল বুরা গেল না। Grierson লাহেব কর্ত্বক উল্লিখিত ঐ সম্বন্ধীয় প্রকেশানি সম্পূর্ণ বিভিন্ন বলিয়া বােধ হয়। জাহা আ কথা বলা বায় ধে, ঢাকার ভাওয়াণ নস্বীতে পর্তুপান্ধ সীর্জন আছে—প্রকের ভারা ঐ অঞ্চলেরই বলিয়া বিশেব বুরা বার।"

শ্রীকৃত্ধ স্থারেশ্রনাথ কুমার মহাশার বলিলেন—"পুতকের Dedication পূচার অন্থান করিবার সময় আদি প্রবন্ধ-লেগকের সলে ছিলাম। উহাতে ১৭৩৪ সালই আছে। Xavier রচিত ঐ সম্বন্ধীর পুতক্থানি পর্জনীয় ভাষার লিখিত। উহা বাসালা নহে।"

সভাপতি জীবুক সার্ঘাচরণ মিত্র মহাশ্র বলিলেন,—"এই প্রবন্ধবরের আনোচা বিবরের আমি কিছুই জানি না। আমি এ বিবরের মতায়ত প্রকাশ করিতে অধিকারী নহি। তবে ভাষার আমা মেটার্টি এই বলা বাইতে পারে বে, উহা ভাতরাল অঞ্চলেরই ভাষা। ঐ অঞ্চলে অনেক পর্কুগীল বাব করিছা। ভাগারা অনেক দেশীর লোককে Baptised করিছা। ঐ খালে পর্কুগীলদের অনেক ভূ-সম্পত্তি আছে। ভাগারাকের রাজার ইজা ছিল, ঐ সক্স সম্পত্তি মৌরুলী গ্রহণ করেন। আমে সেই জল্ল ঐ বিষয়ের কালল-প্রের আইন স্থকে আলোচনা ক্রিরাছিলান। উহা হইতে আনেতে পারি বে, পর্কুগীলেরা ই প্রবেশ আপন ভাষা চালাইবার বিশেষ চেটা করিয়াছিল। এগখনে ব্যক্তি প্রমাণ্ড পারেরা বিবর্গ প্রাণ্ড বারাণ বা

"असमन देवेरपाणीवत्रण कांगा-नवर्ष अवस्थि Character कांगाईरक देख्यू क । Roman Character कांगाईरक अथनत विस्त्य दिवेश कांग्रह ।

"Phonetical ইভিনাৰ আৰু । কিন্তু ব্যক্তানা দেশে ভালা ক্ৰণ্ডাই ভালাৰ ।
ক্ষাৰণ, আভি বিভাগ ক্ষাৰণ কৰে কেই। কৰা উভিড বা ভালা।

ত্ৰিবছনেশক আনাদের বিশেষ বছৰাবাৰ্ছ। তবে এই দকৰ প্ৰবন্ধ প্ৰশাণিত হইবাৰ গৱই আলোচনার ছবিধা হয়।"

- ২। ডংপরে অন্তত্ম সহকারী সম্পাদক ত্রীবৃক্ত বিরণ্ডপ্ত া বহাশর সভাগ সোচনার্থ বিলিশেন, আ (ক) কার্য্য-নির্কাছক-সমিতি ছির করিবাছেন বে, "বিগত বার্থিক অধিবেশনে চিত্রশালার প্রাথাবিত অধ্যক্ষ অধ্যাপক জীবুক নীসমণী চক্রবর্ত্তা এব্ আ বহাশর ঐ পর প্রহণ করিতে অধ্যক্ষত হওয়ার ঐ স্থানে জীবুক রমেশ্চন্তা মন্ত্র্যণার মহাশর নির্কাচিত হউন।"
- (খ) স্থার কার্যানির্বাহক-সমিতির অস্ততম সভ্য শ্রীমুক্ত রুমেশ্চস্ত্র মন্ত্রদার মহাশবের স্থান পরিবর্ত্তনে পুরু হওমার ঐ স্থানে শ্রীযুক্ত হরিদাস চটোপান্যার মহাশর নির্বাচিত হউন।
- ৩। তৎপত্নে বিপ্ৰক মাসিক অধিবেশনের কার্যাবিষরণ জীহুক্ত দ্বাধানহাস বন্দ্যোগাধ্যার এম এ মহান্দ্রের প্রক্রাবে পঠিত বলিয়া গুহীত হইন।
- ৪। নির্নিধিত ব্যক্তিগণ বধারীতি প্রভাবিত ও সমর্থিত হইবার পর সম্ভারণে নির্বাচিত হইবেন।—

निकाष्टिक रुश्यन ।—		
वाष्ट्रां रक	अपर्यक	ৰ্ডৰ ≡
শীক্ষালীভূষণ মুখোপাব্যায়	ত্ৰীস্থরেক্তনাথ কুনার	জীগোবিশহরি দাস, ক্রমিদার,
, ,		২০ গোপীমোহন বসাকের লেন, টাকা।
গাঃ আবহুল গড়ুর লিখিকী	শ্ৰীৰূণাগৰান্তি ৰোৰ	ञ्चिनद्रक्षत्व दश्,
		C/০ শ্রীসতীশ চন্দ্র খোৰ,
		🕳 গিন্টন্ ট্লীটু, কলিকাডা।
		যৌগবী মোহাত্মৰ ইয়াসিৰ সাহেৰ,
		উविन, रईशनी
	•	ৰুন্ণী আৰহন নতিক,
	C/o ¢	गौनवी त्याच्यान देवानिन केकिन, वर्षयाम ।
		योगवी समझिक चार्चम शास्त्र,
		উকীৰ, বৰ্দ্ধান।
. *	•	যৌগৰী কাৰী নামপ্ৰক আমির,
		ৰোক্তার, বর্জ ঘা ন (
ব্রীক্রেজনাথ কুমার		B. Krishnappa Esq
		Hon. Secretary, Karnateka
		Sahibya Parishad, Bangalore.
क्षीत्रायकवन निरम्	व्यटस्माज्य त्यांय	জীণীদেশন্তর সন্মুখনার অস্ এ,
	শ্বা	া, আয়, ইন্টটিউপনের এধান শিক্ষক,
		যা টভার, চেট্রার চ

কাৰ্য্য-বিবর

व्यक्षांत्रक मन्दर्क		নূতৰ সদক্ত	
🗷 সুনীৰ কুমাৰ 📰	গ্ৰহুয়েন্দ্ৰনাথ কুমা	র প্রীক্ষতাশচন্ত দেন আই দি এস,	
•		Asst. Collector, Dharwar,	
		Bombay Presidency.	
		শ্রীবোগেশচন্দ্র সেন,	
_		৮ কুমারটুলী লেন ।	
		তীহণীরকুমার হাবদার শাই গি এব্,	
		Asat. Collector, Sahora,	
		Bombay Presidency.	
	10	জীখণেক্তত্বৰ বার এম্ ৩, বি এম্,	
		হাইকোটের উক্ লি, ২০ বীজন ই টি।	
জ্ঞীৰোপাৰচন্দ্ৰ চক্ৰবৰ্তী		জীচন কুমার ভট্টাচার্য্য,	
		কাইটাইল পোঃ, কামালপুর ধান,	
		ভাষা কেপুয়া, ময়মনসিংহ।	
ডাঃ আবহুল গদুর দিছিকী		शिक्षेत्राहत्रण नाम,	
	-	২৮ কানাইলাল ধর লেন।	
		ঐভূপেন্দ্ৰক ঞ্চ পোৰ, ত মিধাৰ,	
		🚃 পাপুরিষা ঘাটা ব্রীট।	
		জ্ঞীনিশাৰ্মাণ চটোপাধ্যাদ,	
		ইটালি ঃ	
	***	ভা: প্রত্তুলভক্ত সরকার এব্ এ,	
		পি এইচ ভি, অধ্যাপক, গ্ৰেগিডেলা কলেছ।	
শ্ৰীসাৱহাচয়ৰ বিজ		বাৰ সাহেৰ শ্ৰীছ্ৰ্মীচন্ত্ৰণ চক্ৰখন্তী,	
4		এলু সি ই ৩।১ হবলান মিল্ল ট্রীট।	
क्षेत्ररम्हळ म्बूयरांव		উপুৰ্ণচন্দ্ৰ সেন এম্ এ, অধ্যাপক,	
		বছবানী কলেক, ২৪।২ শাঁখারীপাড়া রোভ।	
		अविवनक् रांच प्रदेशभाषान,	
		১০২ ব্রিশ সুথার্কি রোভ ৷	
এ রাজকুমার চলেবর্জী	ঐকিবশচন 📰	ঞ্জীরম্বভাস সেন,	
		৮∙ লোমার লা হু লাম লো জ ।	
		পঞ্চিত ঐতারকেশর পলোগানার,	
		🔤 শীভায়াৰ জাৰ হীট।	

বলীয়-সাহিত্য-পরিবদৈর

প্ৰকাৰক	संबर्गक	न्डम 💷
শ্ৰীকিরণচন্ত্র দত্ত্ব	শীসুধানকাজি ঘোষ	क्षिष्ट्रभन्न पूचात यक्ष अम् अ, वि अम्,
		🐠 সিক্ষায়ৰাপান ঠ্ৰীট 🕴
		ভাকার বি, গাসুগী এগ্ বি,
		২৭৫ রাজা রাজবলত ইটি।
•	3 †	ভাকার প্রীষ্টীক্রনাথ বস্থ,
		শানা বস্থ দেন, স্পামবালার।
		क्रीत्रवी टाङ्क वि ख
		১৯ নীলমণি বিজ ট্রাট, বব্দিপাড়া।
	-	শ্ৰীউণেজনাথ ধহু,
	p	১৬২I১ অপার চিৎপুর রো ড।
	P	শ্ৰীক্ষনাথনাথ সুৰোপাধ্যায়,
		<- यात्रयां कात्र ड ींछे ।
	-	ঞ্জিরকচ ত্র গলো শাখ্যার বি এ,
	ৰ পা	রন্টেডেন্ট, ভাষৰাজার বিভাষাগর স্থুণ,
		২ ৫ বহুপাড়া লেম ৷
		এইপ্রত্যাপ দে,
		৬১ ৰাগৰাঞ্চাব 🎫 ।
*	*	শ্ৰীভাগাধৰ দল্লিক এন্ এন্সি,
		ব ন্ধপাড়া দে ন।
	•	জ্বীপুৰেন্তলাৰ বোৰ,
	नगरमञ्जास, स	ৰোমোহৰ খিছেটার, ১৪ বস্থাড়া কেন।
•		শ্ৰীকাণ্ডভোৰ বন্দ্যোপাধ্যাৰ আৰু এ,
	·	किः नारेखत्री, २० श्रांको शास्त्रकक होते।
•	, 9	ক্ষেত্ৰাহন ৰক্ষ্যোপাধ্যাগ এন্ এ, বি এন
		ा श्रीको प्रोक्षण 💹 ।
•		ভাঃ 🔤 এন্ কাজিগাল, এক্ বি,
		= विव পের।
		क्षिपाक्षमाध पश्चः छेकीम,
		॥ সোৰ্গ্বল দাস দেখা।
	² #	विव, क्यांबिहेश,
		৫১।২ রাবকার 📺 ঠীট।

जिलारवांबास्य हर्देशभाशांब

🖹 কিরণচন্দ্র দত্ত ঐশ্বানম কাষ্যস্থতিতীর্থ আধান শভিত, মানিগঞ্জাইচ ই ছুল, মানীগঞ্।

ে। দিয়লিখিত পুক্তক ■ পুথি উপহারদাভূগণকে বধারীতি 🚃 বেওরা হটল।

উপহারহাতা

ীৰ্জ বৃণাগকান্তি ঘোৰ

- বেংগিজনাথ 📰
- সম্পাদক, কাৰ্ড্ড-সভা
- 🚃 আবড়ল গছর দিন্দিকী

Supdt. Government Printing, India Officer in Charge.

Bengal Secretariat, Book Depot.

वियुक्त श्राट्यांशहक हरहे।भाषात्र

জলিভবোহন বসাক

প্ৰীযুক্ত বোগেজনাথ ঋথ

🔸। অভঃগর নভাগতি বহাশয়কে ধক্তবার বিহা 🚃 হইন।

🎒 কিরণচন্দ্র 📖

शहकारी नन्नापक ।

잇世本

💵 । । उरु९ चड्ड प्रांगांत्रन

२ । वशीव देवक्क-बाक्कीवी मफाव

১০শ বার্ষিক ভার্বাবিবৰৰ

৩ : বল্লেশীর কারস্থ-সভার ১৪শ वार्विक अधिरवशस्त्रव कार्वाविववनी

 । বজরত মহম্মদের জীবন-চরিও ও वर्षनौकि

* 1 Report of the Chief Inspector of Mines in India, 1915.

Report on the Police Administration in the Bengal Presidency, for the year 1915.

11 Report on the Working of Hospitals and Dispensaries under the Govt. of Bengal, 1915.

by Report of the Grand Aurvedic Exhibition, Muttra, 1913. A.D. in Hindi.

 Principles of Surgery in Hindi. Practice of Surgery in Hindi. Do in Urdu.

১০ | কৃষ্ণপ্ৰেৰ্ডৱাৰ্ণী (স্বাগৰ্ভায়ৰ্বা)

क्रीचरतसम्बद्ध बाग्रहोध्यो সভাপতি।

২৩শ বাৰ্ষিক, চতুৰ্থ মাসিক অধিবেশন

১৮ই অঞ্জারণ ১৩২৩, ৩রা ডিলেগর, অপরায় ৬টা

উপহিত্তি—

ত্রীবৃক্ত স্থরেন্দ্রচন্ত্র স্বায় চৌধুরী (সভাপতি)

মাননীর কুমার প্রীবৃক্ত শিবণেখরেশার রার শ্রীঘণ খামী শুদানন্দ (বেলুর মঠ) শ্রীবৃক্ত মাধ্যমাহন বস্থ এম্ এ

- 🍃 বুজনীকান্ত বিভাবিনোদ
- ্ব কবিরাক কিলোরীযোহন ঋথ এম্ এ
- ্ল প্রতাণচক্র দেন ধর এম্ এ, বি এক্
- ু শাক্তপুচরণ বিখাস
- ु मरहञ्जनाथ महास्त्रि
- ্ৰভীজনাথ 🚃
- ু খাণীনাৰ নন্ধী
- ু পিরিশচন্দ্র দত্ত
- 💂 😘 জনান নয়কার এন্ এ
- 💂 ৰোগেন্দ্ৰক্ষাৰ দেনগুল্প
- 🚅 বসস্কাৰণ হাৰ বিষয়ন্ত
- 🌲 শহেলাচক্র থাক
- 💂 মন্ধ্ৰণাৰ প্ৰাৰ
- ্ ভারাঞ্চনর ভট্টাচার্ব্য

হুৱেজনাৰ ভট্টাচাৰ্য্য

্ৰ ডাঃ]পাৰছৰ গঙ্র সিদিকী

্র গৌরহরি সেন

ু ভূষেন্দ্ৰনাথ বিখাস

রামকখল সিংহ

ু বাতক্তি বাহা

্ৰ অসরনাথ ম্জিক

ु कुपूनवक्षन बोद्रश्रश्च

ু সিদ্ধুকুৰার সংকার

ু প্রমানক আচার্য্য

কল্যাণী কুমার বন্যোপাখ্যার

ু চঙীচরণ চক্ত

ু উপেক্তৰাথ উপাধাহ

ু - দেবৈস্লেনাৰ বোৰ

ু অমিতাভ বসু

্ৰ নগেজনাপ চটোপাধ্যাৰ

্ৰ সিভাং**ওত্ব**ণ বিজ

এইক্স.মাম বতীপ্ৰমাৰ চৌধুনী ঞীকঠ, এম্ এ, বি একু (সম্পাদক)

ু হুয়েন্ত্ৰাৰ কুমাৰ

্ৰণিনীক্ষন প্ৰিড

্ কিবণচন্দ্র কথা

নহকারী সম্পাদকপণ।

আনোচ্য বিষয়—১। পত অধিবেশনের ভাষা-বিষয়ণ পাঠ। ২। পৃথ্যক ■ পৃথি উপহারণাত্রপকে ভগুজতা কাপন্। ৩। সাধারণ-সলভঃনির্মাচন। ৪। প্রবন্ধ-পাঠ;— (ফ) রাহ বাহাছ্য শ্রীযুক্ত বোগেশচন্ত্র- রাহ বিভামিষি, এম্ এ মহাপরের শ্রীচীন পৃথির সংকরণ এবং (থ) শ্রীযুক্ত ভাষাপ্রশন্ত ভট্টাচার্য্য বহাশবের ;শ্রীযুক্ত;বোগেশ বাবুর শক্ষণেব সধান মন্তবা। । এংশনি—কুমার ত্রীবুকা গংলাজেক্তকা দেব বাহাছর-প্রনম্ভ একটি স্থাসুর্জি । এন শোকপ্রকাশ—(ক) শমহারাক্ত কুম্পচত সিংহ বি এ, (ব) শবিহারীলাল ঋথ সি এল, (গ) শমহারিকাণ বিশি, (ব) শমহারাক্ত কেন্দ্রেলাণ বিশোলার, (৩) শহরেক্তক চক্ত, (১) শর্মণাতি রায় বিভাবিনোল এবং (৬) শমবফ্তর বর্ষণ মহাশ্যগণের প্রশোভগ্যনে। ব। বিবিধা।

সম্পাদক শ্রীবৃক্ত রার বভীজনাথ চৌধুরী মহান্দ্রের প্রভাবে এবং শ্রীবৃক্ত সন্মধ্যের বন্ধু মহান্দ্রের সমর্থনে এবং সর্পাদভাজন্মে পরিবদের রঙ্গপুর-শাবার সম্পাদক শ্রীবৃক্ত স্থরেক্তচক্ত রার চৌধুরী মহান্ত্র সন্তাপতির স্থাসন প্রচন করিলেন।

- ১। সম্পারী সম্পাহক জীবুক্ত কির্পচ্জ দত মহাশহ গত অধিবেশনের কার্য্য-বিবরণ গঠি করিকে উহা গুরীত হইল।
- ২। নিয়নিখিত পুস্তক পৃথি উপদার পাইরা পরিবং উপহারদাতৃগণকে স্বতক্ষতা ক্ষাপম করিলেন ও ধল্পবাদ বিলেন। [ভালিকা পরে এইবা]
- ৩। নির্দাণিত ব্যক্তিগণ ধণারীতি প্রস্তাবিত ও সমর্থিত হইবার পর সর্বাসক্ষেদ্র সংক্রমণে নির্বাচিত হইবেন। (তালিকা পরে ছাইবা)
- ৪। প্রবন্ধ-পাঠ---(ক) রাম বাহাত্র ত্রীযুক্ত যোগেশচন্ত্র রাম বিষ্ণানিধি, এম্ এ মহাশরের "প্রাচীন পুথির সংব্যব" নামক প্রবন্ধ দ্রীযুক্ত মধানমোহন বস্তু অম্ এ মহাশরে কর্তৃক পঠিত ইইল। প্রবন্ধটি স্থাচিক্তিত, স্থালিখিত লা স্বংহাপবােনী বলিধা স্কলেওই চিন্তাকর্ষক হইরাছিল। প্রবন্ধটি প্রকাশিত হইলে স্কলের আলোচনার স্থাবিধা হইবে। এ বিষয়ে আলোচনা আয়ঞ্জক।
- ইহাতে আৰু বসন্তারনন বাম বিষয়েল মহাশ্য বলিলেন,—প্রবছটি স্থচিন্ধিত এবং ইহাতে আৰু আবস্থান বিষয়ের আলোচনা হওয়া আবস্তান প্রায়ের নারত আবর লোক নারত আবাদার্হ। এই বিষয়ে আব্রুত আহাল হওয়া আবস্তান। কারণ, প্রবন্ধ-লেওকের সকল সিয়ান্তের সহিত আমরা একমত নহি। বণাত্তি আলোচনা হওয়া আবস্তান। নাটামূটি এ কথা বলা চলে—কোন্ শব্যের সহিত আমরা একমত নহি। বণাত্তি আলোচনা কে করিবে প আনেক বালানা শব্যের পাঁচ ছব রকম বানান আছে—এক 'কুনীব' শব্যের আ রকম বানান আছে। সংস্কৃত ও প্রায়ুত্তেও একই শব্যের পাঁচ ছব রকম বানান পাওয়া বার। শব্যের বিভক্তি ও যাতুক্রণ নামান্তানার হব। এ, ক, তে প্রভৃতি বিভক্তির আ রক্যে যোল করা বান—কোন্ট ওল্ল, ভালা কে মীমাংসা করিবে প বোধ হব, বোগেল বাবু প্রান্তত্ত লব্যের বানানের দিকে প্রস্কানা রাধিয়া বানান গুলির চেটার কথা বলিভেছেল। কিন্তু ভালা ঠিক নহে।

শ্রীমুক মরাধ্যোহন বথা এম্ আ মহাশহ বলিকেন বে, 'সর্কনাম' ও 'ক্রিরার' ব্যবহার বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন হইতে পারে, কিন্তু একই গ্রন্থকারের প্রত্যেক এইগুলির যদি পার্থকা দেশা বাব, ভাষা হইলে আলা সকলে কি বুরা বাইবে } বিভিন্ন বিভক্তি পাইলে খোপেশ ৰাবুর মতে তাহা বুঝাইরা দেওরা বা উল্লেখ করা উচিত। শিশিকবের <mark>ভাষা শোষিত</mark> ক্রিতে কইলে ভাহা ক্রানিয়া করা উচিত।

সম্পাদক শ্রীবৃক্ত রার বভীক্রনাথ চৌধুরী, মহানর বলিলেন, —প্রশ্বনি স্থানাপৰোগী ধ্ইরাছে।
প্রাচীন বালাগা পূথি রাতিষত সম্পাদিত হইরা প্রকাশিত হওরার কাল কিঞ্চিনিক ১০১৯৬
বংসর হইল আরম্ভ হইরাছে। তবন হইডেই বে বিশেষ সাবধানতা ও নিস্পতার সহিত্ত
পুলিপ্রলি সম্পাদিত হইতেছে, এ কথা সর্বাধা বলা চলে না। পুলি সম্পাদন বিষয়ে
নাধারণতঃ হুইটি মত শুনা বার ;—কেহু কেহু বলেন—"যক্ষুইং ডলিপিডং", আল বলেন —
নানা পুলি মিলাইরা গ্রন্থনেকর অনুমোদিত বানান হিন্তু করিরা ল পাঠায়রানি দিলা
বিশেষ সাবধানতার সহিত পুলি সম্পাদন করা উচিত । প্রথম মতটি সমাচীন নহে। ইংলতে
এই কর্ষো চলিতেছে। প্রাচীন প্রক সম্পাদন করিছে হুইলে বিশেষ প্রেষণা ল অনুসন্ধান
আবস্তব । প্রথম, প্রস্থকারের মূল গ্রন্থ সংগ্রের চেষ্টা করা উচিত—মন্ধি উহা না পাওয়া
মার, ভাষা হুইলে লিপিক্রের বাস্থান, কাল প্রকৃতি স্থানা আবস্তুক এবং এই সকল বিষয়ের
প্রস্কুক প্রিচর পাইলে প্রকৃত্বস্পাদ্ধন বিশেষ সাহার্য হুইবে। পাছটীকা ল ভূমিকায় এই
স্বর্থ বিষয়ের আলোচনা থাকা আবস্তুক । যোগেশ বাবু এই বিষয়ে ইন্সিত করিবার লাভ প্রক্রের মনোবার আকর্ষণ করার আনাব্যের বিশেষ বন্ধবাদ-ভাক্রন হুইগ্রাছন।

তৎপরে মহামারোপাধারে প্রীযুক্ত ডাঃ সতীশচক্ত বিশ্বাভূষণ এম্ এ, পি এইচ্ছি মহাশর বিনিদেন,—শক্তের বানানের শুদ্ধি অগুদ্ধির বিষয় কিছু বলা বার না। বালালা ভাষার বধন বাকিব ছিল না, ভখন শক্তের শুদ্ধি অগুদ্ধির বিষয়ে কোন একটা ছির সিদ্ধান্ত করা যুক্তিযুক্ত নহে। সংস্কৃত বা প্রাকৃত বাকেরপের অর্থানী বালালা শক্তের শুদ্ধি অগুদ্ধির বিচার চলে না। যদি ১০০০খানি একই প্রশ্ন পাণ্ডরা বার এবং সেপ্তলির প্রস্ক্তেক কোন এক শক্তের একই রক্ষ বানান পাণ্ডরা বার, তাহা ইইলে এ বিষয়ের একটা সিদ্ধান্ত করা বাইতে পারে। প্রশ্ন সম্পাদন-কালে প্রশ্নের ও প্রস্ক্তারের ইতিহাস, নিশিকরের ইতিহাস প্রভৃতি দেওরা ভাল ভাতিত।

শ্রীযুক্ত ডাজার স্মাবছল গছুর দিছিকী মহাশধ বলিদেন,—প্রাচীন পূথির সম্পায়নকালে সম্পাদকের প্রধান কর্ত্তব্য, পূথিগানি বার বার সাঠঃকরা। আদর্শ পূথির বছর স্থান কেতিব। অনেক অফুনজানের পর তবে একটা নির্দ্ধন্ধে উপনীত হত্তরা বৃত্তিযুক্ত। আনকাসকার সম্পাদিত অনেক পুথিতে 💼 📼 ভূমিকা থাকে বটে, কিত হ্যুপের বিষর, আদর্শ পৃথিতিল বে সম্পাদক কর্তৃক ভাল করিব। গঠিত হইবাছে, ইহার প্রমাশ অনেক সময়ে পাওরা বার না।

শীবুক ক্রেজনাথ কুনার মহানর বলিলেন,—পুৰি-সম্পাদনের অনেকগুলি আছা আছে। প্রথমে একগানি পৃথি বা অনেকগুলি পৃথি খেখা আয়ঞ্জ। পৃথি নৃত্ন, কি পুরাত্ম, জামা আবর্ডক—পুণিধানি প্রকাশ করিবার নাবঞ্চক আছে কি না, আলা উচিত। তারণর পৃথি

প্রকাশের পূর্ব্ধে বর্জমান ইউরোপীরগণ-প্রবর্ত্তিত বৈজ্ঞানিক প্রণাশীতে উহা সম্পাদন করা আবস্থাক।

নভাপতি প্রীৰ্ক প্রেক্ষচন্ত হার চৌধুবী মহাশয় বলিলেন,—প্রবন্ধটিও থেবিক্টির আলোচনা, উভয়ই প্রশন্ন ইইয়াছে। পরিধদে ও পারধদের শাধাসমূহে আককাল অনেক পুলি সংগৃহীত হইভেছে। কভকগুলি থেকাল করা উচিত। প্রথম বুগে থালা ইইয়াছে, ভারা এখন চলিবে না। এক দল বলেন, প্রাচীন পুথি পাইবা মাউই ছাপান উচিত, লা দল বলেন,—ছাপাইবার উপযুক্ত কি না ও আবেশ্বক আছে কি না, বিচার ভরিরা ছাপান উচিত। উভয় পক্ষের অনেক বুজিও আছে। এখন আলোচনার কাল আসিয়াছে, পুলিগুলি প্রকাশ করিবার বিচার আবেশ্বক। একটি বিচার-দভা গঠিত হওয়া উচিত। পরিবৎ পুথি-প্রকাশ বিচার সম্বন্ধ একটা ব্যব্দা ভারলে হাল ছয়। প্রবন্ধ লেখক সকলেরই বন্ধবাদার্হ।

- (**৩) আয়ক্ত ভারাপ্রসর ভটাতা**র্য্য মহাশ্রের "বালালা শক্তেশ্ব **সমঙ্কে ক্রেক্টি** মন্তব্যু" নামক প্রায়ন্ত সময়ভাবে পঠিত হটক না।
- ৫। কুনার প্রীযুক্ত সংস্থাক্ষেক্তক্ষত দেব বাধান্তর প্রদন্ত একটি "স্থা-মৃতি" ও একটি "সধালিবসৃত্তি" আন্তিতি চ্ইল। প্রদান্তাকে এই চ্ইটি প্রাচীন লিলাসৃত্তি প্রদানের অন্ত বিশেষ ধ্যাবাদ দেওরা হইল।
- ৬। (ক) ইনুক্ত ভাকার আবহুণ গক্র দিছিকী মহাশ্য বর্গীয় মহাবাল কুমুণচল্ড নিংছ বি এ বাহান্তরের অকালমূত্যতে শোক প্রকাশের জন্ত "বিশেষ" অধিবেশনের প্রাথার করিলেন। প্রস্তাবটি কার্য্য-নির্কাহক-সমিভিতে প্রেরিভ হইবে, দ্বির হইল। উপস্থিত সভার শ্রীস্কুল রাগ বভীজনাথ চৌধুরী মহাশ্য বলিলেন বে, স্বর্গীর মহারাজের বিভাবন্তা, আচার, বিনয় ও সৌকল্ডের কথা মনে হইলে উাহার অভাবে অপ্রাণ সংবরণ করা কঠিন। সংস্কৃত-সাহিত্যে ভাহার বিশেষ বাংগান্তি ও ক্রিছ ছিল। এ দিকেও তিনি আনাদের বিশ্ববিশালয়ের বি এ উপাধি পাইমাছিলেন। সংস্কৃত ভাষার তিনি আলাপ পর্যন্ত করিতে পালিভেন। স্বর্গত এবং বেলাজানি দর্শনে প্রস্তাত ব্যংগল শ্রীসুক্ত অনস্তাচার্য্যের সহিত ভাহাকে সংস্কৃত ভাষার আলাপ করিতে শুনিরাছি। তিনি নিটাবান প্রায়েণ আহ্বাপ ছিল্ছ ছিলেন। বান্ধানা ভাহার ভাহার বিশেষ অন্থ্রাগ ছিল। 'সাহিত্যসংহিতা', 'সৌরভ' অক্তিতে মাসিক প্রক্রিয়ার উহিল ব্যংগত ছিলাবে উাহার সৌধ্যে আম্বার প্রার্থিত ছিলাম। এই শ্রেণীর লোকের মৃত্যু দেশের প্রক্র ভারত্বকর ট্রাইণ্ড আম্বার প্রেরণ্ডিত ছিলাম। এই শ্রেণীর লোকের মৃত্যু দেশের প্রক্রে ব্যক্ত আভ্রক্ত করি।
- (খ) শবিষ্যীলাল অথ-শব্দাষ্থ্য সংগ্রের পরিচর অনাবঞ্জ। তিনি প্রথম বুগের দি এব, বারিটার ক্রমা পরে নিগাল রিমাম্যালার কন। শেবে হাইকোর্টের বিষারপতি নির্থা হল এবং কর্মাবসানে করোদারাক্যের Prime minister নির্থা ক্রমাহিলেন। 'রবেশ-ভবনের' Patron ক্রবার কর,ইনিই বরোলার মহারাধ্যক অঞ্রোধ করেন এবং মহারাধ্যের নিকট ক্রথে ৫০০০, পাঁচ বাজার টাকা সংগ্রহ করিয়া ধেন।

- (श) अध्याहिनीयांच विभि--हेमि अविवादक विष्णव विदेखती समञ विष्णव । अहेस्समार्थ বন্দ্যোপাধ্যার মহাসমের তৈল্টিঅ, চ্পাসিরভূষার বোধ ও চ্যুক্তনীকান্ত 📖 মহাসংহর লোমাইড চিত্র আঁকাইয়া ইনি পরিষদে দিয়াহিলেন। পরিষদের ছায়ী ভাগতের এন টাকা দিন্তে প্রতিপ্রত বইরাছিলেন ও তক্ষণ্যে কিছু দিরাও গিয়াছেন।
- (ম) শন্বেজনাথ অস্লোগাধাার (থাকবাবু)-ইনি বঙ্গীর নটাশালার সহিত বিশেষভাবে সংগ্রিষ্ট ছিলেন। উচ্চ অবের অভিনেতা বলিয়া তাঁহার প্রাসিদি ছিল। ডিনি পরিবদের 📉 ছিলেন। নউঞ্জচুড়ামণি ৮ অর্থেন্দুশেধর মুখেফী মহাশবের খেব জীবনে ভাঁহাকে নিজ বানীতে হাৰিয়া শ্ৰছাৰ সহিত ইনি মুক্তৰী মহাশ্যেত আনেক সেবা কৰিয়া-ছিলেন। ইঁহারই আলরে মুক্তমী মহাশরের দেহাবসান হয়।
- (৩) ৮হরেড়া চন্দ—ইনি অর দিন হইতে পরিষদের স্থাতা হইরাছিলেন—ইনি বল-সাহিত্যের বিশেষ অস্থরাগী ছিলেন।
- (p) ৮পণ্পতি ভাষ বিভাবিনোদ--ইনি হাওড়ার সুনবিশেবের পণ্ডিত ছিলেন। গ্রন্থ হটরা অবধি টান পরিবংশর নানা অধিবেশনেও স্থিপনের অধিবেশনে বোগদান কবিভেন।
- (ছ) ৵নবভূদার বর্মণ—ইনি পরিষদের রজপুর-শাধাহও সমস্ত ছিলেন ও ব্য-সাহিত্যের বিশেষ অন্তরাগী হিংলন।

সম্বৰ্তে মুখ্যাল্যান বইয়া এই খোকপ্ৰকাশের প্ৰস্থাবন্ধলি প্ৰহণ করিলেন ৷ বিৱ হুইল. ভিন্তের আখীর অভনকে পরিবদের সমবেদনা জানাইরা পত্ত কেখা হউক।

অভঃপর সভাবতোপাধ্যার ত্রীবৃক্ষ ডা: সভাপচজ্র বিভাভূবৰ এম এ, পি এইচ ভি মহানর সভাপতি মহালয়কে বভাবাৰ ভাগন করিলে বভাভ**ল** হইলু।

শ্রীকিরণচন্দ্র দত্ত महकादी मन्त्राप्तक। জীজগদীশচনদ বস্ত সভাপত্তি।

উপহারপ্রাপ্ত পুস্তক ও পুষির তালিকা

প্রদাতা

পুৰুকের নাম

🖺 বুক্ত পঞ্চানন কাব্যস্থতিতীর্থ 👚

১। ভিলহার

_ विकास मिश्ह

२ । यहाचा काणीवागः तिःश

ু দেবকুমার খাগ্রচাধুনী

৩। নৃতন বলের পুরাতন কাহিনী

চন্দ্ৰীপের ইতিকাস

্ৰ হৈবপৰ্যা

্ৰ**ে বৈতোখিদ-সক্তমালা**

্র ঠাকুর উদয়দারারণ দিংক

গোভিল-গৃহত্ত্ত্ত্ব্যু (৩ বালি)

প্ৰদাতা পুত্রকের দলি **बीनक शेकर उपन्याताम मिश्ह** १। व्यक्तिक हैरम ৮। अप्रिक्षित्य (२ वानि) ১ ৷ কুৰাসিভান্ত প্ৰৰোধচন্দ্ৰ চট্টোপাধ্যাৰ > 1 Great Britain's Measures against German Trade. The Germans at Louvain >> + Calcutta University Minutes Registrar, Calcutta University Part VII 1915. Do. Calendar Part. III. 1916. 53 1 Statistical Abstract for British India Supdt, Govt. Printing, India Vol. IV. Administrative, Judicial and Local self Government 1913-14. Supdt. Govt. Printing, Monthly Statistics of Cotton Spinn-30-39 | India. ing and Weaving in Indian Mills. July and August, 1916. be | Indian Wheat and Grain Elevation. 591 Statistics of British India, Vol. V. Director of Statistics Education, 1914-15. Review of the Trade of India in 1915-16. 544 A list of the Birds observed in Alaska Secretary, Smith Sonian and North-eastern Siberia during the Institution. Summer of 1914. >> | Arequips Pyrhellometry. 53 | Descriptions of a new genus and eight new species and subspecies of African Mammals. Physical Anthropology of the Lenane or Delawares and of the Eastern Indiana in general.

- Explorations and Field-work of the Smithsonian Institution in 1915,
- the Sun's Disk and new evidences of the Solar variability.
- The Pyransmeter—an instrument for measuring Sky-radiation.

ঞ্চাক		প্তকের দান
Secretary, Smith Soniam Institution.		Three new Africans sbrews of genns Crocidura.
	₹€	The Ordaz and Dortal expeditions in search of El-Dorado, m described on
	२७।	Sixteenth century Maps. Opinions rendered by the International Commission on Zoological nomenclature.
Supdt. Govt. Printing, India	स्पा	Report on the Administration of the Metrorological Department of the Gove, of India in 1915—16.
Dy. Supdt. Survey of India Debra-Dun	81F	The Pendulum operations in India and Burms 1908 to 1913.
Supdt. Archæological Survey, Madrae.	२२।	
President, Advisory food Committee.	Ø+ (Report of the Calcutta Advisory food Committee for the period ending 81st July, 1916.
Officer in charge, Bengal Secretariat Book Depot.	167	Report on Sanitation in Bengal for the year 1915.
	-०१ ।	Annual Statistical Returns and short notes wascication in Bengal for the year 1915-16.
	90 (Administrative Report of the Excise Department in the Presidency of Bengal for the year 1915-16.
	481	
Supdt. Govt. Montype Press	911	Annual Returns of Statistics relating to Forest Administration in British India 1914-1915.
Registrar, Calcutta University.	ch]	Calcutta University Minutes Part VIII, 1914. Do Part. I. 1916. Do Calendar Part I. 1916.

প্রদাতা

প্ৰকের নাম

Supdt	Govt.	Press,	Madras.
-------	-------	--------	---------

The Progress report of the Assistant Archaeological Superintendent for Epigraphy Southern circle for the year 1915-16.

Supdt. of Archaeology, Hyderabad State.

Annual Report of the Archaeological **७₩** | Department of His Highness the 1323-24F Nizam's Dominious 1914-15. A. D.

Director, Geological Survey India.

Records of the Geological Survey of India Vol. XLVII, Part 3, 1916.

8 . 1 Memoires of the Geological Survey of India Vol. XLIII, Part, 2.

Professor of Sanskrit. Deccan College. 8) | Descriptive Catalogue of the Collection of Sanskrit Manuscripts in the Government Library.

প্রস্তাবিত দদস্যগণ

প্রধাবক	সমর্থক	_
श्रीभवाहत्रभ मात्रकथ	टीकिश्वहत्त्व वष	শ্ৰীআন্তভোগ সমকায় বি এ, বি টি
	1	শিক্ষক, আরমানিটোলা গণ্ড র্গমেন্টস্থল, ঢাকা ।
41		डीश्वारक्षमाहन मिळ वि ज, वि हि
		ঐ ঐ।
ы		ত্রীগতীশচন্ত্র সেন বি ৩, বি 🖩
		i i i
শ্ৰীয়ামকৰণ লিংছ	औरर्मध्यः त्याव	ই:হুশীগচন্ত 💌 বি এ
		হেভ মাষ্টার, জোড়াসহ উ, ইং, ছুল।
ঞ্জিত্মচন্ত্ৰ দাশধ্য	📺 ঐউপেঞ্চনাথ চক্রব	ৰ্ভী জীকাৰাখ্যাশ্ৰদৰ য়াৰ বি 🔳
		সহঃ আগন শিক্ষক, এচ ভাই তুল, সংখ্যে।
অনশ্ৰীর্জন পভিড		জীবভিদ্ ৰিহানী বোৰ
		> নেব্ৰাগান পেন, ৰাগ ৰাকা র ।
এ নতীলচন্দ্ৰ বোৰ	গ্ৰীয়াৰক্ষণ সিংহ	এ নগেন্তনাৰ নিজ,
	3	াক্টেট, ৪৭।> নীলক্ষল কুণ্ডু লেন, শিৰপুর।
শীসভাচৰণ সুৰোপাধাৰ	. 19	बिन् निःस् रोग यद्य वि धन
·		হাতিরকুন, কোমগর, ই, আই, আর।

শ্ৰন্থ ক	স্থৰ্যক	神管理
শীৰতাচরণ মুখোপাধাৰ	গ্রীরাশক্ষণ দিংছ	শ্ৰীপেৱহাৰ চট্টোপাধ্যাৰ বি ই
		এসিটাণ্ট ইঞ্জিনিয়ার, কান্দিয়া,
		আহ্মহপুর, কালনা বেলছয়ে, বর্ষমান 🕻
		ীন্দীগোণাল ৰ ম্ম ৰি ই
		ইঞ্জিনিয়ার, দক্ষিণপাড়া, কোরগর।
		জীনুগেল্লনাথ যোগ এম্ এ, বি 📺
		ৰোধণাড়া, কো রগ র ।
	nt.	গ্ৰীৰভীজনাপ বাব
		শিক্ষক, কোনগর হাই কুল, কোনগর।
এীৰসম্ভশ্নার রা য় কবিতৃষ	৭ - খীৰাণীনাৰ ননী	শীশরচন্দ্র 📖 বি এ
		৪০ চাষ্যখোশাপাড়া ছীট।
	-	উলোঠবিহারী বন্দ্যোপাধ্যার
		২৮ খনু ওতাগরের গেন।
প্ৰীনগেন্তনাথ ৰোগ	শ্ৰীবাৰক মল সিংহ	শ্রীবপূর্বভূমার ময়িক
		পো: एकपूक्त, २० পরগণা।
		জীৱান্তেজনাথ হালাগ
		১০ ভৈরব মুথার্ক্কি শেন, বেলগেছিয়া।
	•	শ্ৰীপাহিনদ্দিন সম্প্ৰ
		আড়দার, ট্রাযভিপোর সমুধ, বেনগাছিয়া।
		এ কান ইলাল দাস
		৩ মহেন্দ্রবস্থা বেন, ভাষবান্ধার।
		শ্ৰীৰতীল্ৰনাথ 🔳
		ন কুপুর বেম, পোঃ বেগগেছিয়া।
গ্ৰহন্তগাপাৰ হাব কুড়	*	ডাঃ শ্ৰীগোশালচন্ত্ৰ শ্লাহ এম্ বি,
		সেরপুর, ব ও ড়াঃ
		জীবোগেজনাথ কৃত্বি ■
		किरनभक्ष राहे चून, किरनभक्ष (भूमिश्रा)।
	M	ঐ্বিভেন্সবোহন বৈৰ এব্ ■
		হেডুবাটার, ফ র্জ ইন্টিটিউশন্, 🚃 ।
		জীভূবনবোৰণ 📖 চৌধুৰী
		খনিবার, দেরপুর, যঋকা।

এতাৰ	সহ ৰ্থক	-
🖺 হয়পোপাল বাস কুড়ু	🛱 বাষক মল সিংহ	श्रीवर्गावशंत्री कृष्
		ক্ষিধার, সেরপ্র, ব ঋ ডা।
		ইংৰাগেজনাৱায়ণ দাকাল
		জনিবার, সেরপ্র, বভড়া।
	🕳 ক্ৰিয়াজ ত্ৰী	নীলয়ত্ব ভট্টাচার্য্য বিভাবিনোদ, কবিভূষণ
		সেরপুর, বঋড়া।
ঐপন্তৰেশচন্ত্ৰ সাঞ্চাপ	•	খ্ৰীন্ধিতেক্সনাপ সেন
		ভাগবিগড়, বি, এন্ রেলওরে ।
Jan .	9.0	এমহীভোব দাহা
		वें वें।
শ্ৰীপাণেভাৰ বাসপ্ৰথ		ই কার্তিকচন্দ্র প্রাথাপিক
		ক্ষোরপুর, বি, এন্ রেল্ ডরে।
জীগৰোগচন চটোপাধ্যার	ত্ৰীহেষচন্দ্ৰ দাপ ওৱ	শ্ৰীআনুডোৰ মূপোশাধ্যার
		ইম্পীরিরাল কোল কোং,
		वर्तिता, हें, चाहे, चांत्र ।
	*	শ্ৰপঞ্চানন কাৰ্যস্ ভিতীৰ্থ
	C	হড্পত্তিত, স্বাণীপঞ্চ হাই সুল, রাণীগঞ্চ ।
क्षेरेनदबनहास बरमगानावाव	æ	🗐 গোকুণচন্দ্ৰ চটোপাধ্যাহ বি 🔳
		সম্পাদকসাহিত্যসভা, নাউপুর স্থূন।
	•	শ্ৰীননীয়োগাল ৰুখোগাঞ্চাৰ বি এ
		শাভপুর।
30	n)	শীরাশর লন কল্যোপ ংখার
	_	ক্ষিবার, এভোরানী।
#	জীরাথক্ষণ গিংহ	ত্ৰীগাখাকাৰ মুংগাপাধ্যাৰ
		লাভপুর।
•	•	কালিবাদ সুখোপাধ্যার
		গতিপুর।
•	3	শ্রিমৃত্যাগোশা কন্যোপাধ্যার
65		গভিশ্ব (
धारमसङ्ख्या 📠	व्यक्तारमञ्जूषय वित्रकी	गरावि अप् अ
		थ्रेक् ∤

এডায়ক	সমর্থক	-
হীবোগেজচক্র রাব	শীদাবের স্থা র ত্রিবে	मो औडरशत्सनावादन वक्ष खद्य दि ७, वि हि
		বালেশ্র।
और्त्रक्षित मांग	td.	কেওয়ান আৰম্ভ হাবিদ চৌধুৰী
		⋑ ₹ ३ ।
		শ্রীশভীরকাদ ভৌধুরী
		শ্ৰীহট ।
20	*	শ্রিবছেন্দ্রদায়ারণ চৌধুদ্বী প্রীবৃদ্ধী।
*		শ্ৰীকাণীকিশোর দাস
		व्यस्य ।
**		শ্রীসূর্ব্যক্তমার 📰
		কাছনগো, তীৰ্ট্ট।
•	3	द्यीव डीक् रमार्म भिरह
		रेत्यपत्र, ञीर्धे ।
अवाबाह्याय ताब	#	শ্ৰীফান্ডিচন্দ্ৰ মুখোপাধাৰ, এটাৰ
		সিক্লারবাগান ট্রাট ।
		শ্ৰীবিৰেশ্বর শ্বংগাধ্যার
		৭২াও সিক্দার্থাগান ট্রা ট।
at .	•	ক্রীস্কুবনেশ্বর সুখো পাধ্যার
_		क्षांनगपुत्र ।
वैश्वत्वनहत्व भ्रवाणाशाप्र	विदानीमान सन्ती	. ডাঃ শ্রীংরেজনাথ খোষ এল্ 📖 এপ্
		১০ খ্যমেশিংটল ট্রাট।
•		এস্ সি খুধার্জি কোষায়,
		বাণীগ#।
•		क्षीरकरवश्चन भूरधाशांशांव
**		বলবাদ দে ইটি ।
শ্রীনৈলেশনাথ বিশি	अध्यक्ष मान्ययं	व्यवस्थात्रक्त रशंक वि अग्
		क्षित्रज्ञ हिन्सी ।
		ব্রীরাজেন্ত্রকিশোর সেন
30	3	समिशात, जनगढ़ी, नवनगिरह ।
विक्षेत्राम देगरकम	वैरम्मद्ध ग्रम्बर्ध	জীৱাশালচক্র খোব
		ৰবিৱাপুর পোঃ, 📟 পাহড়িপুর, রাজগাহী।

এবাংক	সুৰুৰ্ণক	સમુંચ
अधिशाम देशवा न	শ্ৰীৰে্মচন্দ্ৰ দাশ কৰা	শ্রীবাহিকাদাথ স রকা র
	र्मा	রবাপুর পোঃ, আৰ চক্উকান, বাক্সাহী।
ঐদৈদেশনাথ বিশি		শ্ৰীপঞাত্যার বোগ এগ্ 🗷
	অ	ঠোৰবাড়ী ঠেট্, আঠারবাড়ী, শবনশ্দিংহ । 👚
क्रिक्श्वनीत एत्रावन	শ্ৰীক্ষৰেন্দ্ৰ গলোপাধা	ম
		वात्रांगती ।
		अ श्चरक्षण्डल भूटवांशावताच
		वांबांभगी ।
শ্ৰীপঞ্চানন বোৰ	ত্ৰীহেশচন্দ্ৰ খোব	শীশ্বদীকার দাস
	>	৭-১৮ শসুনাৰ পণ্ডিতের ট্রাট , ভবানীপ্র ।
ঐওঃদাস সরকার	নীরাখালদাস বস্যোগাখার	জীপ্রণবদেব সুৰোপধ্যার
		বোট সাব ইক্সপেক্টর, সাধার্ণ ভিবিশন,
		পুলিশ ক্ষেটি।
*		শ্রীমৃগাদনেশ্ব মুরোপাধ্যাব
		ছাপর।
•	•	মৌলবি আলি হোনেন
		কাননগো, গোগাবাবার, বহরবপুর।
শ্ৰীহৰিনাৰ খোব	ঐবসন্তরঞ্জন বার	শীরাসবিহারী মুখোগাখার এম্ এ, বি এল্
• 6	*	ब्र्लक, इननो ।
শ্ৰীয়ণিকচ ল বহ	डीपूर्वक्क दराव	वैपूर्यध्य हक्यों
		ক্ষণীয়া পোঃ, মনসম্পিংহ। জীবাণিতভাষ যায় বি ■
ar	•	ञ्चलाखरकाव प्राप्त । द ■ क्या क्या क्या विश्वकातिक ।
		क्षणका, कारनानार । जिस्तावकृषांत्र वांत्र वि ख
	*	व्ययपर्वाच भागाय व कड्डीडा, यहवननिरहा
		काः टीकानशास्त्रम्य गारा अन् अन् अन्
	•	· ·
क्रिविरक्षांविकांची अपनी	পাধ্যার শ্রীয়সমধ্যের 📼	_
- HI ANGLISH ACTUAL TO AL	I I WE AME I MANAGE I	·
- वैदिरमानविहाती भूरथा	শাধার শীধনভারকন 🔤	ক্রটারা, খ্রমন্সিংহ। উচ্চানাৰ ক্তহ ক্রটারা, টালাইক, খ্রমন্সিংহ। উল্লিক্সবিহারী মুধ্বোপাথার বি বেহিনীপুর।

44	Adda attico)	Ha Anta
শ্বভাবক	স ক্ ৰ	স্ ৰ ত
এনাৰকৰণ বিংহ	প্ৰী হেমচন্ত ংাষ	শ্রীক্সাদান মুখোপাধ্যার
		ৰগনা কলিছালী, মানভূম:
🖣 ননীগোপাল মজ্নদার	শ্ৰীপুৰেন্দ্ৰ নাথ স্থাৰ	ত্ৰীপ্ৰ কাশচন্দ্ৰ দত্ত
		৬০।৬৭ কলেক খ্রীট।
এ দোমনাৰ রাষ	.0	হীপ্রবোধচন্দ্র চট্টোপাধ্যাস
		বদ্দ ন্দ , ত্ পলী।
বীবোগেক্তকুমার সেব ভং		এখননাথ মূখো শাধ্যাৰ
		উত্ত রপাড়া।
মৌশবী আবছল করিম		শ্রীবিপিনচ ল্ল সেন চট্টগ্রাম।
শ্ৰীপ্নেপ্তনাথ নেম		শ্ৰীহরিবিশা ন বন্দ্যো পাধ্যা র
		উকীল, নক্ষরপুর।
•	#	জীনগে জনাথ চৌধুখী অস্ এ, বি এল্
		উকীল, মৃদ্ধান্ত ।
		শ্রীক্সানেজনোহন 🖿 বি এপ্
		डिकीन, मसःक्रत्र् य ।
শ্রিসোমনাথ রায়	विशासनाथ ननी	শ্ৰীশচীপতি লাব
		স্বরেজিষ্ট্রার , মেদিনীপুর ।
	12	শীনহেন্দ্ৰদাপ রায়, সবপ্ৰেক্ট্ৰোর,
		নারায়ণগড়, মেদিনী পুর ।
	79	ঞ্জিক্ত্যার বন্যোগাব্যার
		स्मिन <u>ौ</u> श्र ।
		ত্রীক্রিরণ দেন
		वहनशक, इंगनी।
জীৰতীজনোহন বাম	ঞ্জিবা ধালদান বন্দ্যোপাধ্যার	জীমহেন্দ্রনাথ রায় এব্ 🔳
		क्रांचा ह
	*	শ্রীঘঞ্জেমর রান্, শোক্তার
		বলিশাল।
	1.85	শীলাদৰিহালী দেশ
		পঞ্চিত্রার, ক্রিণপ্র ৷
	•	শ্রীপত্যাশচর 📰
		क्षेत्र ।

विद्या चिक	সমৰ্থক	শংশ্ব
ञैपकोश्वरमाञ्च होर थीत	विश्वमान वत्नात्रभावताः	জ্ঞিলোপাণ্ডক চট্টোপাণ্যার এষ্ ঞ, বি এশ্
		উক্তীৰ, ব্য়িশাল।
		ত্ৰীনিব ৰন দেন বি এ
		কার্ত্তিকপুর, ক্রিদপুর।
	-	শ্ৰীমস্তত্মার দান ঋথ এম্ এ
		उक्पूर ।
		শ্ৰীবীরেক্সনাথ সেন বি এল
		উकीन, मन्नमनिश्ह ।
	m ⁴	ক্ৰিরাল জীলাব্ৰিহারী মকুম্দায়
		मानगर ।
শ্ৰীমূণালকান্তি বোৰ	গ্রীনপ্তেনাথ বছ	ঞ্জিকাণীপ্রসন্ধ বিশাস ধার্মার ।
জীহেমচন্দ্র দাশগুর	জীবোধেজকুমার দেনখ	থ জীনীতেশ চন্ত্ৰ বাব এদ্ এ
		৪৭ করপোরেশন হীট।
		লীদেৰপ্ৰাপা ৰ বোৰ এম্ এ
		অধ্যাপস্ক, রিপ্ ণ কলেন্ত ।
		এনে খনাথ সাহা এস্ ■
		ə ং অণার নার্কুলার রোভ া
<u> এবাখাল্যান বন্দ্যোগাধ্যার</u>	≅ীওকদাৰ শ্বক†ৰ	শীৰতীক্ষচক্ৰ মিত্ৰ এম্ এ
		অধ্যাপক, বহরমগুর কলেক।
	23	এন, দেন
		প্ৰেষিডে ন্দি ব্যাহিট্ৰেট কো ই।
শ্রীনগেম্রানাথ খন্ন	শ্ৰীমৃণালকান্তি ৰোক	শ্ৰীমক্ষণনাথ বাব
		e কলেজ কোৱাৰ।
29		শ্রীবভাক্তরে সিংহ
-		वातकांमां ।
	#	बिलादबाहता गिरह
		আরল্ হোটেল, হাঁকীপুর।
এগ গাস্থুনী	ত্ৰীহেমচন্দ্ৰ দাশগুৱ	শ্ৰীবাদৰ চন্দ্ৰ চট্টোপা ৰ্যাৰ
7		বিউনিদিগ্যালিটি করপোরেশন, রেলুন।
10		वीमात्रव्यक्रियोत वात
4		২৮ চাউলপটা খেন, ছবানীপুর (

বলীয়-সাহিত্য-পরিধনের

এলাবৰ	দ্য€ক	_
এব গাড়ুকী	बैर श्वक्क संग थ न	শীসনোর#ম থৈক এম্ ⇒
		>৫২ হরি ণ স্থার্জি রোজ, জবানীপুর ।
ু≅ীহ্ ৰ্বাঞ্চলাদ রায়	জীয়ামকমণ সিংহ	ডাঃ শ্ৰীবোগেন্দ্ৰনাথ নাৰ
		নান্দাস, ইসাবপুর পোঃ, ব ও ড়া।
	-	ভা: খ্ৰীশৰচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্বা
		वे विश
	-	শ্ৰী নাৱ ্ৰাকাৰ গোখানী
		र्क के।
শীহরি প্রবন্ধ দাস 🍽 🕏		উচুণীশাল সেলগুণ্ড
		উকীন, বরিশার।
	•	শ্ৰীগোষ্ট্ৰ বস্তু বি এ ল্
		১৯ 📉 খনিস্থায় দেব।
		ঐাপ্রস্কলাথ গাহিড়ী বি ■
		চীকু সেকেটেরিরেট্ অকিন্, রেসুন।
শ্ৰীক্ষৰেন্তৰাৰ মুৰ্থো পাধ্যাৰ	শ্ৰীবা ৰকখল সিংহ	প্রিবীক্তনাথ বন্ধ্যোপাধ্যার
	94	রাকা রাজেন্সলাল মিজের পেন, জেলেখাটা ।
শ্ৰীৰচুলাৰ দে ডখনিধি		ৰৌলবী সাজ্জাৰ আহম্মদ চৌধুৰী
		ক্ষিদার, কোটালপুকুর পোঃ,
		দাঁওতাল প্রগণী।
*		গ্রিদারহাচরণ 📖
		বেনাথাপান, দেওবর।
ত্ৰীহু য়েক্তৰাথ 🚃	গ্ৰীহেষ্চন্ত গোৰ	যাগ বাহাছ্য শ্ৰীহারাণচক্ত দেব
		কাশপুর 🚃 কোট।
•		শ্ৰীত্বক্তমাথ গৰোগাখাৰ
		উকীন, শর্মিট্যাট, কাণপুর।
	*	শ্ৰীপ্ৰহাগচন্ত্ৰ বিৰু, উৰীপ
		निक्षिण गरिम, कांबेशूर ।
•		জ্ঞিন্থরেশচক্র কট্টাচার্ব্য
		প্যাহেড, কাপপুর।
	OF	শুলীশচনৰ ৰক্ষ্যোপাধ্যাৰ
		ক্ষেত্ৰি, এৱিকালচার কলেজ, কাৰুপুর I

ব্যাবদ	স্থৰ্থক	স্থায়
জীনিভ্যানৰ বাৰ	জীরাধক্ষণ সিংহ	क्षाः ज्ञीस्टबक्त मान व्यम् व्य, व्यम् कि
		১৪১ স্মাৰ্থার্ড ব্রীট।
শ্ৰীয়ামহয়ি 📺	ই কিয়ণ্ডত গত	শ্ৰীকাদীকৃষ্ণ ভট্টাচাৰ্ব্য এৰ্ এ, বি এল
		ছ্তাই এ বেশে টোলা বেল ।
**		শ্ৰীবভীঞ্জনাথ বন্ধু
		৭১ কর্ণভন্ন(লিন ব্রীষ্ট ।
শ্ৰীগভীশচন নিমোগী		গ্রীদত্যে স্ত্রনাথ মন্ত্ মদার
		০৩ ন্যা নভা উন রোভ।
শ্ৰীকভুগচন্ত মুখোগাখ্যার	ঞ্জামকমল বিংহ	গ্ৰীবিভৃতিভূষণ মুখোপায়ায় এমৃ এস্ দি
		ৰ ভি ।
গ্রীবড়ীজনাথ স্বরিক		ত্ৰীজানকীনাৰ মুখোগাব্যায়
		১৬।৩ ফ্ৰ ীয়চন্ত চক্ৰবৰ্তী ট্ৰীষ্ট।
•		এন, আব চাটার্জি
		৪।১ শিবশ কর শলিক লেন।
•		এ, কে ফানার্জি কোরার
		২• চুনাপ্তর্যু দেন।
		শ্ৰীবোগেশচক নান
		৬২ বহুবালার ইটি।
ঐব্দশ্বরঞ্জন 📖	क्षेत्रारभञ्जञ्जन (करन्य)	ঞ্চাঞ্চল খোৰ বি এ
		श्री, मक्क्ष्यभूत ।
-	-	জীক্ষ্যোভিষচক্ত 🔤 अन् 🔳
		গণিতাধ্যাপক, সি, এম্ এস্ কলেক,
	_	क्लिकाडा ।
ঞ্জিপান্তনচরণ বিখাস	জীয়ামক্ষণ সিংহ	শ্ৰীবোগেজণাৰ চৌধুৰী এম্ এ, বি 🚃
		समितात, स्थली।
		তীয়াৰপ্ৰসাদ বোধ এম্ এ, বি অন্
_		আঁটগুৰ, হসনী।
শ্ৰীশাৰীৰাৰ ৰক্ষী	э	अदिरमसनाथ बाध्रकोश्ती वि ■
		১৬৪।১।১ বদারোড, দাউৰ, ক্বানীপুর।
श्रीवटरक्षनांथ वशिष		विशिविकाक्ष्य बरकाणांशांव
		क्रेरोण, व्यक्तिश्व।

বলীয়-সাহিত্য-পরীয়বদের

শ্ৰহণৰ	न वर्षक	श्रीप्र
শুক্ষান সরকার	শীরাশকণ সিংহ	 विवयनध्यः निध्दं वि
		ভেপুটি দ্যানেবার, হাওড়া।
জীনলিনীরন্ধন শ ভিত	জীগৌরহবি দেন	শীনতীশচন্দ্ৰ রাম্ব এম্ এ
		> পোনাবাগান বেন।
জীবেশচন্দ্র দাশ ওপ্ত	শ্ৰীকুরেক্রনাথ কুমার	শ্রীনগিনীমোধন রারচৌধুরী
		২০ মেৰুছলা লেন।
ঞ্জিভারাঞ্চন বিশ্ববিদাদ		শ্ৰীনারায়ণচন্ত্র কাবাতীর্থ
		আধান পশ্চিত, নগরা হাট এইচ্, ই কুল,
		মপন্নাহটি।
	#0"	শ্ৰীগিবিদাভূষণ মঙল,
		উকীল, ভারমগুরাববার।
জীলানবাহ ভটাচার্য্য	💐 রামকমণ সিংহ	শ্ৰীনলিনীকান্ত রাম বি এ
		বিহাৰ ও উড়িকা ফেভিনিউ বোর্ডের
		হে ভ এসি ঠান্ট, বাকীপুর।

প্রথম বিশেষ অধিবেশন

বলাক ১৩২৩, হঠা পৌৰ

মহারাজ কুমুদচন্ত সিংহ বাহাড়রের পরলোকগমনোপলকো শোক-দভা উপছিতি—

মনামনোপাধ্যার পশুভরাক শ্রীষ্ক বাদবেশর ভর্করত্ন (সভাপতি)

1110114 - 1 - 1 (1-1 11 -)
শ্ৰীবৃক্ত চাক্তজ্ঞ ভট্টাটোৰ্যা ঋষ্ 🔳
্ৰ পালালাল কুখোলাখ্যাৰ
ু স্বাস্থ্য শূরকার বিশ্বাবিদ্য
্ল চিভাহুখ সাকাল বি ই
্ চিৰঞ্জ্পু লাহিকী
्र प्र त्वक्षवामाम कोम्बी
্ব কিশোরীযোগন 📰
্ব বেলেজভূমার নেমঞ্চা

প্ৰীকুক্ত বৈশ্বসাথ ভড়

- 💂 ননীগোণাণ 🔳
- ্ ভূবেজচাই বস্থ
- ু প্ৰভাতচন্দ্ৰ মুখোপাধ্যায়
- _ नयन भूडानन चामी
- _ বিৰয়গাল 📖
- 🍙 হরগোবিক ক্রব্র চৌধুরী
- _ শিশিতকুমার সুখোপাব্যার
- ু অভুলচন্দ্ৰ লাহিড়ী
- 🚆 ডাঃ আবছল গছুর সিন্দিকী
- ু ভা: উপেছনাথ চক্ৰবৰ্ত্তী
- ु व्यक्तिसञ्ज्ञात गान
- ্ব বিনয়ভূষণ রক্ষিত
- ্ৰ শীৰেজনাথ শুৱা
- _ মনোরগ্রন চক্রবর্তী
- ্ব নপেন্তনাথ বহু প্রাচ্যবিস্থানহার্থৰ
- _ ভাষলাল চক্ৰবৰ্তী
- _ अभूगाहळ देवशावक
- ... देवरणाकानाथ इरहोत्राशांव
- ু ন্নীলোপাল মন্থ্যদার
- ্ব চাকচজ দিবা এদ্ এ, বি এল্
- ्र सदहस्रमाथ मूर्याभाषात्र
- ্ৰ শেন স্বাধ্য
- ্ৰ আনেপ্ৰদাৰ গোৰ বি া
- ু বিশৃত্বণ সেনগুৱ
- ... एतःधनाम अक्नमात
- ্ৰ সোহমুখৰ মুখোপাধ্যায়
- ু গিরীজনাথ দেন
- ্ৰ অনীতিকুমার চটোপাধার এম্ এ
- ্ৰ সিবিশচন্ত চট্টোপাধ্যাদ
- .. जानकड्स शिर्ध

জীবুক মণিয়োহন দেন

- ्र भेर्नहस्र (मन
- ্ৰ শিশিরকুষার ভার্জী
- 🚽 শিশিরকুমার 📖
- 🧋 থীবেঞ্জনাৰ গ্ৰেপোগ্যায়
- এপ্ এব্ ভাষ
- " ডাঃ বনওয়ারী**লাল চৌ**ধুরী

ডি এগু সি

- ্ সিরিজাকুমার বস্তু
- ু জুমান প্রদিশুসারারণ রার আৰু এম্ এ
- ্ বিলোগবিছাত্মী বিভাবিলোদ
- ্ব কেশবচক্ত 📰 এম্ এ, বি এম্
- ্ৰাণীলাগ লক্ষ্যী
- ্ৰ শতিলাল ৰোম
- ্ৰ হীৱেন্দ্ৰৰাথ 📉 বেৰাস্কৰত

এম্ এ, বি 📺

- 🚅 शेष्यक्षञ्चन विद्वनी धम् ज
- " इरम्नक्या अङ्भ्यात अम् अ
- ু কালিহাস নাগ এম্ এ
- ্ৰ স্কুল্পৰ বাৰচৌধুৰী
- 🚅 ৰবিদাস চট্টোপাধ্যাৰ
- ্ৰ বাধানদান বন্দ্যোগাধ্যাৰ এৰ এ
- 🍃 সানীপ্ৰসন্ধ দাস 📰 এম্ এ
- 。 अक्सान नवकात व्यम् व
- 🔔 😘 কথান চট্টোপাথ্যাৰ বি 🔳
- ू थकां भारता मसूममात्र अम् अ, वि अन्
- ্ৰ বাব বাহাত্তৰ ৰাধাবলভ চৌধুৱী
- ु शूर्वहता (ए उद्योगांशन, वि अ
- ু ছাক্তৰ ভটাচাৰ্য
- ्र प्रशंखनाच देवव
- ্ৰ বিধান

শ্ৰীহুক্ত শশিভূবণ সিংহ বি ■

- ্ৰ কাণীচয়ণ মিজ
- ্ কাদীকুমার বহু
- ু প্রয়েজনার্থ দেন
- ু প্রভাগচন্দ্র দে
- 🚆 লাভলীয়োহন মিজ এম্ এস্লি
- ্ৰ গিরীশচন্দ্ৰ 💶
- 🚅 नक्षांसम् यत्नहांभाधाति
- ু অং সি সিংহ
- ্ব জে সি জট্টাচার্য্য
- ্ব প্ৰাণ্ডাসচন্ত্ৰ বস্ত্ৰ
- ্ব ক্রেজনাথ বন্যোপাধার
- ্ব মহেশ5শ্র রার
- ্ৰ ব্ৰীজনাৰ সেন

প্রীবৃক্ত ছবিচয়ণ নিজ

- _ अञ्चलभाग हर्द्वाभागाव
- ্ৰস্পাচল সাহ
- ু হেবেজনাৰ বাৰ
- ় ভারাপ্রসর ঋথ বি এ
- 🚅 नठीज्ञरनरक नकी
- ্বসভারশ্বন রাম বিব্যাসভা
- ্বাহক্ষল সিংহ
- ্ৰ ভাষাপ্ৰসন্ন ভট্টাচাৰ্য্য
- ু সুৰ্বাভূষার পাব
- ্ৰ ভোলানাথ কোঁচ
- ु (स्टिक्टनार्थ (चार्य
- ্ৰ উপেঞ্জনাৰ উপাধাাৰ

শ্ৰীযুক্ত রার বঙীশ্রনাথ চৌধুনী, শ্রীকণ্ঠ, ভক্তিভূষণ, এন্ এ, বি এগ (সম্পাদক)

- ু ভুৱেন্ত্ৰাণ কুমার
- ্ কি হণচন্দ্ৰ 📖
- _ নশিনীয়#ন পাঞ্চত
- ্ৰ মুণালকান্তি বোব

महकादी मणामकान ।

স্থানিপতি মধারাত কুখুনচয়ে সিংহ বি এ বাহাজ্যের মৃত্যুতে শোক প্রকাশ ■ বলীখ-লাহিত্য-পরিবদের বিলেষ অধিবেশন। মধামহোপাধ্যার ডাঃ জীবুক্ত সতীশচক্ত বিভাত্যণ এম্ এ, পি এইচ্ ভি মহাশয়ের প্রস্তাবে ও সর্কানস্বতিক্রবে মহামহোপাধ্যার পঞ্জিরাজ জীবুক্ত বাচবেশর তর্কপ্রস্থানার সভাপতির আন্তন গ্রহণ ক্রিলেন।

সভাপতি মহালয় প্রথমেই বলিকান,—ক্ষল-রাজবংশ বল্লেগে বহু প্রাচীন। বিনাজপুর, নাটোর, বর্জমান প্রভৃতির হল ক্ষল-রাজবংশও বহু প্রাচীন। ইবাদের মহারাজা উপাধি পুরুষাস্ক্রমিক। প্রস্ক-রাজবংশ নমাজে বহু প্রামনীয়। প্রপ্রেণির সমত ক্ষীন সমাজের সহিত ভোজন ও আলান প্রধান ই বাদের চলে। এমন কি, মহারাজী নিজেই পরিবেশণ করিয়া থালেম। রাজা রাম সিংহ এই বংশের মধ্যে একজন পূর্বন্ধন বিশিষ্ট বাজি। স্পূত্নান রাজস্কলালে, ভাঁহার তিনি বিশেষ স্থপরিচিত ছিলেন। সংস্কৃত ভাষার তিনি একজন বিশেষ ব্যাৎগর প্রথমেন বিদার প্রতিভাৱের বিচারভিনি প্রথম স্থিত ছিলেন। লাবিড, লৈকজ, মহারাষ্ট্র প্রভিত্তের বিচারভিনি প্রথম স্থিত ক্ষিন্ধন ক্ষিতেন। ছঃখের বিষয়, ভিনি শেষকালে
স্থলনান-ধর্ম গ্রহণ ক্ষিয়া একজন মুক্লমানীকে বিবাহ করেন।

কৰিকাতার কোন এক সভার খ্যাত্মানা তীযুক্ত আনন্দ চাৰ্দু নহানর এক হিন সভাপতি ছিলেন। তথার একজন খক্ষা বলিকেন,—খনীয়া এবং ধনীপ্তেরা বলি সরস্থতীর উপাসনা করেন, ভালা হইলে বড়ই লোভন হয়। বনিস্ভাগগ্রুকে সারস্থত স্বোপরারণ করিতে বক্ষা বিশেষ চেটা পান এবং উৎসাহায়িত করিতে চেটা করেন। ইনিই স্থপজের কুম্নচয়ে। তিনি নিবে ভালা করিরাছিলেন, নিকে আজীবন সারস্থত স্বোপরারণ হইলা দিনাতিপাত করিতেন। তিনি নানা বিবরে স্থপতিত ছিলেন। তাঁহার ক্রাণ্ড্রুতে ধনী-সভাগার আ এক মহারম্ব হারাইরাছেন, ভালাই নহে, বক্ষেপ্তের একটি নক্ষ্ত্রপাত হইলাছে—বলাও বার। তাঁহার আ পোক-সভার বোগনান করিতে পাইলা আনহান দ্বন্দেশবাসী স্ইলাও বিশেষ সৌরবাছিত। তাঁহার আল পোক-প্রকাশ সক্ষেপ্ত উচিত। আপনারা হথোপযুক্তভাবে তাঁহার ক্যাণাক প্রকাশ ক্ষান আ তাঁহার শুভিচিত স্থান বছবান ছটন।

ষ্ট্র বারাত্ত্র প্রীযুক্ত রাধাবল্লত চৌধুরী মহাশহ বলিবেন,—মহারাপ্ত কুমুরচন্দ্র আমারের ষেশের শোক, এক জেলানিবাসী। তিনি বঞ্চের একজন কৃতী সন্তান, অগ্রপথা জনিদার, বংশের একজন শ্রেষ্ট পুরুষ। বিষৎস্মান্তে উচ্চায় মৃত্যুতে বিশেষ অভাব ঘটাবে, সে বিষয়ে वनारे बाइना । आधि मध्यम् अहात विवास क्षेत्र हा हिहा कथा बनिय । महातामा कुमुमहन्त ১২৭৩ সালের ১৮ই আবাছ, हेश्वांलि स्था, ১৮৬৬ यु: सन्न खर्ग करवन । ১৩২৩ সালের ১৬ই আখিন ইংরাজী ২৬লে লেণ্টেম্বর ১৯১৬ তাঁহার মৃত্যু হয়। জীবনকাল পূর্ণ এন বংসর। চরিজ-জিনি আচীন বি, কোপের বি এ ছিলেন ৷ জাক্তার বস্থুর সহিত তিনি বিজ্ঞানের আলোচনা করিছেন। সংক্রত ভাষার উৎকৃষ্ট পশ্চিত ছিলেন। সংস্কৃতে অনর্মণ বস্তুতা ক্ষিতে 🔳 কাৰা বচনা কৰিতে পাৰিভেন। ভিনি ৰোতিৰ বানিভেন। 📰 ও ক\$ উজর প্রাকার সজীতে ভিনি পারবলী ছিলেন। রাজা রাজকৃষ্ণ সিংহের পর ১২৯৭ সালে ১৭ই পৌৰ সুৰুণ্চক্ত ভ্ৰমক্ষের রাজা হল। এই ভ্ৰমক্ষাজ ইতিহালে নামত অভিযাধীন রাকা বলিয়া গণা ছিল। Permanent Settlementএর সময় হইতে ইহারা জমিদার। লর্ড রিপপের সময়ে ১৮৮৪ পুঃ স্থানদ-রাজ বংখারুগত মহাবালা উপাধি আহা হন । কুরুদ-🌉 পিডা এই উপাধি পান : কৃম্বুচন্ত্ৰ কৰ্মত হিসাবে ২০০ 🔛 Armed Retainer এর অধিকার, কেওয়ানী আদালতে উপ্রিতির ছাত এবং প্রবর্থনেটের Private Enbry चिष्कात व्यास इस । किस Patriot दिलान, किस Politics या बाकनीकित कर्का कतिरकत না। তিনি বাধনৈতিক সভায় বোগধান না করিয়াও গেংশর বছ কল্যাণসাধনে নিয়েলিড ধাৰিছেন। বিধৰা, আন্নহীন-বাদক চাত্ৰ ও প্ৰাৰণ-পশ্চিত প্ৰভৃতি বহুতম *লোককে* কুম্মিনান করিতেন। অদেশী আন্দোলনের বহু পূর্ব হইতে আদেনী শিলের প্রবল অভ্যাসী ছিলের। শিরের উম্বাভিকরে 📉 সাজায় করিছের। তিনি প্রকারণ্যনর ছিলেন। এজমানির ব্যাবেশ্বার থাফিলেও তিনি নিশ্বে স্থান সহান সইতেন এবং ব্যব্ধ তাহালের আব্যেন গুনিকেন ও বধানাত প্রতিভার করিজেন। বাজপুরুবরিগের সহিত থাঁহার বিশেষ

মানঠতা ছিল। তিনি বিদেশীয় ভোজে কথনও বোগদান করেন নাই বলিবাই যোধ হয় তিনি Bigh regard পাইয়াছিলেন। তিনি আফুঠানিক আমা ছিলেন, তজাচ সমাজনগছারে বিশেব আহা ছিল। খীর শ্রেণীর ৮টি গটীকে একজ মিলাইয়া বারেজ-সমাজেয় বিশেব উপকার করিয়াছেন। জাতীয়-ভাবে জ্রীশিক্ষার পক্ষপাতী ছিলেন বলিয়াই মরমনসিংহে তিনি মহাকালী পাঠশালা স্থাপন করেন। উহায় দেশের লোক বলিয়া আমি গৌরবাছিত। ভাহার জ্বাবনী-সম্বলিত বিশ্বত জীবনী আপনাদের অস্থাতি হইলে আমি লিখিতে চেটা করিতে পারি। (স্থান-রাজ্বংশের অনেক কিছম্ভী এই স্থানে চৌধুরী নহাশের বিশ্বত করেন।)

ভাঃ আবহুল গজ্ব সিদিকী বহাশয় বলিলেন,—বহারাল ক্ষুণ্চক্রের ছইটি ৩৭ ছিল।
ভিনি সকল সাহিত্যের অধুরাঝী ছিলেন। ভিনি উর্জ্ব আনিভেন। সকল শ্রেণীর লোকের গহিত ভিনি মিলিভেন। গ্রীব হুঃগী, বড় লোক, ব্রাথাণ পণ্ডিত, বুলল্মান, মৌলভি, সকল স্থাণারের সকল লোকের সহিত ভিনি আলাণ করিছেন। প্রমণে বাহির হুইরা আমার বাদার গিহা ক্ত দিন আলাণ করিয়া আনিরাছেন। চাকরদের আন কখন 'তুমি' ছাড়া 'তুইরে' বলিভেন না। ইহা বড় সামার গুণের কথা নহে। তাঁথাকে হারাইয়া আমারা বিশেষ ক্তিপ্রতা ছইবাছি।

জীৰ্জ নগেজনাথ বছ প্রাচাবিদ্বাসহাণৰ মহাশঃ বলিলেন,—মহাপুরুবের ডিবোভাব ক্ষরাছে। তাঁহার প্রধাবিকতা, উনারতা ও সরল্ভা প্রভৃতি ওণে প্রামরা মুধ ক্ষরাছি। দরল, খাণীন, প্রাদর্শনাবের ওণ বহারাক ক্ষুদ্চলে ছিল। প্রামি নিকে তারা প্রামার করিবাছি। বাজেল-সমাক্ষের প্রথমি "উন্নাচল" বলিনা তাঁহার বংল বিখ্যাও—প্রাক্ত করিবাছি। বাজেল-সমাক্ষের সৌরব-ববি অভ্যবিত ক্ষরাছে। প্রথমিদ্ধ সাহিত্যিক, এইরণ সাধু, রাজপুরুবের প্রকাল-মৃত্যুতে আসরা বিশেষ প্রভাবগ্রহ ক্ষরাম।

সম্পাদক শ্রীবৃক্ষ রার বভীন্তনাথ চৌধুরী বহাণর বলিপেন,—মহারাল কুবৃদ্চক্রে নামা
লালে অভিজ্ঞার সহিত সর্পতা
বিনর বাকার একটা অপুর্ব স্মাবেশ হইয়াছিল। হিন্দু
মুস্বমানে উচ্চাকে স্থানভাবে আধর করিছেন। আঃ আবহুল গছর নিজিকী বহাণরের
প্রভাবে এই বিশেষ অধিবেশন হওয়াই ইছার প্রমাণ। ব্যক্তিগত হিসাবে তাঁহাকে হায়াইয়া
আবয়া মর্লাহত। তিনি বথন দে দিন ক্লিকাভাছ ভাহার ব্যুগণের নিকট হইছে বিধার
কাইয়া দেশে প্রমা ক্রিয়ার প্রভাব করেন, আমি সেই স্কার উপত্তিত ছিলাব। সেই বিধার
আয়াকের সহিত শেব বিধার হইবে, ইছা আবয়া কেইই কয়না করি মাই। আল আবার
নেই কথা সর্প হইয়া হর্পাত্তিক রেশ অভ্তান করিছেছ। জুব্লচক্র প্রথতন
বংশবর। আভিজাত্যে, বিনরে, বিভার ভিনি আর্শব্রেপ ছিলেন। এই আর্শে স্কলের
আহকরণীয়। এমন আন্বর্ণের অকান-মৃত্যুতে শোক প্রকাশ কয়া দেশের
উটিছ।
পরে অর্ভান্থ সহকারী সম্পাদক শ্রীবৃক্ত প্রবিক্রমাণ ক্রমার মহান্ত্র ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রিক্রমান ব্রারার ব্রারার ব্রারারার

বিনর অসাধারণ ছিল। এই বিনর থাকা অযুক্তই তিনি উত্তরহন্দ সাহিত্য-সন্মিলনের সভাপতির পন গ্রহণ করিতে অস্মীকার করেন। তাঁহার নভ মহারাজের স্মৃতি রক্ষা করিতে হইলে তাঁহার উদ্বেশে তর্পন করা উচিত।

ভারণৰ ব্যালা নহবারী নন্দাদক শ্রীপুঞ্জ কিরণচন্দ্র দত্ত নহাশর বলিলেন,—নহারাজ কুম্বচন্দ্রের সভ্যাবিষ্ণতা, কর্ত্তবানিষ্ঠা ও হিন্দ্রের শ্রন্ধা আদাধারণ ছিল। পোজে প্রস্বীতিত হইরাও তিনি কাত্তর অবস্থার সভ্য ও কর্ত্তব্যের পালনে আটল ছিলেন—আমি প্রভাক করিয়ছি। নিজে পরম ছিল্ ছিলেন; সেই সজে অপরতে হিন্দু-আচার রক্ষণীল ছেখিলে নানা উৎসাহ দান করিডেন। এই ক্টেটি অকুক্ষণীর গুলের উল্লেখ করিয়া পর-লোকপত মহাত্বার উল্লেখ আমি শ্রন্ধানি জিতেছি।

ভংপৰে শীৰুক পাঁচকভি ৰক্ষ্যোপাধ্যায় ৰহাশৰ বলিলেন,—বেষনটি বাব, ভেৰনটি नांश्वरा बार सा । ज्याक्तकान २६ वश्यवर याम-नक्षम, मर्गाना वकाप जावा ध्वक ध्वकात जनस्व । কারণ-Tradition of the Family বঞ্জার রাধা বড় শক্ষঃ সুমূলচক্ত স্থার শ্রেণীর আউ পটার বেগনে বিশেষ বছরান ছিলেন। বিনয় ভিন্ন মহৎ ছওয়া যায় না। মহাত্রাজ কুমুগচন্ত্র নিংহে বিনর বথেষ্ট ছিল। পদম্ব্যানা-জনিত স্থাজের প্রতি দায়িত্ব-বোধ না থাকিলে কোন ৰমাজের নেডা হত্তথা বাম না। ভাষাত্র কে বোধ ছিল। িনি বলিতেন,—পাথী, বোড়া, মৰিমুক্তা, এ সকল চিনি-- কিন্তু মাছত চিনি না ৷ তিনি চমৎকার ভাবে সকলকে বাগিয়ে আনিতে পারিতেন ৷ বেশের প্রতি তাঁহার অসাধারণ প্রীতির জন্ম পিডা পিডাবছের 🗷 বংশের শ্বতি-বিক্ষতিত বলিয়া এই দাৰুণ পীড়া দুইয়াও দেশে ঘাইতে বিশেষ মন্ত্রাপ প্রকাশ ক্ষরবাছিলেন। আক্ষরকার কালে ক্ষরিগারগণের মধ্যে এরপ দেশপ্রীতি বিরল। স্বতি ব্ৰকা ক্ৰিতে হইলে মুত ব্যক্তির নান। ওবের আলোচনা ক্রিয়া জাহার ওপঞ্জল জীবিভ রাধা কর্ম্মতা। পরিবং মহারাজার ছাতি রকার আরোজন করিয়া ভাগই করিবাছেন। নাগালিক, ধর্মবিষয়ক ও আতিবিষয়ক প্রভাবের আলোচনার নেতৃত্ব করিতে বহারাজের किञीय क्क्षणील वृक्ति शाख्या यह नां। वारवक्त स्थापेत शर्वस्थित, गर्वशृक्ता अवायरहान পাথার প্রিভরাক বাধ্বেশ্বর ভর্করত্ব মহাশর প্রভ্রমার সভাপতি ক্রয়ার বড়ই পোডনীয় स्रेवाटक ।

শীৰুক হাঁরেজনাব

বিষয়ে বাংলি বহাবাকা হইলেও চির্টনার এবং উত্ত-মন্ত্র হিলেন।

কানা বৈব্যিক কার্য্যে নিরোক্তি থাকা

নানা বৈব্যিক কার্য্যে নিরোক্তি থাকা

কানা বাংলি ও ব্যক্তানার আতি বিশেষ অনুবাধী

হিলেন। নানা সংস্কৃত প্রাক্ত্রে সন্ধান রাখিজেন এবং অমুস্তিংস্কৃতে বলিয়া নিজেন।

বস্থানসিংহের বঞ্চু ও কেমন স্কুক্তর হইরাছিল। তিনি একজন গাঁট সাহ্ব ছিলেন; তাঁহাকে

পাইয়া লাভি পৌরবাবিত; তিনি লাভির অসভার ছিলেন। তাঁহার অভাবে আনরা বিশেষ

ছঃথিত। থ্যক্তিগত হিসাবে তাঁহার অতাধ্জনিত শোকে আমার পক্ষে আছুশোকের ■■ লাগিবাছে।

ভংগরে সভাপতি মহামহোপাধার পজিতরাজ শ্রীমুক্ত বাদবেশন ভর্কনত্ব মহাশন কর্ক্ত তিনটি প্রভাগ উত্থাপিত হুইয়া সর্জ্যশ্রতিক্রমে গৃহীত হুইল। (প্রভাগ কর্মট পরিশিতে দ্রুইবা)

শেবে সম্পাদক রার শ্রীযুক্ত বড়ীক্সনাৰ চৌধুরী মহাশর জানাইকেন বে, জামরা নিয়লিখিড

আলা মহাশরগণের নিকট ইউতে অনিহার্য কারণে অফুপছিডিজ্ঞাপক ■ সহাস্কৃতিহুচক
শত্র প্রাপ্ত হইরাছি (>) রার প্রীকৃত্ত কিরণচন্ত্র সাম বাহাছ্ব, (২) মহারাজা সার
গিরিজ্ঞানার স্থাব।

সভাগতি মহাশহকে ধন্তবাদ দিয়া সভাতৰ হয় ৷

শ্ৰীকিরণচন্দ্র দ**ত্ত** সহকারী **সম্পাহ**ক। শ্ৰীসভীশচন্দ্ৰ বিভাতৃষণ সভাপতি।

পরিশিউ

প্ৰাৰম প্ৰাক্তাব,----

প্রতিষ্ঠাবান সাহিত্যদেরী, সাহিত্যিকগণের অক্সমিন পূর্তশোষক ও উৎসাহদাতা, কোকপ্রির স্বর্গীর মহাভাগা কুর্বচক্র সিংহ বাহাগ্রের অকাল-মৃত্যুতে ধলীর-সাহিত্য-পরিবৎ প্রগাঢ় লোক প্রকাশ করিতেছেন এবং মহাভাক্ত বাহাত্ত্রের শোকসকও পরিবারের সহিত্ ভাছাদের শোকে ও সমবেদনা প্রকাশ করিতেছেন।

ৰিভীৰ প্ৰকাৰ,—

কি তাবে মহারাকের স্থাতিছিল পরিষ্থ মন্দিরে স্থাণিত হইতে পারে, তাহার ব্যবস্থা
করিবার ---- পরিবারে কার্যানিকাঁহিক-সমিভিকে অন্তর্যোর করা হউক।

ছতীয় প্ৰস্তাৰ,---

এই শোক-সভার গৃহীত মন্তব্যগুলির অনুনিপি সভাপতি মহাশবের বাক্ষরে মহারাজ ভূপেন্ত্রেন্ত্র সিংহ বাহার্যের নিকট প্রেরিড ইউক ।

২৩শ বাহিক, পঞ্ম মাসিক অধিবেশন

৪ঠা পৌৰ, মললবার, ১৩২৩ খলাস্ব

সভাপতি—আচার্যা প্রীমৃক্ত বগদীনচন্দ্র বস্থ

আলোচ্য বিবর—১। পত অধিবেশনের কার্য্য-বিবরণ পাঠ। ২। সমস্ত-নির্মাচন।
৩। পুথি ও পুরকোপ্রার্থান্ত্রপতে কৃতক্ষতা-ক্ষাপন। ॥। নৃতন নিরম পাঠন প্রস্তাব—
"বিনি পরিবনের কোনও
বিনি পরিবনের কোনও পরিবন ইইডে কোনও কার্য্যের করেন বা পরিবনের কোন কার্য্যের করিন ক্ষাপ্রায় করেন বা পরিবনের কোন কার্য্যের করিন ক্ষাপ্রায় করেন করিন করিছেন না।"
এই নৃতন নিরম প্রহণ
বা কার্য্য-নির্মান্ত্র-সমিতির প্রস্তাব। ৫। প্রবন্ধ-পাঠ—(ক)
প্রিম্বর্ক ভারাপ্রস্তার ভারার্যের করেন করিছ কর্মান্তর প্রস্তাব। ৫। প্রবন্ধ-পাঠ—(ক)
প্রম্বর্ক ভারাপ্রস্তার ভারার্যের করেন করিছ বিশ্বর প্রার্থান করেন করেনের সম্বন্ধের প্রার্থাণ প্রবন্ধর দতীশচন্তর রায় প্রম্বৃত্ত মহাশের-লিবিত "প্রার্ভান প্রমানীয়াবার করেনের প্রায় করিছ ক্ষান্তর প্রার্থান করিছেন করিছেল করিছেল করিছেল করিছেল করিছেল করেনের দত্তান করিছেল করিছেল করিছেল করেনের নাম করেনের নাম করিছেল করিছেল করেনের করেনের নাম করিছেল করিরিট নামক পনিক পদার্থ এবং (ব)
বির্বিধান বাব্য মহাশ্র-প্রযুক্ত কতিপার প্রার্থান মন্ত্রান বাব্য বিবিধান

সভাপতি মায়বর বিজ্ঞানাগার্থা ভাকেরে প্রীযুক্ত কগদীশচক্র বস্থ মহাশর কাশন এহণ করিয়া বলিবেন বে, বিশেষ অধিবেশনেও কার্ব্য শেষ হইতে অনেক রাজি হইরা গিরাছে, এখন আৰু অঞ্চর সকল আনোচ্য বিষয়ঞ্জির সম্পূর্ণরূপে আনোচনা হওয়া আৰু নহে। সুক্তরাং প্রবদ্ধবি আগানী অধিবেশনে পঠিত হইকেই ভাগ হয়। আৰু কেবল গত অধিবেশনের কার্য্য-বিবরণী পাঠ ও কার্যানির্কাহক-সমিতির প্রক্রাবটি স্বত্তে আনোচনা হইরা স্ক্রে কার্যা শেষ হউক।

সভাপতি মহাশর জারও বংশন বে, এই সাহিত্য-পরিবৎ মন্ত্রির ছাহাতে কেবল নামে
মাত্র পর্যাবসিত না হর, দেশবাসীর নিকট ধাবাতে নামে আ কর্মে বন্ধির বনিরা প্রণ্য হয়,
আানি সেরপ ইচ্ছা করি। আমি ইহাকে দেশীর ভাবে জ দেশীর প্রথার সারাইন, ইচ্ছা
করিসাহি।

আকঃশর স্থাণতি মহাশ্য বলেন বে, আমার ইচ্ছা ছিল বে, বিজ্ঞানের নৃত্ন আবিদার

আলা বেকীয় আলা আমি আপনাদের নিকট কিছু বলিব। কিছু অপুত্তা নিবছন আমি এও

হিম নে ইচ্ছা কার্য্যে পরিবত করিতে পারি নাই। ববি শহীর স্থ্ বাকে, কীয়ই লে আশা
কার্যে পরিগত করিবার চেটা করিব।

তিনি নুজন 🚃 আনৰ আন্তৰ করিয়া হালা বে, আনি আপনাদিগকে আনক্ষেত্ৰ

সহিত জানাইতেতি বে, ইতিসংখ্যই অনেক নৃতন সভা নির্বাচিত হইরাছেন এবং আর তিন শত টাকা আয়ও বাজিবাছে। আমি ভরণা করি, পরিবংশা এতাক সভাই, পরিবংশা মধুলের ■ চিয়া া চেটা করিবেন।

তিনি আরও বলেন বে, এখন সময় আসিয়াছে, আমাদের আলা শক্তি ব্যর করিয়া আমাদের দেশ, আমাদের সাভ্তুমিকে বড় করিতে ধ্টবে এক ইছাই আমাদের সর্ব-প্রধান কর্ত্ত্বা।

উপসংহারে সভাগতি মহাশর বনেন বে, কোন বিবর দইরা, নাজবের আন জের করিয়া তর্ক-বিতর্ক করা কোনক্রমেই উচিত নহে। বাঁহারা কর্মী, তাঁহাদের মধ্যেই মত-ভেয় হয়। কিন্তু সেই মততেহকে মনান্তরে গরিণত করা উচিত সংহ। আর ক্রিলেরার করিব নাল করাও অনুষ্ঠিত।

সভাগতি বহাশারের বক্তব্য শেব হবলৈ, গত অধিবেশনের কার্যা-বিবরণী পঠি, বৃত্তন সদক্ষ নির্বাচন এবং পুলি
প্রত্যক্ত উপহারদাত্রগণকে ক্ষত্তক্তা জাপন করা হইল। (তালিকা পরিলিটে এইব্যা।) কাহার পর শ্রিকুক্ত রামেক্তর্যুক্তর জিবেদী বহাশর ছংগ প্রকাশ করিরা বলিনেন বে,—আমরা আবাদের বর্ত্তবান সভাপতি মহাশিরকে, অনেক সাধ্যসাধনা করিরা এখানে আনিয়া বসাইয়ছি এবং আমরা গ্রেছার তাহাকে প্রধান বলিয়া মানিয়া সইয়ছি। কিছ হথের বিষয় এই বে, আমরা এখন আবাদের সেই শ্রেছাে
বরেণা গলপতি মহাশিগ্রে
কোন প্রকারেই সাহাব্য করিতেছি না। তাহার বাক্য আবাদের পকে আবেশ; কিছ আমরা তাহার আকে বাক্ত করিবাচিতের কর্ত্তবা লাভার আকে বাক্ত করিবাচিতের এবং আমরা তাহার আকে করিবাচিতের আক্ত করিবাচিতের এবং আমরা অনেকেই তাহাকে প্রতিক্রাভিত নির্বাহিতান। কিছ ম্বংথের বিষয়, আজিও আবরা তাহাকে এক কর্পর্বাহক প্রতিক্র জন্তা, কিছু অর্থ সাহাব্য চাহিয়াছিলেন এবং আমরা অনেকেই তাহাকে প্রতিক্রাভিত নির্বাহিতাম। কিছ ম্বংথের বিষয়, আজিও আবরা তাহাকে এক কর্পর্বাহক প্রতিক্র আনামারের সন্ধান বৃদ্ধির আলায়, বাহিবের লোকের নিষ্ক ইত্তে অর্থ প্রার্থনা
নাই।

বিবেদী মহাপরের বক্ষব্য শেব হইলে সভার নৃত্য নিরম পঠনের প্রজাব উপস্থাপিত হর।
অধ্যাপক শ্রীকৃক হেমচন্দ্র দাশ সাম মহাপর প্রজাবটি উপস্থিত করেন। কিন্ত প্রজাবটি
উপস্থিত করিবার পূর্বে তিনি বনেন বে, আপনাদের সমূপে এই প্রজাবটি উপস্থিত করা
শ্রেছের সম্পাদ্রত মহাপরেছই উচিত ছিল। কিন্তু এই প্রজাবেদ্য অপকে ভাঁছার মন্ত না
থাকার, তিনি ইহা উপস্থাপিত করিতে গারিতেছেন না। স্কৃতহাং আমাকে বাধা হইরা,
কার্বানির্কাহক-সমিতির পক্ষ হইতে প্রজাবটি আপনাদ্রের সমূপে উপস্থিত করিছে হইজেছে।
ইহা বলিয়া হেমবাবু প্রজাবটি পাঠ করিবেন। প্রজাবটি এই,—শ্রেদি পরিষ্কের সেনিও সম্বত্ত
পরিষৎ হইতে কোন কার্ব্যের সাধারতিক বা প্রাণাত্তিক প্রকৃত করেন বা পরিব্যের কোন
কার্ব্যের কন্ত ক্ষিপ্র সভারতে নির্কাহিকসমিতির সভারতে নির্কাহিত হইতে পারিবেন না।"

বাতাব পাঠ লেষ হইলে, ছেমবাবু নিয়লিখিডরূপে বেতন, এটালাউন্দা আ কমিশনের ব্যাধ্যা করেন। তিনি বলেন, বেতন মানে—মান্সক কোন নির্দিষ্ট পরিমাণ অর্থ এছণ করিবা কার্য্য করা। এটালাউন্দা মানে—সময়মত কার্য্য করিবা মানিক বা বাংস্বিক কিছু কিছু অর্থ এছণ করা। ইহা কতকটা পেলিখানের গ্রায়। কনিল্ল মানে—আনামী টাকার উপর শতকরা, হাজার-করা কিছা প্রতি টাকার কোন নির্দিষ্ট পরিমাণ অর্থ এহণ করা। এডিট্
যানে—কোন নির্দিষ্ট পরিমাণ অর্থের চুক্তিতে নির্দিষ্ট কার্য।

অভ্যাপর কেম বাবু বলেন, যধন পরিষদের শৈশব ও বালা অবস্থা ছিল, যধন পরিষ্ কেবল গড়িয়া উঠিডেছিল, ভখন বেডন, কমিশন, এ্যালাউন্স অথবা এডিটিং ছি. কোন কার্য্য-নির্বাহক-দনিভিত্র সভ্য অথবা কোন কর্মকার্মককে নেওয়ার প্রয়োজন ছিল। তথন এমন একজন লোক ছিলেন, বিনি পরিষদের অঞ্জুবই বাল করিয়াছিলেন, তাই উাহাকে এটালাউক্স দেওয়া হইডঃ প্রিবদের এখন আরু যে অবস্থা নাইঃ এখন অনেক সূত্র আহেন, বাঁহারা বিনা প্রদায় পরিষদের সেবা ও কার্য্য করিতে প্রস্তুত আছেন। এয়ালাউল আদি না হিৰা, ৰখন কাৰ্য্য কৰিবাৰ লোক আমৰা পাইডেছি, তখন উহা কেন দিব 🔊 বিশেষতঃ ধদি কোন কৰ্মকারক অথবা কাৰ্য্য-নিৰ্মাহ্ত-স্থিতির কোন সভা এই ভাবে অ**র্থ** अहन कविहा कार्या करबन, करद व्यक्तक अगर कावसक इटेशन अवः डीहात ध्येवन हेस्हा থাকিবেও তিনি সম্পাদক, কি সভাপতির বিপক্ষে খোন মত দিতে পারেন না এবং তিনি সম্পাদক মহাশয় প্রভৃতির কোন অন্তায় কার্য্যের প্রভিবাদ করিতেও কুট্টিভ হয়েন। ঞালাউল আদি গ্রহণ করিলে, তাঁহার ঘাধানতা থাকে না। সে কারণ আমরা এই **প্রস্তার** এছণ ভাষসকত বলিয়া বিবেচনা করিতেছি। ছুই শ্রেণীর সভ্যের ধারা কার্য্যনির্বাহক-নমিতি গঠিত হইয়া থাকে; যথা—Ex-officio এবং সাধারণ সমস্ত। সকল সন্তা-সমিতিতেই আমার এই প্রকাবের স্থর্ক নিয়বাবলী দেখিতে পাওয়া বায়। এ সম্বেদ্ধ এসিরাটিক লোসাইটার নিয়মাবলী **আরও** কঠিন। যদি কোন কোক এগিবাটক লোসাইটা হইতে বেতন প্রাপ্ত হয়েন বা কোন প্রকার কর্য প্রহণ করেন, তবে তিনি ভোট দিতে পারেন না।

শীষ্ক বাবু রাধালদান বন্যোগায়ার মহাপথ সম্পূর্ণরূপে মূল প্রভাব এবং হেম বাবুর বক্ষুভার সমর্থন করেন। অভঃপর প্রীযুক্ত বাবু হীরেন্দ্রনাথ কর মহাপথ এই প্রভাবের প্রতিবাদ করেন। হীরেন্দ্র বাবু বলেন যে, কার্য্য-নির্কাহক-সমিভিতে বথন এই প্রভাবটি উঠিরাছিল, তথন ইহার পক্ষে ৯টি এবং বিপক্ষে ৭টি ভোট হইরাছিল। কিন্তু এই সাত কনই সাহিত্য-পরিষদের গঠনকালে ইহার ধানীস্কল্প কার্য্য করিয়াছিলেন। তথাখো আমি একজন। বাহারা হাতে করিয়া এই সাহিত্য-পরিষধকে গাড়িরাছেন, তাহারা যেক্ষপ ভাবে আ যে প্রকার প্রাবের হানে পরিষদের মঙ্গল চিন্তা করিবেন এবং ভাহাদের পক্ষে ভাহা বভটা স্বাভাবিক, ভড়টা আর কাহারও পক্ষে নহে। কারণ, সাহার্য বে বস্তুকে হাতে করিয়া গড়ে, তাহাদের সেই বস্তুর উপর আমা অধিক হয়। সে বস্তুকে ভাহারা প্রাণ অপেকাণ্ড প্রির আমা মনে

ভাবে। আৰম্য বাহারা সাহিত্য-পরিবদের ধানীয় কার্য্য করিমছি, ভাহারা কেইই ত এক দিনও এমণ কোন ক্রান্ট দেখিতে পাই নাই, বে জক্ত আছ এই প্রস্তাব গ্রহণ করা বাইছে পারে। বরং মনে হর, ঐ ভাবে কার্য্য চালাইলে, সাহিত্য-পরিবদের ক্রমেই উন্নতি হইবে। আৰম্ভ করা বাব্র কথা বলিয়াহেন। কিন্তু আমি বখন সোক্রেটারী বা সম্পাদক ছিলাম, ওখন তিনি ক্রোমকেশ মৃত্তকা ; বেতন গ্রহণ করিমাও আবদ্ধক হইলে আমার বিদ্ধান্ধ ভোট দিতেন এবং আমার কথার প্রতিবাদ করিছেন। ছেমবাবুর এই প্রস্তাবের মূলে ব্যক্তিগত কটাক্ষ রহিয়াছে। আমি অভিশন্ত আহিরকভার সহিত্য বলিতেছি যে, এই প্রস্তার ব্যক্তিগত মনোভাব লইবা সাহিত্য-পরিবদের কার্য্যে বোগদান করা কোন ক্রমেই উচিত নহে, বরং এই প্রস্তাবটি পরিত্যক্ত হওয়া উচিত।

অতঃপর শ্রীযুক্ত কালীপ্রসান দালগুল্প নচাশ্ব, শ্রীযুক্ত ক্রিরেজনাথ দন্ত মক্লেরের প্রতিবাদের সমর্থন করেন। বক্তা বলেন,—শ্রীযুক্ত ক্রেমবাবু বলিয়াছেন যে, সর্ব্বেই এইশ্বপ নিশ্বম আছে, কিন্তু আমি ভাকা আহিন বলৈন বলৈন করিছে পারি না। বক্তা দুটাশ্বম্বরূপ এই ছানে "আভীয়-শিক্ষা-পরিবদের" উল্লেখ করিয়া বলেন যে, সে ছানে আমন্ত্রা চাক্রী করি এবং শ্রীযুক্ত ক্রিক্সে বাবু প্রভৃতি অনেক টাকা দিয়াছেন ও দিয়া থাকেন। সেখানে আমন্ত্রাও বেমন ভোট দিবার অধিক্যারী, ভাঁহারাও সেইবুপ। আবেলাক ক্রেমে বাবুব বিক্তন্তে ভোট দিয়া থাকি। স্থভাবং দেখা ঘাইভেছে যে, হেমবাবুর প্রস্তাবিত এই নৃত্রন প্রস্তাবিত গ্রহণের বোনই আবক্ত ভা নাই।

প্রীযুক্ত বাবু বিষয়লাল দত্ত ১হাণর প্রীযুক্ত হারেক্ত বাবুকে সমর্থন করেন। তিনি বলেন,—
এই নৃত্তন প্রকাবের বিনি প্রস্তাবক, তাঁহার কথা আহে। যুক্তিসকত নহে। তিনি আরও
বলেম বে, আমি বখন "জুলোজিক্যাল গার্ডেনের" স্পারিপ্টেণ্ডেণ্ট ছিলাম, তখন কার্য্যকরী
সমিতিতে আমিও মেনার ছিলাম। আবেশ্রক হইলে কর্মাণ্যকের বিপক্ষেও ভোট দিতাম।
বখন কোন কর্মচারীর কার্য্য কিলা বেতন রুদ্ধি সম্বন্ধে আলোচনা হইত, তখন কেবল সেই
বাজিই, সেই স্থান ভাগে করিতেন। ইহাতে কথনও কোন অফুবিধা হয় নাই।

অন্তঃপর শ্রীযুক্ত প্রকাশচন্ত্র মন্তুমনার মহাশর বলেন বে, শ্রীযুক্ত হেমবারু বে কথা বিদ্যাহেন, ভাষা অভিশন্ন মৃশ্যবান্। শ্রীযুক্ত হারেলাথ দণ্ড মহাশন যে প্রতিবাদ করিয়াহেন এবং শ্রীযুক্ত কালীপ্রসাম বাবু ও শ্রীযুক্ত বিজয় বাবুণর বে সকল বৃদ্ধি দারা ঐ প্রতিবাদের অন্ত্রোধন আ সমর্থন করিয়াহেন, আনার মতে ভাষা ঠিক নহে। অনুসন্ধান করিলে বেনম কালীপ্রসাম বাবু ও বিজয় বাবুর সপক্ষে ভুই একটি দৃষ্টান্ত প্রাপ্ত হওয়া বার, সেইরূপে শ্রীযুক্ত হেমবাবুর গক্ষেও বথেই পরিমাণে দৃষ্টান্তের অভাব আ মা। অধিকাংশ সভা-সমিভিন সদস্তর্গ ও কর্মাধাকর্পন অবৈভনিক ভাবে কার্য্য করিয়া থাকেন। মৃত্যাৎ আমি করি, শ্রীযুক্ত হেমবাবুর প্রকাশিক বাহাতে অন্তক্ষার সভাব গৃহীত হন্ত, আপনারা সে দিকে দৃষ্টি হাবিবেন।

পতংশর জীবৃক্ত রামেক্রস্থলর তিবেদী মহালয় বনেন যে, পাজি আমার বড়ই আমালের দিন। আমি আরু ২০ বনের পরিবদের সহিত লিপ্ত আছি: পরিষ্ণার নানা বিভাগে আমি কার্য্য করিয়াছি এবং এগনপু কার্য্য করিছেছি। মধ্যে করেক বংদর মাত্র, শারীর অন্ধৃত্যার ক্ষপ্ত বিশেষভাবে পরিষদের কার্য্য করিছে পারি নাই। জাজি আমাকে পিজরাগোলে পার্যাইবার ব্যবহা ইইতেছে, তাহাতে আমার চংগ ও অভিমান নাই এবং ভাহাতে আমি অপমানত বোধ করি না। পরিবং আমার বড়ই প্রিয়। আমি ঝাড়বরনার হইতেও রাজী আছি। গত বংদর আমি সহকারী সম্পাদক হইতেও রাজী হইয়াছিলাম। কিন্তু একটি বিশ্বে আমার মনে বড়ই ব্যব্য কার্যিরাছে। অর্থাৎ আমার কান্ত করিবার প্রবহন ইচ্ছা সম্পেক্ত আমার থারা পরিষ্যুত্বর কোন কান্ত করাইয়া না লইয়া আমাকে আপনারা পিজরাগোলে পার্যাইডে চাহেন।

কিন্ত এই হংখের উপরেও আদি আমি বড়ই আননাস্থলৰ করিছে। তাহার কারণ এই বে, আমার বছুবর্গ পরিষদের হিতাকাজনী হইরা বিনা পারিশ্রমিকে কাল করিতে রালী হইরাছেন। আমি যখন সম্পাদক ছিলাম, তখন হেমবান্ধ প্রায় সংকারী সম্পাদক প্রার্থ হইরা, আমি অনেক কাল কবিতে সক্ষম হইরাছিলাম। গ্রুখের বিষয়, আদি আথাকে ভীহার প্রস্থাবের বিপক্ষে গাড়াইতে হইভেছে।

সকল কার্যোই অবস্থা বুঝিরা ব্যবস্থা করিছে হয়। আমার মনে আলকা হইডেছে বে, প্রস্তাবিত প্রস্তাব গৃহীত হইলে, পরিষ্ণের কার্যা ভালভাবে চলিবে না। আমার মনে হর, ■ সকল কার্যো জাইন কান্থনের ক্বরণ্ডি করা উচিত নহে; এখনও সে স্ময় উপস্থিত হর নাই!

পরিবদেশ কর্মীর অভাব; কার্যোর অভাব নাই। বাহারা বিনা বেডনে এবং বিনা পারিশ্রনিকে কার্যা করিছে ইচ্ছুক, উাহারা ইচ্ছা করিলে পরিবদের অনেক উপকার করিছে গারেন। আমি কানি, অনৈক ভদুলোক প্রবেশিকার একটি টাকা দিয়া, ৩৪ মাদের মধ্যেও তাইতে পারেন নাই। ইহা কি ক্র্মীর অভাবের জন্ত নহে ? পরিবদে অনুসন্ধান ক্রিলে একপ দুঠান্তের অভাব হইবে না।

একাবিত বিধি সমীচীন এবং যুক্তিযুক্ত হইলেও এ প্রস্তাব বিধিবছ করিবার সময় হইরাছে কি না, তাহা চিন্তা করা আবেন্ত হ। সভাপতি মহাশন্ন তিন মাস পূর্বে এই স্বিবদের আল কিছু সাহাব্য চাহিনাছিলেন এবং আমরা অনেকেই তাহাকে আনা দিরাহিলান। কিন্তু এবন∉ ভাহার কিছুই হন্ন নাই। ৮ব্যোমকেশের মত বা তজ্জা কোন ব্যক্তিকে সভ্য রাধিরা এবং ভাহাকে কিঞ্ছিৎ আর্থিক সাহাব্য করিলা কার্য্য করিলে ক্ষতি কি দু ভনিতেছি, লোকের আভাব নাই, কিন্তু কাজ ত কিছুই হইভেছে না। এককালে আনার এনন ক্ষতা ছিল, বধন নিয়ের্বভাবে সাহিত্য-পরিবদের অনেক কার্য্য করিয়াছি। দশ, বিশ হালার টাকা পর্যান্ত সংগ্রহ করিয়া আনিয়া কানিয়া কিলাছ। কালক্ষে আদি এখন বৃদ্ধ হইরাছি। এখন বিশ পরিবদ্ধ

ভাষাকে কিছু কিছু কমিশন দেন, আমি তাহা লইতে রাজী আছি এবং তাহাতে আমার ভাগমানই বা কি আর আশনাদের তাহাতে জ্ডিই বা কি ৭

কাৰি গাণাত স্থুন মাটার। আৰি বেখানে কাৰ্যা কৰি, গেই বিপণ কলেজের পরিচালন-ক্ষিত্রীর উপর ক্রন্তা। নেই বিপণ কলেজের পরিচালন-ক্ষিত্রী, করেজ জন মবৈতনিক ভ্রুলোক এবং করেজ জন বেতনভোগী কর্মানীর সমবারে গঠিত। আমি তল্পণে একজন। কৈ, ভাষাতে ভো আমাদের কার্যের কোন ক্ষতি হয় না পূ আমাদের বাগা ক্ষতি কোন কার্যের জালি ক্ষতি হয় না পূ আমাদের বাগা ক্ষতি কোন কার্যের জালি হয় হাছে বা কোন কার্যে স্টাক্রণে সম্পন্ন হয় নাই, কলেজের l'ounder মহাশন্ন ক্ষন্ত এক্সপ কথা বলেন নাই। পরিবদে এই অস্তাব প্রহণের এখনও সময় আলে নাই।

অতঃপর ত্রীযুক্ত হেমচন্দ্র দাশগুপ্ত মহাশর উঠিয়া বলিলেন বে, শ্রীযুক্ত হাঁরেল্ল বাবু **তাঁহার** বক্তু তার বলিয়াছেন যে, "ব্যক্তিবিলেষকে আক্রমণ করিবার জন্ত ই আমি এই প্রকার উপস্থিত করিবার প্রেই বলিয়াছিলাম বে, কোন ব্যক্তিবিশেষকে লক্ষ্য করিয়া, আমি এই প্রধার উপস্থিত করিবার পুর্বেই বলিয়াছিলাম বে, কোন ব্যক্তিবিশেষকে লক্ষ্য করিয়া, আমি এই প্রধার উপস্থিত করিতেছি না। খ্রীরেল্ল বাবুর এইরূপ বলা নিভাগুই অন্তার হইয়াছে।

আওপের সভাপতি মহাশর উঠিয় বলিলেন যে, আনি একণে করেকটি বিষয় চিন্তা করিতেছি। আমার প্রথম চিন্তা এই যে, অতঃপর আমার সভাপতি থাকা উচিত কি না। আরণ, কোম কোন সভা যখন কাহাকে কাহাকে পিলরাপোলে পাঠাইতে চাহিতেছেন, তথম আমি তাঁহাদের হুইরা কি বাধ পড়িব ? তাই ভাবিতেছি, অভঃপর আমার স্থান কোথার !

ছিতীয়তঃ এবিয়াটিক সোগাইটীর দৃষ্টান্ত এখানে থাটে না। কারণ, পরিষং আহাদের বেশের দেশী সভা। এখানে কোন বিদেশী আদর্শ সইয়া কার্যো প্রস্তুত হওয়া সম্ভব নহে। বেছেত দেশ, কাল ও পাত্র-ভেলে এবং অবস্থা বুরিয়া ব্যবস্থা করিতে ইইবে।

পরিষদে যে সমস্ত পুস্তক ছাপা হইয়া শ্রহাম-ছাত হইয়া পঞ্জিয়া রহিরাছে, ভাহাতে পরিষদের মর্ব্যালার হানি ইইডেছে। কিন্তু উপযুক্ত কলার আভাবে কার্য্য ইইডেছে না। প্রতরাহ সকল দিকু ভাবিরা কার্য্য করা প্ররোজন। বাহা ইউক, আ সম্বন্ধে অনেক বাদ-প্রভিবাদ ইইয়াছে এবং এখন রাজিও অনেক ইইয়াছে। এখন ইহা শেষ করা উচিত। সাহিত্য-পরিষদের সভ্য নহেন, এমন কেহ যদি এই সভায় উপস্থিত প্রকেন, তাঁহার নিকট আমার অস্বরোধ, তিনি বেন ভোট শিবেন না। আমি প্রথমে প্রস্তাবের পকে বাঁহাছের মতে আছে, তাঁহাদের ভোট গ্রহণ করিয়া প্রস্তাবের বিশক্ত মতাবলহীদিগের ভোট গ্রহণ করিয়।

সভাপতি মহাশনের এই কথার পর কি ভাবে ভোট গ্রহণ করা হইবে, ভাহারই আলোচনা আরম্ভ হয় ৷ তথম হেমবাযু বলেন বে, আপনি অত্মতি করিলে, ভোটযাভারা আপনার সমুধ দিরা, হলের দক্ষিণ দিকে চলিয়া বাইতে পাথেন এবং সেই সময়ে আপনি ভোট-প্ৰনা করিতে পাথেন। তথন এই ভাবে প্রভাবের পক্ষে ■ বিপক্ষে, এই উভয় দলের ব্যক্তিগণের সংখ্যা স্থানা করা হয়। প্রভাবের পক্ষে ৩৭ জন এবং বিপক্ষে ৩৮ জন ভোট দিরাছিলেন। বিপক্ষে এতদভিবিক্ষ আর কতিপা ব্যক্তি ছিলেন, অনান্ত্রক বোধে ভাঁছাছের ভোট লওরা চইল না। ইয়ার পর সভাপতি মহাশর, প্রীকুক্ত হেমবাবুর প্রভাব গৃহীত হইল না বলিয়া বিজ্ঞাপিত ক্রিলেন। আতঃপর সভাপতি মহাশরকে ব্যারীতি ধ্রুবাদ দিরা সভার কার্যা পের হইল।

শ্রীকিরণচন্দ্র দত্ত সহকারী সম্পাদক। শ্রীসভীশচক্র বিভাভূষণ সভাপতি।

পরিশিষ্ট--প্রস্তাবিত নৃতন সদস্থ

দ্যৰ্থ ক 의명 역부 मनञ শীহরেক্তনাথ থিতা বি এশ প্ৰীৱামক্ষণ সিংচ **এছেনেজনাথ খোষাল** উকীল, ছোট আলালভ, ৯০।১ মেছুৰাখালার ব্লীট্র। बीश्टबङ्ग वकुटर्समी "বিরক্ত-মন্দির", ভরতপুর, রাজপুতানা । গ্ৰীজীবানন্দ মন্ত্ৰিক जीवानीनाथ नमी শ্ৰীমলিমীর্শ্বন প্রতিভ অপার ফ্রাট, ইট এও, ১৬২ বছবাজার খ্রীট্র। **बिहातकृष्ठ पूर्वा**शीशाम সহঃ সম্পাদক, বীরভূষ অমুসন্ধান-সমিতি, হেত্ৰপুৰ বাজবাটী, হেত্ৰপুৰ, বীরভূন। ইক্লিঞ্চৰান্ত ভটাচাৰ্য্য **এই**ৰ্মাক্তানাৰ সাৰ জাম হনলৈল, পোঃ মহাদেবপুর, রাজসাহী। ভাঃ ভাবতুর রকুর নিজিকী - ত্রীংগ্রহন্ত দাণভথ জীননীগোগাল মধোগালায় ১৪১এ বুকারার বাবুর ট্রীট_। **জীইজনামান্ত স্থোগাবার डेकीन, वर्द्धमा**म । ঞীশশিক সুখার নিয়োগী শ্ৰীক্তরেজনাথ কুমার **जिरहरहत्व वर्गनं कर्छ** मस्त्रीय कामची कुन, महत्राय, बद्रवनमिश्हः

덕명(14	স ম ৰ্থক	_
ত্ৰী ওকদান স ৰকার	<u> ইংরেজনাথ কুমার</u>	শ্ৰীবিনোদবিহারী বার
		একাউন্টান্ট, পি, ভব্লিউ, ভি,
		নং ১ <mark>, কৰিকাতা ডিকিনন।</mark>
,		শ্ৰীকানকীনাৰ বন্দ্যোপাধায়
	জ্মিনাত, গ	ভট্টাচাৰ্য্য কামানপুৰ, চাকৰহ, নদীয়া ।
শীশুরেক্সচন্দ্র বন্ধ	*	क्षेत्रकृत्रन यात्र, कोर्नि
		২৮ জেলেটোলা লেন।
υ	a)	श्रीद्रमध्य हक्तवर्धी
		৪ বাহিব সীর্জাপুর রোড।
*	,,	শীমবিনাশচন্ত্র বন্দ্যোপাধ্যার
		৭ পীতাধর ভট্টাচার্ঘা লেন, গড়পার,
		কলিকাভা।
29		শীৰণীজনাথ সরকার
		১৩৩ বাহির মীর্জাপুর রোড ৷
	•	क्षेनान(वहांद्री वस्
		২০ জগদাব 📖 লেন।
pt		শ্ৰীরপুনাধ দক্ত
		 শগরাথ দত্ত খেল।
औ बिरमांबदिशंत्री क्ख		শ্ৰীক্ষমিয়নাথ রায় বি এ
		৮ ভূবনযোহন সরকার গে ন।
	*	শীচাক্ষচন্ত্ৰ বন্ধ এম্ এ, বি এস্
	व्यक्ति स	টিং মৃব্দেক, মূপী হাউদ, বরাহনগর।
	•	জীনূপেক্সকুষার রার চৌধুবী
		वशीशंत्र, ग्रेकी
		শ্ৰীহিরপকুমার খোব, স্বমীদার
		(धावनार्त वाणि, ठाकी, २८ शवना।
Mr.	*	ৰাম শ্ৰীনতোজনাৰ চৌধুনী
		মিউনিসিপালিটির চেয়ার্যান,
		कमीनात्र, ठीकी, २८ भः।
		टीरवाश्चिम्ब कूषू, बनीगात
		हाको, २ ८ १: १

এ তাবক	নুহৰ্ব ক	স্কুজ
ইউদেন্দ্রনাথ কাঞ্চিনাক	গ্রীস্বেরস্থার কুষার	শ্ৰীকৈলাশনন্ত হাস
		চীক স্থপারিটেঙেন্ট, কন্ট্রোলার আফিস,
		ৰিলং, আদাৰ ।
		তীংপ্রন্ত ক্র মিত্র
		or P. C. Mitter Esqr.
	E. A	. Superintendens. Survey of India.
	9-3	Camp Dibrugarh, Assam. উদ্যোজনাথ দাশগু প্ত
শ্ৰীনবিধীরশ্বন প্রতিত	ঐ⊯ীরেছবিহারী সেন	
		C্৹ কে বি দেন এও আছার্স,
		৬০ মীর্জাপুর ষ্টাট।
শ্রীক্ষার চ ট্টোপাধ্য		শ্রীগিরিশচন্দ্র বৈত্র এপ্. এম্, এম্ Asst. Surgeon, Juvenile Jail, Alipur.
		C/o শ্রীসভাশচক্র মৈত্র, এগিষ্টান্ট জে শার।
শ্রম্পরাধ হত		ী কমলা প্রদান দম্ব, স্বা শার
		বৈষ্ণপুর গ্রাম, পোঃ টে'না, মূর্নিদাবাদ।
20	26	ভূমিতা পোগাল ক্ ত্ৰ এ শ্ এ
r		ভগীরথপুর উচ্চ ইংরাজী স্কুলের প্রধান শিক্ষক,
		পোঃ ভগীৰপপুৰ, মূর্লিনাবাদ।
_		শ্রীশবংকুমার দক্ত, দেক্তেটারী
Pr.	, and the second	জে, আরু, সমিভি, পোঃ টে'রা, মূর্শিদাবাদ।
		औद्रावस्थान त्यासी, ध्वयक्
•	-	নারামণপুর সমিতি, নাডাভাঞ্চা, পোঃ নহীয়া।
	_B	খ্রীক্ষিনীকুষার 📖 এম্ এ
æ	2	অধ্যাপক, মেদিনীপুর কলেক, মেদিনীপুর।
গ্রিমধ্যেদ্রাখ মহান্তা		- শ্রমহেন্দ্রনাথ রার
contractor and a section	39	সাবরেজিষ্ট্রার, নারামধ্যত, মেদিনীপুর।
শ্ৰীৱাৰালয়াস বন্দ্যোপাৰ	্যায় জীবস্কুরন্ধন বাধ	শ্ৰীধীবেজনাৰ গণোপাখ্যাৰ বি এ
contract and can	244 -444	>७- मू ङा ताय तात्व ही ह ्।
শ্ৰীউপেঞ্চলাল বড়ুখা	তীৰ্ধেস্ত্ৰনাথ মুখোপা	
क्षिकट्राधानसम् सस्रोता	-4-46-401-41-41-41-11	৪০ মোহন বাগান রো, রাউজান, চইপ্রায় ৷
		श्री वीरत्रसङ्ख्य वस्
*		व्य राष्ट्रकार करण पर स्वित्याद्यत क्वीहे
		का यम प्रकारण आहे। क

শ্ৰ ন্থাৰ ক	স্ বৰ্ণক	mm .
শ্রীহেম চক্র দাশ রর	डीवरत्रक्षश्च हट्द्वानाचाह	শ্ৰীহেদনাৰ বাব
		Teligraphist, সেকীল টেলিগ্রাক
		আফিদ, ফ লি ফাভা।
*		শ্রীউমান্যথ রায়
		দেন্ট্রাল টেলিঞাফ আফিন।
আবতীস্রমোহন রায়	ত্রীহেমচক্র দাব্ধপ্ত	শ্ৰীরাঞ্জেনাথ সেন বি এল্
		০৬১ কর্ণভন্ন স্থাট্।
*		শ্ৰীক্ষমনেত্ৰনাথ বাব
		২ - জে ড়াপুকুর স্বোরার ।
	ь	শ্রীপ্রমূপাচরণ দেন
		৫০ বংরাশুসী খোবে র খ্রীট া
ভাঃ জগণী লচঞ বহু	রার যতান্ত্রনাপ চৌধুরী	धम्, चात्र, माम, द्यां विष्टाद
		৮ ওল্ড পোট আফিন ফ্রীট।
	3	জি, সি, মগুল
		৯ ০ ৭০এ আগার সাস্কৃতার রোজ :
	s	वियामिनी अनाम भरताभागाम
		১ গ সাপার সাঞ্লার রেভি।
		এস্. এম্. বহু
		aও আগার সাকু লার রোভ ।
n	25	নিঃ ভৌমিক
		টেলি ঞাক স্টোর্স।
94"	307	শ্ৰীপনস্তৰাথ বিজ
		সাবজন, পথা।
.00		ৰে, এন্, ৱাৰ আ ই, সি, এস্,
		स्कारी द्रीच ।
গ্ৰীশরচক্ত পুরকারস্থ		ত্ৰী শীলচন্দ্ৰ নাইয়া
		গোপান নগৰ, মধুরাপু র পোঃ, ২৪ পঃ।
•	27	এখনমুমার হালগার
		ভগৰতীপুর, খাটেশ্বর পোঃ, ২০ পঃ।
		শ্ৰীপশুপতি হালধার
		বৌদতপুর, কলতা পোঃ, ২৪ পঃ।

बाद्यांतक	সমর্থক	-
শীব্যচন্দ্র পূরকারত্ব	শ্ৰীবাৰ ঘতীক্ষনাথ চৌধুৰ	ই প্রিপোল6ক্স বল্পোপাগার
		নায়েক, মড়িগলা লাট, মড়িগলা, ২৪ শঃ।
		ই ্টিংপক্তনাথ হাল্ দায়
		হরিশ ডালা, ডারমণ্ড হারবার পো:, ২৪ গ: ।
মহখন শহীহয়াহ		ক্ৰীয হনাথ বস্থাৰি এল
		বসিরহাট, ২ ৪ পঃ ।
м		श्रीनीरवक्षनांच कोशूबी वि धन्
		逐 選
		দ্ৰীপণেশচন্ত্ৰ চক্ৰবৰ্ত্তী বি এপ্
		a a
শ্ৰীৰহেজনাথ মহাত্তি	ঐরামক্ষণ দিংহ	<u> </u>
		"গোবিক আশ্রম", পটা শপুর, মেদিনীপুর।
ডা: আ কুল গ ড় র গিদিব	ñ .	ই হুনীভিত্যার পাল
		২৬ ।১ খান্মোহন দটোর গেশ ।
		প্ৰী অক্ষ কুমার বস্থ বি এ ল্
		সাৰ ভেপ্টী শ্যাজিষ্ট্ৰেট, ৰসিৱহাট, ২৪ শঃ।
🕮 নলিনীরঞ্জন পঞ্জিত	min	শ্ৰীসন্দৰ্শেখন চংট্টাপাধ্যাৰ
		তঃ মেছুগবোজা র খ্রীট ্র
	سينه مخم محسد	rana makamat

উপহারপ্রাপ্ত পুস্তকের তালিকা

		•	
	প্রহাতা	গুরুকে?	। नाम
ी प्र	অগদীশচন্দ্র চট্টোপাধ্যার	5 I 🚧	শ্বারিকাঃ
		२। नि	ৰ স্ ত্ৰবাৰ্ত্তিকং
*	রাধানাথ পভি	ত। হে	· निवाफी
-	কালীহর বিভালকার	8 🕏	শানমিশ্রবংশম্
	সতীপ্রসাদ দেনগুপ্ত	৫ আ	थि-नग ्क-न १ ६३ ५
•	ভারাপ্রসর মুখোণাধ্যার	बर	জ্ঞানী আমনিবাসী মূভ ভৈরবচজ ন্যাপাধ্যায়ের সংক্ষিপ্ত জীবনী ঝ লব-কথা
•	ভা: অমৃতধান সরকার	fo	deport of the Indian Association rethe Cultivation of Science or the year 1914.

ঞ্চাতা		প্তকের নাম
Supdt. Govt. Printing	F	Monthly Statistics of Ootton Spinning and Weaving in Indian Mills, September 1916.
Secretary, Smithsonian Institution	۱ د	Annual Report of the Smithsonian Institution, 1915.
D_0	3+1	Dynamical Stability of Aero- planes.
Do	>>	Sources of Nitrogen Compounds in the United States.
D_{θ}	150	Smithsonian Miscellaneous Collection Vol. 65.
Do	201	Cambrian Geology and Paleon-tology.
Officer-in Charge, Bengal Sectt, Book Depot.	5 B]	
Supdt, Govt, Printing, India	261	**
Officer-in-Charge, Bengal Sectt, Book-Depot	591	Report on Inland Emigration for the year ending 30th June, 1916.
Agricultural Advisor, Govt. of India, Pussa	\$43	Report of the Agricultural Research Institute and College, Pussa, 1915—16.
শ্ৰীৰুক্ত সতীপ্ৰসাৰ সেনগুগু		A rough sketch of the antece- dents, family history, official career and legalty etc. of Sati Prosad Sen, 1915.

২৩শ বাৰ্ষিক, ষষ্ঠ মাদিক অধিবেশন

२०१म (भोग, ১०२०, व्हे कांच्यातो, मननवात, त्राति १३० हो।

উপস্থিতি-

মহামহোপাধ্যার ডাঃ খ্রীমৃক্ত সতীশচক্র বিভাত্বৰ এম্ এ, পি, এইচ্ ডি (সভাপতি)

- রাঞা ু স্ববীক্রনাথ রায়
 - ্ব রাথালগাস বক্ষোপাব্যায় এখ্ 🔳
 - কালিদান নাগ এদ্ এ
 - ু ডাঃ আবহুণ গৰুর দিদিকী
 - ু ন্লিনীয়খন পভিভ
 - ু পাশ্লালাৰ বাক্লীওয়ালা দিগ্ৰুৱীয় কৈন
 - ্ব ক্ষেত্ৰনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়, কাব্যক্ঠ
 - ু কালীচরৰ নিজ
 - ু বামী গুৱানৰ ব্ৰহ্মচাৱী
 - ু ভারাপ্রসন্ধ খোষ বিভাবিলোয় বি এ
 - ু বোগেজকুমার বেনগুর
 - ু হেম্চজ দাশধ্য এমু এ
 - ্বাণীনাথ নন্দী
 - ু ব্দস্তরপ্রন রাম বিষয়রভ
 - ্ ভারাপ্রণর ভট্টাচার্ব্য
 - ু স্থ্যকুষাৰ পাল
 - ু ভোশানাথ কোঁচ
 - ু দেবেজনাৰ খোষ
 - ু উপেত্ৰনাৰ উপাধাৰ

শ্রীষ্ট বার বভাস্তবাধ চৌধুরী প্রীকর্ত, ভক্তিভূবণ, এম্ এ, বি এল্. (সম্পাদৰ)

🚆 किस्राध्य २७ (जरूकांत्री जन्मानक)

আলোচ্য বিষয়—>। গত অধিবেশনের কার্যাবিষয়ণ পাঠ। ২। প্রেক ■ পূথি উপহারহাত্বপানে হওজতা জাশন। ৩। সরক নির্বাচন। ৪। প্রবন্ধ-পাঠ—(ক) প্রিযুক্ত রাধালয়াস বন্ধোগায়ায় এই ■ বহানবের 'বিপ্রহণাগাহেরেই ছাল্রনাসন," (ব) প্রিযুক্ত ভারাভাষাভাষ্যি সহাশয়-বিশ্বিত "প্রীযুক্ত বোগেশ বাবুর শব্দেশে সহক্ষে বন্ধান, (গ) প্রীযুক্ত

সতীশচন্দ্র রাধ এম্ এ মহাশর-লিখিত "বিধার রখুনাথের সতানারারণের পুথি" এবং (খ) ত্রীযুক্ত ক্রীবেজকুমার হার মহাশয়-লিখিত "প্রাচীন পরীসংসীত ও কবিভা"। ৫। প্রাবশন---(ক) প্রীযুক্ত কেন্দ্রের লাগ গুপ্ত এম্ এ মহাশার কর্ত্ত্তক "ক্লেলেডিট" নাম ক ধনিক পদার্থ এবং (খ) ■ (গ) প্রীযুক্ত সরোজকুমার নাগ চৌধুরী এবং প্রীযুক্ত নাগজনাথ বোষ মহাশার-প্রাণ্ড কবিপার প্রাচীন মুদ্রাং ৬। শোকপ্রকাশ--- ৮৮৩ীচরণ বন্দ্রোপাধ্যার মহাশারের মৃত্যুতে। ৭ 1 বিবিধ।

কম্পাদক ীৰুক্ত গায় ঘতীক্ষনাথ চৌধুৰী মহালয়ের প্রস্তাবে এবং সর্বসন্মতিক্রমে মহাল মহোপাধ্যায় শ্রীৰুক্ত স্তীশ্চক বিভাভূষণ মহালয় সভাগতির স্থাসন গ্রহণ করিলেন।

- ১। সুগলের মৃত মহারাজার শোক-প্রকাশার্থ গত ।ঠা প্রেষ ভারিবে বলীয়-সাহিত্যপরিবদের যে বিলেষ অধিবেশন হয়, ভাহার কার্য্য-বিবরণ পঠিত ধলিয়া গুরীত হইল।
- ২। পুত্তক ও পুথি উপধারদাত্গণকে স্থতজ্ঞতা ও ধরুবাদ জ্ঞাপনের প্রক্ষাব গৃহীত
 কুইল ় (তালিকা-বিবরণ প্রিশিষ্টে জুইবা)।
- ৩। নৃত্য কল্পেক জন সদস্য থথানীতি প্রস্তাবিত ও ব্যব্ধিত ইইবার পর স্ক্রসভাতিক্রনে নিকাচিত হইলেন। (ভালিকা-বিব্রুগ পরিশিষ্টে এইব্য)।
- ৪। (ক) শ্রীযুক্ত গ্রাধানদান বন্দোপাধ্যার এম্ এ মহাশ্য তাঁহার "বিগ্রহণানদেবের ভাদ্রশাসন" নামক প্রথম গঠে করিলেন। প্রথম্মো সংক্ষিপ্ত বিষরণ এই :—

এই ভারশাসন থারা বিঅহপালদের পুজুবর্জন ভূকিতে কোটবর্ষ বিষয়ের অন্তঃপাতি ব্রান্ধনীপ্রামন ওলের দণ্ডনাহেশর সমেত বিষমপুরাংশে ৬ কুলা, ২ জ্রোন, ০২ উন্মান এবং ৩ কাকিনী পরিমাণ ভূমি ভগবান্ বুজ ভটারকের উদ্দেশে শান্তিল্যগোত্তীয় ক্রোড়ায়ি ও মংখ্যাবাসাবিনির্যাত ছত্তাপ্রামবাসা, বেহাজবিৎ পন্মাবন দেবপর্যায় গৌত্তা, মহোপাধ্যায় অর্জনের শর্মার পুত্র, সামবেদায় কৌনুমী শাথাধ্যায়ী, মীমাংসা-বাক্রব-ভর্কবিভাবিৎ পোর্ছল দেবপর্যাকে চক্রগ্রহণ উপলক্ষে গলামান করিয়া ধানশ আজ্যা-সহৎস্বের কৈন্ত নামের মধ্য দিবসে প্রদান করিয়াছিলেন। এই ভারশাসনের দৃতকের নাম পড়িতে পারা যায় নাই। গোস্পালারবাসা মহায়র দেবের পুত্র শনিবের নামক শিল্পী কর্ত্ত্বক এই ভারশাসনে উৎকীর্ণ হিয়াছিল। পুর্বেষ্ণ ভাক্তার ফালহর্ণ এই ভারশাসনের প্রথম বিংশ পংক্তির ১৪টি প্রোক্তের পার্ছের করিয়াছিলেন, কিন্তু অর্থনিষ্ট ২৯ গংক্তির স্বভাগের গাঁঠ পুর্বেষ্ণ উন্ধান্ত হব নাই।

সভাপতি মহাশয় থাগনেন,—"পালবংশের ইতিহাস" রাধানবারু ইংরাজীতে ইতিপূর্বো লিথিয়াছেন । এসিয়াটিক সোনাইটীর মেমোয়াসে (Memoirs) উহা আকালিত হইরাছে। বাকালা ভাষায় এ পর্যাত্ত পালবংশের ইতিহাস প্রকাশিত হর নাই। রাধানবারুই এ বিবরে বাকালা ভাষায় প্রথম লিবিয়া প্রথম ভানাইয়াছেন। এই সালা পরিষ্থ-পরিকার অকাশিত হইলে প্রিকার বৌদ্ধ ইইবে। আমরা পর্বাত্তরণে রাধান বাবুকে এই মূল্যবান্ ঐতিহাসিক প্রবর্গন লা ধভাবান বিভেছি।

(খ) শ্রীবৃক্ত বসগ্ধরঞ্জন হার মধাশর শ্রীবৃক্ত ভারাপ্রানর ভট্টাচার্য্য মহাশরের শ্রীবৃক্ত বােশেশ বাবৃর শক্ষকোষ আমা মন্তব্য নামক আমা পাঠ করিলেন। এই প্রবহে শ্রীবৃক্ত বােশেশ বাবৃর নিরিত বালালা শক্ষকোবের ৪০টি শক্ষের বৃৎপদ্ধি স্থক্ষে আলােচনা করা হইরাছে। বােশেশ বাবৃ অধিকাংশ স্থলেই কট কবিয়া শক্ষের মূল নির্মণণে চেটা করিয়াছেন। অবচ সহক্রে শক্ষপ্রতি সাধিত হইতে পাতে, ভাহাই দেখান হইরাছে।

সভাগতি মহাশন ব্লিফ্লন, এই প্রবৃদ্ধতির ক্তকাংশ আমরা গুনিকাম। বাকীগুলি এইক্সই। মস্তব্যটি কুমর হইয়াছে। এখন আপনারা আনোচনা কঙ্কন।

সম্পাদক শ্রীযুক্ত রার বতীক্ষমার চৌধুনী মহাশব বলিলেন,—এইপ্পথ আলায় বলেবও আলোচনা পশ্তিত মহাশর করুন এবং যে মংশটি শেষ করিয়াছেন, উহার সমাক্ শর্যালোচনার

বোলেন বাবকে উত্তা পাঠাইবা দেওয়া হউক।

ত্রীযুক্ত ক্ষেত্রনাথ বক্রোপোধ্যার কাব্যক্ত মহাশর বনিলেন, আমার বোধ হয়, প্রাবদ্ধ-লেখক যে ধারণা করিয়াছেন, ভাহা ঠিক। কারণ, আমরা বেশী শক্তনিই আফুড ব্লিয়া অস্থ্যান করি।

ডাঃ আক্লু গছুর সিদ্দিকী মহাশয় বলিলেন,—উদ্ ভাগায় "কুরী" শক্ট ব্যবহৃত চুট্যাছে। ভাগার অর্থ হিসাবে ভাতিবাচক ব্যায়া নির্দেশ করা হট্যাছে, কিন্তু আন্ধ্র বিশাস, এই ক্লাটির অর্থ উদ্ভে বাস্থভা করা।

ত্রীযুক্ত বসম্ভৱপ্রন রায় মহাশার বলিগেল, প্রবন্ধটি পরিভাষের সহিত শিশিক, স্থাচিত্তিত এবং স্থালিখিত হইরাছে। স্থামি প্রবিদ্ধানের মতের সহিত এক্ষত।

জীযুক্ত শুদ্ধানন্দ ব্ৰশ্বচারী মহাপর বলিকেন,—প্রথম্বোক্ত প্রায়্য কথাটা স্বক্ষে একটি কথা খলা আবস্থক লাল করিতেছি। "প্রায়া"-কথাটা একটি দোষ ব'লে মনে করি, এই প্রায়া কথার বিপরীতে কি "স্করে কথা" হইবে ?

সভাপতি মহালয় বলিলেন যে, বেণী ভাগ শক্ষা বে "প্রাক্ত" বলিরা গৃহীত ছইশ্লাছে, উহা ঠিক নতে। প্রাকৃতও আছে এবং অন্ধ ভাষা হইতে পরিবর্তিত শক্ষের অভিজ্ঞের সন্ধানও পাওৱা বার। সম্পাদক মহালবের প্রভাব অসুবারী শক্ষণোবের সম্পূর্ণ অংশের বিভারিত আলোচনা করিয়া বোগেশ বাবুর নিকট পাঠাইলে ভাগ হর। আমি পণ্ডিত মহালবের পরিশ্রমের অন্ধ বিশেষভাবে ধরুবাদ দিভেছি। "প্রাধ্য" শক্ষতি সংস্কৃত আল্ভারিকদের মতে "অন্ধ্যন্ত" প্রাধ্য বাহা সাধু শক্ষ নতে।

- (গ) ত্রীপুক্ত নলিনীরন্তন পশ্চিক নহাশর ত্রীপুক্ত সতীশচক্ত রাম এব্ । বহাশরের "ছিজ রম্বাবের সঞ্জাবারণের পৃথি" নামক প্রবন্ধের সারাংশ পাঠ করিলেন। (সরিলিট ভ্টব্য)। সভাপতি মহাশর সতীশ বাবুকে এই পৃথি সংগ্রাহের । ।
- (খ) ত্রীবৃক্ত জীবেজকুমার 🖿 মহাশবের "প্রী-সংগীত" নামক এবজের সারাংশ নলিনীবারু কর্ম্ব পাউত হইল। 📉 অভ জীবেজ বাসুকে ব্যাবাদ কেওবা হইল।

এই প্রবিদ্ধে প্রবন্ধ-লেখক চট্টগ্রাস পটিরা সাহিত্য-সন্মিলনে সংগৃহীত হস্তালিখিত পূথি হইছে ব্যাম্য-সংগীত, কবিতা, হেঁরালী, প্রবিচন প্রভৃতি সংগ্রহ করিয়া সংক্ষেপে কিছু কিছু পরিচয় দিরছেন। পল্লীপ্রান্থের ক্রবকেরা ক্রবিকার্য্য কবিতে করিতে সকলে মিলিরা বে সকল পান করে, ভাহার নাম "ভোর"। প্রবন্ধের প্রথমে এই "ভোর"-সন্ধীতের পরিচর দেওলা হইয়াছে। হিন্দু ও মুসলমান, উভর শ্রেণীর ক্রবকেরা মিলিরা "ভোর" গাহিলা খাকে। এই শ্রেণীর ক্রেকটি গানও ইহাতে আছে। ইহার পর ক্রেকটি প্রের, বৈর্গায়, শিব
শ্রিক্ত স্থাতি, শোভার বিব্রণ ও ভাষাকের বিব্রণ প্রাভৃতি আরও জনেক পান ইহাতে আতে।

জীবুক হেমবাবু কৰ্ত্ব "ক্ষেণেরিট" নামক থনিক পদার্থ প্রদর্শিত হইল। "ক্ষেনেরিটে" Zine দথা বেশী পরিমাণে আছে। Debra-Dun পালোওয়াতে ব্যুদার ভীষে ইহা পাওৱা বার।

শ্রীবৃক্ত সংযাজকুদার নাগ চৌধুরী এবং শ্রীবৃক্ত নগেল্রনাথ বোধ নহাপর্বর-প্রাবন্ত ক্তিপর প্রাচীন মৃদ্রার প্রদর্শন হুগিত রহিল।

শোক-প্রকাশ ;— শ্রীবৃক্ত নিলিনীরঞ্জন সভিত মহাশর প্রাপ্তাব করিলেন বে, ৮৮৩ীচরণ বন্দ্যোপাধার মহাশরে ছবি পরিষৎ মন্দিরে রাধা উচিত। ছির হইল বে, প্রপ্তাধাটি ঝার্মানির্কাহক-সমিতিতে প্রেরিভ হউক। তাঁহার পোকে সমবেদনা কানাইরা তাঁহার পরিবার-বর্দের প্রতিনিধিকে পত্র প্রেরিভ হউক। তাঁহার বার্মাহাছর শরৎচন্দ্র দাস সি, আই, মানেহালয় সমবেদর সমবেদর কলাশতি মহালার নিল্লেন যে, লরৎবাব অনামধন্ত ব্যক্তি ছিলেন। Colleged এক্ এ পর্যান্ত এবং Civil Engineering Colleged কিছু দিন অধ্যান করেন। কিছু তাঁর স্থাধীন চেষ্টার তিনি কগাহিথাকে হইরাছিলেন। তাঁহার উর্জি সম্পূর্ণ নৃত্তন প্রধানীতে। তাঁহার পুত্র প্রিবৃক্ত সনৎকুষার দাস, উঞ্জীল মহাশরকে বহুমৎসক্ত, চট্টব্রাম, টিকানার পোকে সমবেদনা কানাইরা পুত্র দেওরা হউক। সম্পাদক মহাশর বলিলেন, ইহার ক্লোবিত বেটাক তাঁক। শ্রীবৃক্ত ক্লেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কাব্যাক মহাশর সম্পাদক মহাশরের এই প্রানিত হউক। শ্রীবৃক্ত ক্লেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কাব্যাক মহাশরক বন্ধনার দিবার পর্যাক্ত ক্রিক। শ্রীবৃক্ত ক্লেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কাব্যাক মহাশরক বন্ধনার দিবার পর্যাক্ত ক্রেক। শ্রীবৃক্ত ক্লেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কাব্যাক মহাশরক বন্ধনার দিবার পর্যাক্ত কর্তিক।

পরিশিষ্ট

ত্রীমৃক্ষ সভীশচন্ত রার এন্ এ বহাশর-লিখিত "থিক রখুনাবের সভ্যনারারবের পূধি" নামক প্রবংশ্বর সারমার্থ,---

আছের রচবিভা বহুনাথ কোন্ সমতে এবং কোন্ হানে স্থানে কালেন, ভাষা স্থানিতে না পারা বেলেও, ভিনি বে শভাধিক স্থান বর্তনান ছিলেন, ভাষা অনুযান করিতে পালা ৰাহ: ১২৪০ সনে লিখিত একখানা পুণির শেষে লেখা আছে যে, এই পুখি ১২২২ সনে দিখিত পুথি দেখিবা নক্ষ ক্বা ছট্ল। প্ৰভৱাং কবির জীবিভকাল বে, ইহাবও ভিছু পুর্বে ৰূপৰা সম্ভব, তাহা বঝা বাইডেছে। এই পুৰিধানি ঢাকা কেলার **অন্তর্গত** ধামগড় প্রাধে সভ্যমারারণের পুঞা উপলক্ষে অ্বলয় সহযোগে অভাপি গীত হটর। থাকে। পুরা উপলক্ষে সভানারায়ণের পুথির পাঠই সক্ষ ক্লে হটয়া থাকে। কিন্তু এই পুথিথানি মনগার ভাসানের ভার প্রার সময় জুরুলয়-বোগে গীত হট্যা থাকে, ইচাই ইচার বিশেষ্য। প্রকর্ত্ত লেখক ইয়ার চুইখানি পূর্বি সংগ্রহ করিয়াছেন ; একথানির জিলিকাল ১২৪৩, আর এক-খানির লিপিকাল ১২৮৬: প্রচলিত সভানাবাধণের পুথি বইতে এই গ্রন্থের ভাষা ও রচনা-নৈপুণ্যে অনেক বিশেষত্ব **আছে। এখন** পুথি মুগরণে গুড়ীত হুইবাছে এবং খিড়ী**ছ পুথি**-থানির পাঠাস্তর পাদ্টীকার দেওয়া ভইয়াছে।

উপহারপ্রাপ্ত পুস্তকের তালিকা

প্রেছাতা.

প্রত্বের নাম

Supdt, Govt Printing, India.

> 1 Annual Report of the Archieological Survey of India, Part I. 1914-15.

Corator, Dacca Museum.

RI The Second Annual Report of the Dacos Museum for the year ending March, 31st, 1916.

০ : পর্ভবাম ক্রন্ত ও বদ্ধিকাশ্রম পরিশ্রমণ

প্ৰীৰ্ক প্ৰমাধ ভট্টাচাৰ্য্য

- ৪। শাবি
- সভীশচন্ত্র গ্রেমাণাখ্যার মনীক্রপ্রদাদ সর্কাহিকারী
- ৫। হিভৰাণী
- ७। बुबक-बुबनी
- হার শতীক্রনাথ চৌধুগী
- ং। বাকীপুর স্থিকনে পঠিত দর্শন-শাধার সভাপতির অভিভাবন

চিত্তব্ঞন দাশ

- নাজিতা-শাৰার মন্তা-পতির অভিভাবণ
- মহাবাজকুমার মহিমানিবঞ্জন চক্রেবভী 🗦 । বীরভূম-বিবরণ, 🎟 ৩৩

शांबांगांग देवन

১+। ভাবা হরিবংশপুরাণ (হিন্দী)

🕮 কির্পচল্ল দত্ত সহকারী সম্পাদক।

बिदारमञ्जूलत जिर्दिती সভাপতি

প্রস্তাবিত সদস্য

अस्तिक	ग्रयर्थक	nie
জ্ঞকালীভূষণ মুৰোপাধ্যাৰ	শ্ৰীৰগেজনাৰ চটোপাধ্যাৰ	ৰ শ্ৰীগোবিশহুৱি দান, ক মিদাৰ
जारशाष्ट्ररा द्वा ॥ गर		১৮ গোপীমেহন ৰদাক হীটু, ঢাকা।
ডাঃ শ্ৰীপগেন্তনাথ ৰহু	_	শ্রীকাথিশচন্দ্র রাম্ব
019 -4 10-104-11 1 14	•	স্বৰ্গ্ৰাম টি এটেট, শাৰ্গ্ৰাম,
		ৰলপাই ওড়ি।
চৌধুৱী কে, বিবধাৰ	শ্ৰীনশিনীয়ন্তন পণ্ডিত	শ্রীকানীকিছর চট্টোপাধার
		কেলনার কোং অফিন, বাকীপুর।
_	41	ডাঃ শ্ৰীকামাণ্যানাথ বন্যোপাথাৰ
-		বাঁকীপুর।
		जीनरतत्त्वनाथ विकृ, कण्डे किंव
~		বাঁকীপুর।
		শ্ৰীষ্ঠীৰাণ মলিক
_	-	निना नग ्रह ।
F		শ্ৰীকেদাৰনাথ চক্ৰবন্তী
		বসন্তপুর গ্রাম, ধাদবপুর পোঃ, ধশোহর।
44	al .	প্ৰিত শ্ৰীশ্বৰীকেশ ভট্টাচাৰ্য্য
		গ্ৰড়া, পোঃ বেনাপোন, যশেক্ষ।
r		গ্ৰীপঞ্চানন উপাধ্যায়
		বোধখানা, অমৃতবাজার পোঃ, বলোহর।
	₩	শ্রীআন্তভোষ দম্ভ কর্মকার
		দৌলভপুর, বেনাপোল পোঃ, ধনোহয়।
		গ্রীন্সশোকচন্দ্র ভট্টাচার্য্য
		বসস্থপুর, ধাদবপুর, বশোহর।
		শ্ৰীগণেশ দাস
		ম্যানেধার নবাবস্থান বোর্ডিং, বাকীপ্র।
শ্ৰীৰতীক্ৰমোৰ্ন রাম্	লঃ আবহুৰ গমুখ নিদ্দিকী	শ্ৰীরেবতীমোৰ্ন বন্ধ
		< ০ গোয়াগনগহ, ঢাকা।
		ক্ৰিকি ডালন দাস ক ৰ
		व्य त्यं शिक्षे।

আৰছ্য গছুৱ সিদ্ধিকী	শ্ৰীযতীক্ৰনোহৰ রাগ্ৰ	রাজা জীওবীক্তনাথ বাব
		শোড়গাছী, পূড়া, ২৪ পরগণা।
	9	শ্ৰীধণেশ্ৰনাথ বস্থ
		আড়বালিয়া পোঃ, ২৪ পরগণা।
জীগৰা প্ৰদন্ত গো ষ	শ্ৰীন্দ্ৰীংলন পণ্ডিত	শ্ৰীনন্দলাল ভট্টাচাৰ্যা এনু এ, বি এন্
		উকীল, মভিহারী।
	aú .	গ্ৰীললিভযোহৰ বৰেয়াপান্তার বি এল
		डिकीन, म िक्शबी।
		শ্রীসানক্র্যার চৌধুরী,
		डेकीन, (वनांद्रम निष्टि।
শ্ৰীভূপেক্ৰনাথ দৈত্ৰ	किर्मान्य भाग क्थ	শীদচিদানক স্কোল এন্ এ, বি এল
		डेकीन, हाबमाबी, मार्किनः।
শ্ৰীকাগীচরণ মিত্র	জ্ঞাকিরণচন্দ্র দত্ত	শ্ৰীপ্ৰেন্তৰাৰ কাঞ্চিৰাৰ
		১০ গোলবাগান লেন, কলিকা তা ।
শ্ৰীকিরণচন্দ্র দত্ত	ই মৃণালকান্তি বোৰ	গ্রীষতীয়নাথ খোষ
		২১০ অপার দাকুলার রোভ।

২৩শ বাধিক, দিতীয় বিশেষ অধিবেশন

২৯শে মাৰ, ১১ই কেব্ৰেয়ায়ী, শ্বিবার, শ্বপায় ৬টা স্বৰ্গীয় রায় শরচ্চন্দ্র দাস বাহাত্মরের মৃত্যুপলক্ষে শোক-সভা উপায়তি—

শীৰুক রামেন্দ্রহনর ত্রিবেদী এম্ এ (সভাপতি)

শ্রীযুক্ত নগেন্তনাথ বস্থ প্রাচ্যবিদ্যামহাণ্য ্বাশীনাথ নন্দী

- ্ব দিলেন্দ্রনাথ রায়চৌধুরী
- ্ব নারাহশচন্ত্র নিয়োগী
- 💂 অৰনীমোহন বহু
- " ঘোগীন্তনাথ দেন 🖦 খ

শ্ৰীৰুক্ত মহামহোগাধাায় ডা: সঙীক্তৰ বিহ্বাভূষণ এম্ এ, পি এইচ ডি

- রাসবিহারী মুখোশাব্যার বিএল
- শলিভযোহন নিয়োগী
- ু পূৰ্ণচন্ত্ৰ চক্ৰবৰ্তী
- " **ठ**श्रीकान म**ङ्**मकाद

ত্রীবৃক্ত ডা: আবহুক গড়ুর সিদ্দিকী

- ্ৰ পাশ্বাবান মলিক
- .. प्रशिमविश्वी एख
- ু অনুভলাল মজুমদার
- ু বিশিনবিহারী বিভাত্যণ
- ু সভীপ্রসাদ সেন শ্বপ্ত
- ু সভীজীবন মুগোপাধাার
- ু মন্মণনাথ মিত্র
- ু প্রভাসচন্দ্র মুখোপাধ্যার
- ু নিখিলনাথ স্থায় বি এক
- ু বতীক্রনাথ কাঞ্জিলাল
- , সক্ষোবকুমার লাহিড়ী
- ু হরিমাধ্ব চট্টোপাধ্যার
- ্ ডাঃ রায় চুণীলাল বস্থ বাঙাছর

এম বি, এফ, সি এস

- 💂 क्ल्बबार्थ रस्मार्गाधांत्र, कांवाकर्ष
- ু কুঞ্জবিহারী মণ্ডল

শ্ৰীযুক্ত দেবেশচন্ত্ৰ পাকড়ালী

- ্ৰ মতেজনাথ মুখোপাধ্যায়
- ু স্নীতিক্ৰায় পাল এম্এ
- ু যোগেক্সনাথ পাল
- ু চণ্ডীচরণ চন্দ
 - ৰভীজ্ৰাথ দেন**খগ্**
- ু নলিরপ্রকাশ পাস্কী
- " ভূডনাৰ দত্ত
- ু ননাগোপাল মঞ্মদার
- ু মধ্বানাথ মজুমদায়, কাৰাতীৰ্থ
- ু বসস্করঞ্জন বাধ বিশ্বপল্লভ
- ু সুখাকুমার পাল
- ু ভোলানাথ কোঁচ
- ু উপেক্সনাথ উপাধ্যায়
- ্ৰ ভারাপ্রাসন্ন ভট্টানার্য্য
- ্দেবেন্দ্রনাথ ব্যায
- ্ কেন্দের্ভন্ত রার

প্রীর্জ রাষ ষতীক্রনাথ চৌধুরী শ্রীকর্ত্ন, ভক্তিভূবন, এম্ এ, বি এল্ (সম্পাদক)
হরেক্রনাথ কুমার (সহঃ সম্পাদক)

বিশেষ শোক-সভা

২৯শে মাম ১৩২৩, ১২ট ফেব্রুরারী, ১৯১৭ খৃষ্টাজ, রবিবার, অপরাত্ন গটার সময় বলীয়-সাহিত্য-পরিষদের অক্তম বিশিষ্ট সদস্য রায় শরচেন্দ্র দান বাহাছর সি আই ই মহাশরের পরগোকগমনে শোক প্রকাশার্থ বলীয়-সাহিত্য-পরিষদের এক বিশেষ অধিবেশন হইয়াছিল।

পরিবদের সভাপতি মহাশরের অনুপৃথিতির জন্ম অন্তম সহকারী সভাপতি প্রীর্জ্জ রামেলফুলর বিবেদী মহাশর এই সভার সভাপতির আসন গ্রহণ করিরাহিশেন। সভাপতি বিবেদী মহাশর বলিলেন বে, এই সভার এমন হুই এক জন ব্যক্তি উপস্থিত আছেন, বাহারা আমার অপেকা অনেক অধিক পরিমাণে স্বর্গীর হাল মহাশরের জীবন-কাহিনী অবপত আছেন। আসনারা উভিনের নিকট পরাস মহাশরের কীর্জিকাহিনী প্রবণ করিবেন। আমি কেবল ভারের সমুবদ্ধ হুই একটি কথার উল্লেখ করিভেছি।

পত ১৩০১ বলাকে প্রথম এই বলীয়-দাহিত্য-পরিবং স্থাপিত হয়। শোভাবাঝার

রাফবাটীতে একটি সভা করিয়া পরিষ্ক্ষের প্রতিষ্ঠা হয়। বে সকল মহাত্মা দেই স্থাক উপস্থিত ছিলেন এবং সাহিত্য-পরিষ্ক্ষের প্রতিষ্ঠা-কার্য্যে সহারতা করিয়াছিলেন, স্বসীর দাস মহাশয় তাঁহাদের মধ্যে অন্যতম। সেই সভায় আমার সহিত তাঁহার প্রথম পরিচর হয়। তিনি মিইভাষী, বিনয়ী ও স্নালাগী ছিলেন। সর্ব্বনাই কর্ম্ম নইয়া ব্যস্ত থাকিতে ভালবাসিতেন।

আপনারা প্রভোকেই হয় ত সেই স্বর্গায় দাদ মহাশয়ের নাম এবং তাঁছার কীর্ত্তি-ধন্দের বিষয় অবগত আছেন। তিনি বলের, তথা ভারতের কৃতী সন্ধান ৫ কৃতী পুরুষ ছিলেন। আজি বড়ই ছংশের বিষয়, আমরা এতেন কর্মবারকে অকালে ছারাইবাছি। বাঁছারা বলের, বাশাশীর ও বল্পাহিত্যের মললকামী ও হিডাকাজ্রী, তাঁহারা একে একে স্বাই চলিয়া বাইতেছেন; ইহা বাংলার ও বালালীর পকে বড়ই শোকের কথা।

তিনি তিকাতে গিয়া, তিকাতীয় ভাষা শিকা করিয়া, ঐ ভাষার ভাঙার হইতে বে স্কশ

শস্পা রম্ব আনিয়া বঙ্গভাষার কলেবর বৃদ্ধি ও সাজ্জত করিয়া গিয়াছেন, তারা বাঙ্গালীর
নিকট অতুলনীয়া। "শবদান-কলগত।" নামক মহাগ্রহ্থানি তাঁগারই চেটায় এবং তাঁহারই
শক্ষান্ত পরিশ্রমের ফলেও সম্পাদকভাগ বন্ধার-সাহিত্য-পরিবং কর্জ্ক বঙ্গভাষায় অপুবাদিত
ও প্রকাশিত হইয়া জন-স্মান্তে প্রকাশিত হইয়াছে।

মধ্যে কিছু দিন তাঁহার সহিত মাহিত্য-পরিধদের সম্পর্ক বিভিন্ন হইলাছিল বটে, কিছ ভিনি কথনই পরিধদের নঙ্গল-চিতান বিরত হয়েন নাই। পরিষদের নিষ্মাত্মারে আমরা উহাকে পুনরায় পরিধদের বিশিষ্ট-সভ্যা-শ্রেণীভুক্ত করিয়া স্টতে স্থান হইরাছিলাম।

বে সময় তিনি প্রথম অবদান-কর্লতার বলাজুবাদ প্রকাশিত করিবার প্রস্তাব করেন, সে সময় আমি পরিষ্টের সম্পাদক ছিলাম।

জতংশর সভাপতি ত্রিবেদ্য মহাশয় খদাস সহাশয় সম্বাহ্ম বক্তা করিবার জন্ত ও দভায় প্রথম প্রাক্তাবিট উপস্থাপিত করিবার জন্ত মহামহোগাধাার ডাঃ শ্রীযুক্ত সভীশচক্ত বিভাতৃবৰ মহাশহকে অন্ত্রোধ করিবেন। ডাকার বিভাতৃবৰ মহাশহ প্রথমে সভার সমকে প্রস্থাবটি উপ্ত্রোপ্ত করিয়া পরে স্বলীয় মহাস্থার কর্ষের একটি ভালিকা বিবৃত করেন।

প্রথম প্রেক্তাব।—"বলের ক্রতি দ্রান, তিব্বতীর ভাষা ৪ বৌর শাল্লে প্রণাঞ্জিত, আরু-সন্ধিংক, পর্যাটক, বলীয়-সাহিত্য-পরিষদের অক্রাক্তম বন্ধু ও বিশিষ্ট সম্বস্তু, স্থনামধন্ত রাম শ্রচ্চন্দ্র দাব বাহাত্ত্বের প্রকোকগমনে বলীয়-সাহিত্য-পরিষ্থ আন্তরিক মর্থবেক্না জানাইতেছেন।"

এই প্রক্তাবটি উপস্থিত করিয়া, বিজ্ঞান্ত্রণ মহাশার বলিলেন বে, স্বর্গার দান মহাশার সন্তা-স্বিভিত্তে বোগরান করিতে বড়ই ভালবাসিতেন। বহু লোক ওাঁহার পরিচিত ও বন্ধু ছিলেন। বন্ধদেশে এমন একজন লোক বিরুল; ভারতেও এমন গোকের অভাব। আপনারা ভনিরা আশ্বর্যাবিত হইবেন বে, বখন তিনি প্রথম তিবতে গমন করিয়াছিলেন, তখন তিনি তিবতীয়